

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

ग्रन्थाङ्क 33

वीरवांण

1997

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक
पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि
(सामान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क 33

ढाढी बादर रो बणायो

वीरवांण

सम्पादिका
श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, रावतसर

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

द्वितीयावृत्ति 1997 मूल्य : 72.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक
पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि
(सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर)

ग्रन्थाङ्क : 33

ढाढी बादर रो वणायो

वीरवांण

सम्पादिका
श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, रावतसर

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

द्वितीयावृत्ति 1997 मूल्य : 72.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

ग्रन्थाङ्क : 33

ढाढी बादर रो वणायो

वीरवांण

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

प्रथमावृत्ति : 1960
द्वितीयावृत्ति : 1997 मूल्य : 72.00

प्रधान सम्पादकीय

राजस्थानी भाषा एवं साहित्योन्नयन में चारणों, जैनों एवं साधु-सन्तों के अलावा ढाढियों, मोतीसरों एवं नगारचियों का भी योगदान रहा है। प्रस्तुत रचना वीरवांण एक मुस्लिम कवि की रचना है, जिसमें राठौड़ वीर वीरमजी एवं उनके पुत्र गोगाजी का जोहियों के साथ युद्ध का चित्रण है।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के 33 वें पुष्प के रूप में सन् 1960 में इसका प्रकाशन हुआ था। विगत कुछ समय से इसके पुनर्मुद्रण की मांग के प्रतिफल के रूप में ही प्रस्तुत रचना आपको समर्पित की जा सकी है। आशा है कि प्रस्तुत रचना इतिहास एवं काव्यजगत् में समान रूप से स्पृहणीय होगी।

आनन्द कुमार
आर.ए.एस.
निदेशक

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानकी स्थापनाके साथ ही हमारी कामना रही है कि राजस्थानसे सम्बद्ध विविध भाषानिबद्ध साहित्यिक ग्रन्थोंके संग्रह और संरक्षणके साथ ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंका प्रकाशन भी किया जाये। इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिये हमने 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' का कार्य प्रारंभ किया है जिसमें अब तक ३५ ग्रन्थ प्रकाशित किये जा चुके हैं।

प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ राजस्थानी भाषामें रचित है और इतिहास-प्रसिद्ध राठोड़ वीर वीरमजीसे सम्बद्ध है। ढाढी बादर नामक मुस्लिम कविकी यह कृति साहित्यिक और ऐतिहासिक दृष्टिसे विशेष महत्त्वपूर्ण है। बादर अर्थात् बहादुर कविने प्रस्तुत काव्यमें विपक्षियोंका वर्णन भी पूर्ण निष्पक्षता और उदारतासे किया है किन्तु साहित्यिक क्षेत्रमें यह कृति प्रायः उपेक्षित रही है।

इतिहास-प्रसिद्ध चूण्डावत राजवंशोत्पन्न विदुषी लेखिका श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारीजी चूण्डावतने कुछ साहित्यिक कृतियोंके साथ प्रस्तुत काव्य 'वीरवांण' हमें बताया तो हमने सहर्ष इसका प्रकाशन स्वीकार कर लिया। साहित्यिक सेवाओंके कारण श्रीमती रानी चूण्डावतजीको हम धन्यवाद देते हैं। साथ ही यह आशा व्यक्त करते हैं कि राजस्थानके राजवंशोंसे सम्बद्ध अन्य व्यक्ति भी श्रीमती रानी चूण्डावतजीके विद्यानुरागका अनुकरण कर अपने संग्रहकी साहित्यिक रचनाओंको शीघ्र ही प्रकाशमें लानेका उपक्रम करेंगे।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर
दशहरा, २०१७ वि०सं०

मुनि जिनविजय
संमान्य सञ्चालक

विषय-तालिका

भूमिका

राजस्थान बहुत प्राचीन काल से ही सुसांस्कृतिक प्रदेश रहा है। इस कथन के प्रमाण में शिल्प-स्थापत्य, संगीत, चित्रकला और साहित्य के हजारों ही उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। साहित्य में सम्बन्धित देश की आत्मा के दर्शन होते हैं और साहित्य वास्तव में किसी देश की संस्कृति का प्रतीक एवं प्रतिनिधि कहा जा सकता है। राजस्थान भारतीय साहित्य का भण्डार है। राजस्थान में निर्मित साहित्य द्वारा भारतीय संस्कृति का उत्तम और पूर्ण रूपेण चित्रण हुआ है।

राजस्थान में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, बृजभाषा और खड़ी बोली आदि में प्रचुर साहित्यिक निर्माण का कार्य हुआ है। अन्य भाषाओं में थोड़ा बहुत साहित्य-निर्माण होते रहने पर भी राजस्थानी भाषा में सर्वोत्कृष्ट साहित्य की रचनाएं प्रस्तुत की गई हैं। राजस्थानी भाषा वास्तव में राजस्थानियों की मातृभाषा है जिससे यह स्वाभाविक ही हुआ है कि इस भाषा में हृदयगत् भावनाओं का सजीव और सरस निरूपण हुआ है। राजस्थानी भाषा का साहित्य गद्य और पद्य दोनों में ही मिलता है। राजस्थानी साहित्य वास्तव में समुद्र की भांति गहन है जिसमें नाना प्रकार के ग्रन्थ-रत्न छिपे हुए हैं। राजस्थानी भाषा में कई वर्षों से खोज-कार्य होते रहने पर भी कई ग्रन्थ-रत्नों की जानकारी साहित्य-क्षेत्र में नहीं के समान हैं। ऐसे ही ग्रन्थ-रत्नों में "वीरवांण" की गणना भी हो सकती है।

"वीरवांण" नामक काव्य ग्रन्थ के अपर नाम "नीसाणी वीरमजीरी," "निसाणी वीरमांणरी", "वीरमांण" और "वीरमायण" आदि भी कहे जाते। किंतु प्राप्त हस्तलिखित प्रति में "वीरवांण" नाम ही मिलता है इसलिये प्रकाशन में इसका नाम "वीरवांण" ही दिया गया है।

इस काव्य-ग्रन्थ के एक से अधिक नाम प्रचलित रहने का प्रधान कारण यही ज्ञात होता है कि इस काव्य को अभी तक प्रकाशन का सुअवसर नहीं मिल सका। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि "वीरवांण" के विषय में सम्बन्धित लोगों को जानकारी नहीं रही है। वास्तव में राजस्थान के साहित्य-रसिकों और विद्वानों में "वीरवांण" की चर्चा बराबर रही है, जिसके परिणामस्वरूप इस काव्य के सम्बन्ध में थोड़ी-थोड़ी पंक्तियां कई ग्रन्थों में प्राप्त होती हैं किन्तु उनसे काव्य और कर्ता के सम्बन्ध में बहुत ही सीमित जानकारी मिलती है।

राजस्थानी भाषा और साहित्य के विकास एवं उन्नयन में प्रायः सभी वर्गों का थोड़ा-बहुत सहयोग रहा है किन्तु इस क्षेत्र में प्रमुख कार्य चारणों, जैन साधुओं, यतियों, क्षत्रियों, रावों, मोतीसरों और ढ़ाढ़ीयों द्वारा सम्पन्न हुआ है। अब तक ढ़ाढ़ीयों द्वारा रचित साहित्य को विशेष महत्व नहीं दिया गया, इसका मुख्य कारण जातिगत द्वेष और रूढ़िजन्य विचारों से ढ़ाढ़ीयों को निम्न कोटि का समझा जाना है। भारतीय स्वाधीनता के उपरान्त ऐसे विचारों का स्वतः उन्मूलन हो जाता है। अब सभी वर्गों के साहित्य का अनुसंधान, सम्पादन और प्रकाशन होना चाहिये तथा साहित्यिक क्षेत्र में सबको समान रूप में प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

"वीरवांण" का कर्ता बादर अर्थात् बहादुर ढ़ाढ़ी था जैसा कि काव्य से प्रकट होता है। राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान स्व० पं० रामकरणजी आसोपा ने "वीरवांण" के कर्ता का नाम "रामचन्द्र" बताया है[1] किन्तु बिना ठोस प्रमाणों के यह स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह अनिवार्य नहीं है कि साहित्य रचना का कार्य कोई विशेष वर्ग ही कर सकता है। हमारी वर्गगत उपेक्षा के कारण पता नहीं तथाकथित साहित्यकारों की कितनी रचनाएं नष्ट हो चुकी हैं और कितनी रचनाएं अभी अन्धकार में पड़ी हैं?

चारणों की साहित्य-सेवा तो सर्व प्रसिद्ध है ही किन्तु कविरावों, मोतीसरों, नगारचियों और ढ़ाढ़ यों का कार्य भी वीरों को काव्यमयी वाणी से प्रोत्साहित करना और अपने आश्रय-दाताओं का यश-वर्णन करना रहा है। मांगलिक अवसरों त्यौंहारों और युद्धों में सुयश का काव्यात्मक वर्णन प्रायः उपरोक्त श्रेणी के साहित्यकारों द्वारा ही होता रहा है। आज भी राजस्थान में यह शुभ परम्परा किसी न किसी प्रकार से प्रचलित है।

ढ़ाढ़ी दमामियों और नगारचियों की श्रेणी में लिये जाते हैं तथा सारंगी अथवा सारंगी के प्रकार का एक वाद्य रबाब बजाते हैं।[2] कृष्ण जन्माष्टमी के दूसरे दिन दधिमहोत्सव अथवा नन्द महोत्सव पर वैष्णव मन्दिरों में ढ़ाढ़ी-ढ़ाढिन का स्वांग बनाकर लोग नाचते हैं जिससे ढ़ाढ़ियों की प्राचीनता की जानकारी मिलती है। ढ़ाढ़ी नीचे दिया हुआ पद्य कह कर राम जन्म के समय अपनी दिग्घ मानता सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं—

दशरथ रे घर जनमियां, हंस ढ़ाढ़िन मुख बोली।
अठारा करोड़ ले चौक मेलिया, काम करन को छोरी॥

मध्यकाल में मुसलमान शासकों के दबाव से कई जातियों के लोग मुसलमान हो गये थे। "वीरवांण" ग्रन्थ का कर्ता बहादुर भी मुसलमान ढ़ाढ़ी था और इसके आश्रय दाता जोईया भी मुसलमान थे।

बादर ढ़ाढ़ी ने मुसलमान होते हुए भी अपने आश्रय दाता की उदारता से प्रेरित होकर शत्रु पक्ष के राठौड़ वीर वीरमजी का यश वर्णन भारतीय संस्कृति के अनुरूप किया है।

---

१. राजरूधक नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित, भूमिका पृष्ठ २।
२. मुर्दम सुमारी रिपोर्ट राज मारवाड़ सन् १८९१ पृ० ३६८।

इस प्रकार "वीरवांण" वास्तव में एक मुसलमान कवि की राजस्थानी भाषा में लिखित महत्वपूर्ण काव्य कृति है।

राजस्थानी काव्य-ग्रंथ "वीरवांण" में वर्णित विषय का सारांश सम्बन्धित विशेषताओं सहित इस प्रकार है:—प्रारंभ में कवि ने शारदा और गणपति की वंदना करते हुए वीरमजी और सम्बन्धित वीरों के विषय में यथातथ्य निरूपण करने का अपना अभिप्राय प्रकट किया है (१। १–३) [3] कवि ने लिखा है—

सुणी जिती सारी कहुँ, लहु न झूंठ लगार।
मालजेत जगमालरो, वीरम जुध विचार ॥३॥

तत्पश्चात कवि ने जोधपुर राव सलखाजी (वि० स० १४१४–१४३१ और ई० स० १३५७–१३७४) के चारों पुत्रों की वीरता का संक्षिप्त वर्णन एक ही नीसाणी में किया है–

"सुत च्यारूं सलपेसरा, कुल में किरणाला।
राजस बंका राठवड़ वरवीर बड़ाला॥

साथ लिया दल सामठा वीरदा रूखत्राला।
भिड़ीया भारत भीमसा दल पारथ वाला॥

देस दसु दीस दाबिया कीया धक चाला।
केवी धस गीर कंदरां वप संक बड़ाला॥"[4]

फिर जेतसिंह जी की गुजरात पर हुई लड़ाई का वर्णन किया गया है और "माल देवजीरो समो" लिखा गया है। इस युद्ध में गुजरात के यवन शासक मुहम्मद बेगड़ा द्वारा किये गये तीजणियों के हरण के बदले में जगमाल जी द्वारा व्यापारी के वेश में चढ़ाई कर ईद के अवसर पर बादशाह की पुत्री "गींदोली" को अन्य लड़कियों सहित लाने का और अपनी "तीजणियो" को मुक्ति दिलवाने का वर्णन है। फिर "रावजी मालदेवजी रो पेलो झगड़ो" लिखा गया है, जिसमें दिल्ली सुलतान और मुहम्मद बेगड़े की भीड़गढ़ पर सम्मिलित चढ़ाई और मालदेव जी की विजय का वर्णन है।

मालदेव जी के गींदोली सम्बन्धी युद्धों का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

---

३. पहला अंक पृष्ठ का और दूसरा अंक पद्य संख्या का सूचक है।

४. राव सलखाजी के मल्लीनाथजी, जेतमलजी, वीरमजी और शोभासिंहजी नामक चार पुत्र थे (जोधपुर राज्य का इतिहास भाग १ डा. गोरीशंकरजी हीराचन्दजी ओझा पृ. १८४। जोधपुर, बीकानेर और किशनगढ़ के राठौड राजवंस वीरमजी से सम्बन्धित है। बीकानेर दुर्ग के सूर्यपोल द्वारा की प्रशस्ति और वैद्यकुमार ग्रंथ पत्र ४)

"गींदोलीरी लड़ाई में झगड़ा तीन तो रावल मालदेजी आपरै लोकसुं एकला किया। झगड़ो चोथो भाटी घड़सी रावल जी वीरमदेजी कंवर जगमाल जी सोलंखी माधोसिंह जी। पांचमो झगड़ो कंवर जगमालसिंह जी एकलां भूतारे जोरसैं कीइंयां। पांचमां झगड़ा में तीन लाख आदमी खेत पड़ीया। अटी राठोरां रा आदमीं लाख छा जांमासुं आदमीं हजार पचीस खेत महाराई चक्र जुद्ध हुयो।" पृ० १५

वीरवांण और उसके कर्ता के सम्बन्ध में राजस्थानी ग्रंथ में दी गई टिप्पणी महत्व-पूर्ण है जिसमें कहा गया है "मैं बादर ढ़ाढ़ी जोईया का ही हूँ सो मैने पूछकर जैसी हकिकत सुनी वैसी काव्य में प्रकट की है। मैंने अपनी उक्ति अथवा सामर्थ्य के अनुसार रावलजी, जगमालजी और कुंवर जी रिड़मल जी के कहने से यश बनाकर सुनाया। इस युद्ध के बीस वर्ष बाद यह ग्रंथ बनाया है।"[५]

वीरमजी और जोहीयों के सम्बन्ध का वर्णन दूहा छन्द संख्या ६३ से प्रारंभ होता है। प्रारंभ में महामाया का स्मरण करते हुए लुणराव के सात पुत्रों की वीरता का वर्णन किया गया है। फिर प्रकट किया गया है कि जोहीया माधव ने एक बार मुहम्मद शाह के अशर्फियों के ऊंट लूट लिये। तब मुहम्मद शाह ने सारे, जोहियों के सिंध को दबा लेने की धमकी दी। तब जोहिये वीरमजी से मिले—

"मैमंद नै जगमाल रै, जबर बैर ओजांण।
आया सरणै जोहियां, सिंध छोडै साहिबाण॥"

दिल्ली सुलतान की सेना ने वीरमजी पर चढ़ाई की किन्तु वे जोहियों की रक्षा में तत्पर रहे। युद्ध में वीरमजी की विजय हुई जिसके लिये लिखा है:—

वीरम मालै वीरवर, अरिअण दिया उठाय।
सरब फौज पतसाहरी, पाछी गी पिछताय॥

तदुपरान्त वीरमजी और जोहियों के संघर्ष का कारण बताया गया है, कि जोहियों ने जवाद नामक सुन्दर घोड़ी की बछेरी वीरमजी के भाई मलीनाथ जी के मांग ने पर भी न दी।

---

५. संभव है कि सबन्धित पंक्तियां काव्य की प्रमाणिकता बताने के लिये क्षेपक रूप में जोड़ी गई हो। काव्य का सम्बन्ध मुख्यतः हार्दिक अभिव्यक्ति से होता है। कवि के लिये शास्त्रज्ञ अथवा उच्च शिक्षित होना आवश्यक नहीं होता। क्योंकि विद्यालय की शिक्षा का सम्बन्ध बहुधा बौद्धिक अध्ययन से ही होता है। सामान्य शिक्षित व्यक्ति भी बहुश्रुत और अपनी कला के धनी होते हैं। किन्तु वे अपनी रचनाओं को कभी कभी शुद्ध लिखने में भी असमर्थ होते हैं। ऐसी अवस्था में काव्य में समय समय पर परिवर्तन होते रहते है। लोकप्रिय होने पर काव्य प्रायः मौखिक ही प्रचलित हो जाते हैं। फिर एसे काव्य में मूल छन्दों का भुलाना और नवीन छंदों का जुड़ना असंभव नहीं होता। ऐसा प्रतित होता है कि पीछे से किसी ने वीरवांण को लिपिबद्ध कर स्पष्टीकरण के लिये गद्यांश जोड़ दिये हैं।

मलीनाथ मांगी मुषां, साकुर माले समाध ।
जकां न दोधी जोहियां, उणसु ं वधी उपाध ।।

मलीनाथजी ने मधु जोहिया को रुपयों आदि का लालच दिया साथ ही दला ने भी समझाया किन्तु मधु नहीं माना । तब धोखे से जोहियों को मारने की योजना बनी —

मारै लेसुं माल, साकुर पण लेसु सरब ।
जोयां पर जगमाल, रचै मूक उण रात रो ।।

एक बुढ़िया मालिन ने जोहियों को इस "चूक" की सूचना दी जिसका सरस वर्णन इस प्रकार किया गया है:--

मालण नै नितरो मोहर, दलो दिरातो दान ।
चूक तणी चरचा चली, आई मालण कान ।।
जद उण मालण जाणीयो, दले दियो बहु दान ।
सीलूं उंणरो सीलणों, कथ आ घालूं कान ।।
डिगती डिगती डोकरी, पूगी दले पास ।
दला चूक तो पर दुझल, नाझ सके तो नास ।।
तलवाडै थाणा तठै, सावै बंदव सात ।
वीरा थां पर वाजसी, रुंक झड़ो अधरात ।।

राठौड़ों द्वारा होने वाली "चूक" का समाचार जान कर दलों ने अपने परिवारों को रवाना कर दियाः--

दलै कविला देस नै, बाहिरज कीधा वेग ।
साथै बंदव सात ही, तिके उरसरो तेग ।।

अब राठौड़ों और जोहियों, दोनों ही दलों की ओर से युद्ध की तैयारी होने लगी । इसी समय दिल्ली बादशाह कुतबद्दीन की सेवा में जाने वाले तीस अशर्फियों के ऊंटों को वीरमजी ने लूट लियाः—

ऊंटां तीसां ऊपरै असरफीयां आवै ।
सो मेलो पतसाह के जोगणपुर जावै ।।
पैसकसी पतसाहरै पतसाह पुगावै ।
मिलीया वीरम मारगां अस लीधां आवै ।।
सब मोहरां पतसाहरी लुटे लीवरावै ।
सांमल हुय सारा सुभट मींया फरमावै ।।
ओ धन वीरम आपरै घरमै नहं मावै ।
वीरम ओ भख बाघरो पोह केम पड़ावै ।।

बादशाही सेना से हुए युद्ध और उसमें राठौड़ों की विजय का वर्णन इस प्रकार किया गया है:--

चढ घोड़ा भड़ चालीया रज गेण ढंकाया ।
मिलीया भारत जांगलु अध रतरा आया ॥
मीर केइ रीण मारीया मदु मन चाया ।
काट कडकां काढ़ीया खल खेंग खपाया ॥
हुर अपछर हरष अत सुरां वर पाया ।
ग्रीधण साकण जोगणी पल पूरा पाया ॥
वीरम छोडे जांगलु साहीयांण सिधाया ।
सज जुध जोया सांपला वीरम बचत्राया ॥
जद पीछा तठ पातसा धर अपणी धाया ।
दल जी कोसां दोय तक सामे ले आया ॥
सजे उमंग साहित्राण मैं वीरम त्रथ वाया ।
दीध बधाई राइकां जद गोगा जाया ॥
एक महीनो आठ दिन थठ गोठां थाया ।
वैरो लष रहवास कुंदलजी दरघाया ॥
बारा गाम ज बगसीया चिता वीरम चाया ।
डांण वले उचका दिया आधा अपणाया ॥
धाडै धन धुर माझीया मांझी वैमाया ।
वीरमकुं देत्रण वलै लष वैरे लाया ॥

इस युद्ध से राठोड़ों की स्थिति सुदृढ़ हो गई और—

लष वैरे पैदा सलष, सपरी आवै साष ।
सापांरा उपजै सदा, लेपे रिपीया लाष ॥

राठौड़ भाई जोहियों से बदला लेने का उपाय करने लगे। एक दिन वीरमजो ने जोहियों की सांढणियां छीन ली:—

दीठी वीरम हेक दिन पीती सर पांणी ।
वीरम रै सब सांढीयां निजरां गुजराणी ॥
वीरम चित विटालिया ऊंधी मत आणी ।
सात हजारूं सांढीयां दिन हेक दगांणी ॥
आयर जिणरी ओठीयां कल कुकरांणी ।
दस हजार चढीया दुभल रज गैण ढकांणी ॥
मारै वीरम मेटसां करसां तुरकांणी ।
लष वैरे वीरम लियै सांढ्यां आंपांणी ॥
दोय कोसां पूगो दलो लारे लुणीयांणी ।
मातों मातों मारकां मचो मलपाणी ॥

मल्लिनाथ जगमाल सु' तिण किसड़ी तांणी ।
आप तणी घर छोड़के आयो आपांणी ॥
आंपां मारण उठींया लष कोट लगांणी ।

कवि ने अपने आश्रयदाता दला जोया की विशेष प्रशंसा की है—

सरणायां साधार, ढलै जिसो नह देषीयो ।
वीरमरा विनपार, जबर गुना जिण जारीयो ॥

दला ने राठौड़ों से समझौते का प्रयत्न भी किया—

दल भेज प्रधांन कु' ए जाव अपंदे ।
वीरम तुम गुना करो हम जाय षिमंदे ॥
ढाबो ढाबो ठाकरां धर पाव धरंदे ।
मदु न मांनें माहरी कल काहे करंदे ॥
हेकण जगा न मावही दोय सेर बकंदे ।
हेकण म्यान न मावही दोय षाग धकंदे ॥
तुम हिंदु गुना करो मुष बोलो मंदे ।
दोय घर डाकण परहरै गाम धणीयां हंदे ॥

बीरमजी ने दला को उत्तर भेजते हुए लिखा—

आपै वीरम राठवड़ आगल पलावै ।
डाकण किणनै परहरै जब भूषी थावै ॥
गुण भूलो सारा दूलो परधांन मेलावै ।
आप प्रधान सु' अपीयो वीरम बट पावै ॥
सूर उगै साइयांण मै नित धाह घलावै ।
जोयां हंदी नीपका षोसे ने पावै ॥
दले अरु नेपाल कु' नित धाह सुणावै ।
वीरम न्याय नह लही अन्याव सुहावै ॥
जोइया बडपण जाणनै कथ नीत करावें ।
षौसै फेरू षाजरु' साफरै राषवै ॥

दला के समझौते के प्रयत्न व्यर्थ हुए और वह वीरमजी की अनिति से बहुत दुखी हुआ जिसके लिए कहा गया है—

दोनु' तरफांरों दलो, दुष भुगतै निस दीह ।
झलीया रहै न जोइया, लोपी वीरम लीह ॥

एक दिन वीरमजी ने जोहियों की धरती पर अधिकार कर अपने "दाणी" बैठा दिये और १५ जोहियों को भी मार दिया । तब जोहियों ने राठौड़ों पर चढ़ाई कर दी ।

इसी समय वीरमजी ने एक और चाल चली। जिसका वर्णन इस प्रकार किया गया है:—

बुकणरै दोय बेटीयां गत एक नीहालै।
नाम बड़ी कसमीदे परणो देपालै॥
रांनल कंवरी राजवण प्रभ अछरां गालै।
सो मांगी देवराज युं कर जोड़ हतालै॥
रांनल मुझकुं राजवण भाभी परणालै।
भावज गुण भूलां नहीं धंम षोड़ विचालै॥
कहीयो जद कसमीर दे चढ़ क्रोध अचालै।
हु परणांसु हिंदवां तुरकां हरटालै॥
सो कुछ हिंदु हम सुणां जिसकुं परणालै।
परणांसुं सगपण करै वीरम विगतालै॥
जद पाछो कहीदो जसु आगम अषतालै।
मानै भाभी महरो वायक सिर मालै॥
बैठी रांसै बापनै कर मुंडे कालै।

विवाह के अवसर पर हुई मारकाट का वर्णन महत्वपूर्ण है जिसमें कवि की अन्य समान कर्मवाली जातियों के प्रति उपेक्षावृत्ति की झलक मिलती है—

चारण चारण कुकतां आरण जगांणा।
बामण भुरी वासता सिर आप दिरांणा॥
भागा मुंडा भाठदां षुल दांत विराणा।
डोफा भागा डुलड़ा झाटक झेरांणा॥
कटिया हात कमीणदा दत नेग दिरांणां।
गहणा गायणीयां तणां लुटे लिवराणां॥
केतां पावज कटी हातां हेरांणा।
जावै गुणीयण जीव लेकर षांचा तांणा॥
ठांवां पंथ विच एकठां मिल ठाक घतांणा।
फिर कोइ इसड़ा ज्याग मै मत पाव दिरांणा॥
सलषांणी जिसड़ा सुपह वनड़ा वरवांणा।
बुकणका घर पोःकै धन सोध लिरांणा॥
बुकण सहतां बेलीयां इक षाड़ दिरांणा।
भटीयाणीदै भागका क्या चक्र फिरांणा॥
कह भाटी कसमीर कुं क्या फाग षिलांणा॥

दला जोहिया ने समझौते का प्रयत्न फिर भी चालू रक्खा और वीरमजी को अपने प्रधान द्वारा इस प्रकार सूचित किया—

दलैषान त्रिचार कर परधान पठाया।
लष वरै वीरम कनै ए जात्र कैत्राया॥

तगड़ तषी षग झार सै भंग वीरम आया।
आया कुं आदर दिया हम लीध वधाया॥

लख वेरो रहवास कुं दलजी दरवाया।
धरती चोवी गांमड़ा सब राज समाया॥

उस मांसुं त्रीरम तनै आधा बगसाया।
डांण वलै उचका दिया आदा अपणाया॥

चोत्री गाम चबुतरा कि काज बैठाया।
पोसे इकसठ पाजरु सफरै राषाया॥

जोइया पग मांडे जिती धरे नीही रहाया।
हाटी रहै न जुटिया कैहर उकराया॥

मीलीयां चिडीयां महलै अहि जाणक आया।
जांणक डोकर पोलडै विच वाद्य वसाया॥

क्या तेरा अवगुण किया हम लीध नीभाया।
षाय र दुगुण कियां सब जाय भुलाया॥

वीरम जी की रानी मांगलियाणी भी जिसने सातों जोहियों को अपना राखी भाई बनाया था समझौते का प्रयत्न करने लगी किन्तु उसका कोई परिणाम न हुआ।

युद्ध का मुख्य कारण यह हुआ कि वीरमजी ने दरगाह के "फरास" पेड़ को काट डाला जिसका वर्णन करते हुए मुस्लिम कवि ने अपनी श्रद्धा इस प्रकार व्यक्त की है—

दरपत हरोपल पीरदां त्रिच दरगह सोवै।
जोइया देस वीदेस मै जिण सांमो जोवै॥

पीर प्रचाइल प्रगट दुष दालद पौवै।
राम रहिम जु एक हैं कबु दोय न होवै॥

वीर फरासा बाढ़ बाढ़ बषाती ढ़ोबै।
के मुलां तागा करै हुब हाका होवै॥

फरहास के कटने का समाचार सुन कर दला जोहिया को बहुत दुख हुआ और उसने एक दिन जाकर वीरमजी की गायों को घेर लिया—

जेज न कीधी जोइयां, घेरी जायर गाय।
सुण वीरम ग्वालां सबद, लागी उर मै लाय॥

दस हजार जोया दुझल, कठठ साररा कोट।
ढालां जंगा चालणा, ढाला करै न ठोट॥

जोहियों द्वारा गायें घेर लेने पर वीरमजी ने भी विलंब नहीं किया और वे युद्ध के लिये चलने लगे। मांगलियाणी ने उनको समझाया मैं भाई को समाचार भेजती हूँ वह अवश्य ही प्रातः काल गायें लौटा देगा।

वीरमजी ने मांगलियाणी राणी को उत्तर दिया कि लखवेरे की सीमा से जोईये मेरी गायों को लेकर जीवित नहीं जा सकते और यदि मैं तुम्हारे कहने से चुप बैठुंगा तो वे समझेंगे कि राठौड़ कायर हैं। ऐसी अवस्था में मेरा आलस्य कर बैठना असंभव है--

फणधर छांडै फणद सुं न भार संभावै।
अरक पिछम दिस उगवै विधि वेद विलावै॥
विग घटै वींहंगेस को सिव ध्यान भुलावै।
गोरख भूलै ग्यांन कुं जत लिछमण जावै॥
संत छाडै सीता सती हणमंत घबरावै।
धणीयां धाडेता तणीकी पवरां पावै॥
हुँ सुंक कर बेठु घरे जग उलटो जावै॥

वीरमजी दो हजार सवारों को साथ ले जोइयों पर चढ़ाई करने के लिये तैयार हो गये।

इधर जोहीये दस हजार सवारों सहित युद्ध के लिये तैयार हुए। काव्य में युद्ध के प्रारंभिक वातावरण को सफलता पूर्वक अंकित किया गया है। भूत, प्रेत जोगिनी, गिद्ध आदि का युद्ध भूमि में आना, वीरो की हुँकार आदि का वर्णन वीर रस के अनुरूप हुआ है।

वीरम ने सर्व प्रथम तलवार चलाकर ६५ जोहियों को मार गिराया। फिर वीरम और मदु के बीच भयंकर युद्ध हुआ। दोनों घायल हो गये। कवि ने पुनः वीरमजी की वीरता का बखान करते हुए लिखा है---

लोप भवर गिर लंकरो कुण जावै बारै।
आभ भुजां कुण ओढ मैं कुण सायर जारै॥
मिणधर दे मुख अंगुली मिण कवण लिवारै।
सिंह पटा भर सांप हो कुंण मैंड पधारै॥
तेरु कुण सायर तिरै जमकुं कुण मारै।
बाद करै रिण वीरमो नर कोण वकारै॥
मदु तो बिन मारको कुंण आसंग धारै।

दोनों ओर के युद्ध का सजीव वर्णन करते हुए कवि ने बताया है कि अन्त में वीर और मदु दोनों ही युद्ध भूमि में मर कर सो गये। कवि कहता है---

अंग वीरमरै ओगिया, घाव एक सो दोय।
अंग मदुरै उपरा, गिणती चढै न कोय॥

तदुपरान्त कवि ने दोनों दलां की ओर से वीर गति प्राप्त करने वाले योद्धाओं के नाम दिये हैं—

निसाणी

पडीया वीरम पापती संग इतरा सुरा।
सोलंषी माधो सुभट पडपेत सनुरां॥
पडीयो चायल सैंसमल षल् कर भष भूरा।
भीम पडै रिण सांषलो तन कर चक चूरा॥
दोलो पड़ मोयल दुझल् पत्रवट वट षोर।
हजूरी वनी पड़े दोयण दल् दोर॥
पडीयो आहेड़ी पनो झडीयो षग झोर।
सांणी पड़ पांणक सुभट कीर मर तन कोर॥
मांगलीयो मगलो पडै जग सारो जाणै।
सहंस दोय पड सूरमा पापर हय पांणै॥
वीरम संग वीठीया विहद तद ऊंची ताणै।
अछरां वर पोहता इता अग वैठ विमाणें॥

॥ दूहा ॥

सोडा हाडा सिसोदा, पड़झाला अरु गोड़।
चावड़ा तुर चवांण पड़, रिण पड़ीया राठोड़॥

जोहियों की ओर से मारे गये योद्धाओं का वर्णन इस प्रकार किया गया है—

जसु रिण में जूझीयों कर जोस हमला।
मदु जैल रिण रहे झड तेगा झला॥
घट फूटा देपालदा धुड़ले वर धला।
दोय सहंस जोया दुझल हुरां संग हला॥
चढीया डोली चारसै गिरणै गलवला।
सव आथ साही वांणमें कर अला अला॥
दलो कहै मै वरजीया मानी नर कोई।
वीरमसुं जुध वाजनै सव सेन कराई॥
मारे वीरम रिण मुवा भड़ च्यारूं भाई।
धूड़ वलोइण धाडनै जो कीधी सो पाई॥

वीरमजी के पाँच पुत्र थे, (१) चूंडा, (२) सत्ता, (३) गोगादेव, (४) देवराज और (५) विजय राज।[1]

उपरोक्त युद्ध के पश्चात् कवि ने चूण्डा के प्रसङ्ग में लिखा है कि एक समय चूंड़ा सोया हुआ था। तब उस पर सर्प ने अपने फण की छाया की। तब पास ही खड़े बारहठ आला ने जाना कि चूण्डा वास्तव में कोई छत्रपति राजा है। फिर चूण्डा द्वारा घास की गाड़ियों में सैनिक छिपा कर मंडोवर गढ़ में ले जाने और गढ़ पर अधिकार करने का वर्णन है।

तदुपरान्त गोगादेव द्वारा दला जोहिया से युद्ध कर वीरमजी का बदला लेने का वर्णन है। चूण्डा जी ने गोगादेव से कहा कि "मैं तो मामे को मारूंगा नहीं सो तुम ही युद्ध करो।"

गोगा देव ने पांच सौ सवारों को साथ लेकर दला जोहिया पर चढ़ाई की और दला को मार दिया।

दला के मारे जाने का समाचार पूंगल पहुँचाया गया। समाचार प्राप्त कर लुणियाणी जोहीयों ने क्रोधित होकर गोगादेव पर चढ़ाई की। युद्ध मे गोगादेव ने वीरता पूर्वक युद्ध किया और अन्त में वीरगति प्राप्त की जिसके लिये कवि ने लिखा है--

हुय सिद्ध दसमो हालीयो संग नाथ जलंधर ॥

अन्त में कवि ने "चितहलोल" गीत में गोगादेव की प्रशंसा करते हुए और काव्य की छन्द-संख्या बताते हुए अपने काव्य को पूर्ण किया है।[2]

'वीरवाण' में ऐतिहासिक घटनाओं का यथा तथ्य चित्रण करने का प्रयत्न किया गया है जिससे हम इसको ऐतिहासिक काव्य मान सकते हैं। प्राचीन काल में प्रत्येक विषय के लिये पद्य को प्रधानता दी गई है और गद्य को प्राय: उपेक्षित किया गया है। यों अपवाद स्वरूप राजस्थानी भाषा में गद्य भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। हजारों ही वार्ताएं, ख्यात, विगत और पीढ़ियां आदि राजस्थानी गद्य के अनूठे उदाहरण हैं। ऐतिहासिक घटनाओं के यथा तथ्य चित्रण की ओर रहता है। प्राचीन काल में कई कवि इतिहासकार भी रहे हैं। ऐसी अवस्था में इतिहास के आगे काव्यत्व की प्राय: उपेक्षा हुई है और ऐतिहासिक पद्यों में काव्यत्व नाम मात्र को ही मिलता है। किन्तु "वीरवांण" के लिये ऐसा नहीं कहा जा सकता।

"वीरवांण" में ऐतिहासिक घटनाओं का यथा तथ्य निरूपण किया गया है। साथ ही मार्मिक प्रसङ्गों के अनुकूल भावनापूर्ण काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी हुई है। काव्य में वर्णित प्रमुख घटनाएं निम्नलिखित हैं--

---

(१) मुहणोत नैणसी री ख्यात भाग २ (का० ना० प्र० सभा) पृ० ८७। कवि राजा बांकीदासजी ने वीरमजी के पुत्र ६ माने हैं--

गोगादे १, देवराज २, जैसिघ ३, वीजो ४, चुण्डा ५ व पाची ६। देखिये बांकीदासरी ख्यात, वार्ता सं० ५२ पृष्ठ ६, राजस्थान पुरातत्व मन्दिर जयपुर।

(२) गोगादेव राठोड़ और सम्बन्धित विषयों में प्राप्त आदेश पर ज्ञातव्य परिशिष्ट में दिये गये हैं।

(१) जैतसिंह रो झगड़ो–जैतसिंह द्वारा गुजरात के परमारों पर आक्रमण कर राजधरा पर अधिकार करना।

(२) मालदेजी रो समो–अहमदाबाद के मुहम्मद बेगड़ा से युद्ध कर गींदोली का हरण करना। इसमें पांच झगड़ों अर्थात् युद्धों का वर्णन है।

(३) वीरम जी और जोहियों का युद्ध जिसमें वीरमजी और जोहियों के सम्बन्ध, युद्ध के कारण, युद्ध का वर्णन और युद्ध के परिणाम दिये गये हैं। इसी प्रसङ्ग में दिल्ली बादशाह के अशर्फियों से लदे ऊंटों की राठौड़ों द्वारा हुई लूट और युद्ध का वर्णन भी दिया गया है।

(४) वीरमजी के पुत्र चूण्डा द्वारा मंडोवर पर अधिकार करना।

(५) वीरमजी के एक पुत्र गोगादेव द्वारा जोहियों से युद्ध कर वीरमजी की मृत्यु का बदला लेने और वीर गति प्राप्त करने का वर्णन।

उपरोक्त पांचों ही घटनाएं इतिहास-प्रसिद्ध हैं और सम्बन्धित ग्रन्थों से प्रमाणित होती हैं। विषेश प्रमाणों के अभाव में इन घटनाओं को अनैतिहासिक नहीं ठहराया जा सकता। अन्य इतिहास ग्रन्थों से भी किसी न किसी रूप में सम्बन्धित घटनाओं का समर्थन होता है। सम्बन्धित विषय में प्रमुख इतिहासकारों के मत इस प्रकार हैं--

---

स्व० डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

मुहणोत नैणसी लिखता है—'वीरम महेवे के पास गुढ़ा (ठिकाना) बांध कर रखता था। महेवा में खून कर कोई अपराधी वीरमदेव के गुढ़े में शरण लेता तो वह उसे अपने पास रख लेता। एक समय जोहिया दल्ला भाइयों से लड़कर गुजरात में चाकरी करने चला गया, जहां रहते समय उसने अपना विवाह कर लिया। कुछ दिनों बाद वह वहां से अपनी स्त्री सहित स्वदेश की तरफ लौटा। मार्ग में महेवे पहुँच कर वह एक कुम्हारी के घर ठहरा और एक नाई को बुलवाकर अपने बाल बनवाये। नाई ने उसके पास अच्छी घोड़ी, सुन्दर स्त्री और बहुत सा धन देखा तो तुरन्त जाकर इसकी खबर जगमाल को दी। अनन्तर जगमाल की आज्ञानुसार उसके गुप्तचर कुम्हारी के घर जाकर सब कुछ देख भाल आये। कुम्हारी ने इसका पता पा दल्ला से कहा कि तुम पर चूक होने वाली है। फिर रक्षा का मार्ग पूछे जाने पर उसने उसे वीरम के पास जाने की सलाह दी। तदनुसार दल्ला अविलम्ब स्त्री सहित वीरम के गुढ़े में जा पहुँचा। पांच - सात दिन तक वीरम ने दल्ला को अपने पास रखा और उसकी भले प्रकार पहुनाई की। विदा होते समय दल्ला ने कहा कि वीरम, आज का शुभ दिवस मुझे तुम्हारे प्रताप से मिला है। जो तुम भी कभी मेरे यहां आओगे तो चाकरी में पहुँचूंगा मैं तुम्हारा राजपूत हूं। वीरम ने कुशलतापूर्वक उसे उसके घर पहुंचवा दिया।

"माला के पुत्रों और वीरमदेव में सदा झगड़ा होता रहता था, (अतएव) वह (वीरम) महेवे का परित्याग कर जैसलमेर गया वहां भी वह ठहर न सका और पीछा आया तथा गांवों को लूटने और धरती का बिगाड़ करने लगा। कुछ दिनों बाद वहां का रहना भी कठिन जान वह जांगलू में ऊदा मूलावत के पास पहुंचा। ऊदा ने कहा कि वीरम, मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं, कि तुम्हें अपने पास रख सकूं, अतएव आगे जाओ। तुमने नागौर को उजाड़ दिया है, यदि उधर का खान आवेगा तो मैं उसे रोक दूंगा। तब वीरमदेव जोहियावाटी में चला गया। पीछे से नागोर के खान ने चढ़ाई कर जांगलू को घेर लिया, जिस पर गढ़ के द्वार बन्द कर ऊदा भीतर बैठ रहा। खान के कहलाने पर ऊदा उससे मिलने गया, जहां वह बन्दी कर लिया गया। खान ने उससे वीरम का पता पूछा, पर उसने बताने से इन्कार कर दिया। इस पर उसकी माता से पुछवाया गया, पर वह भी डिगी नहीं। दोनों की दृढ़ता से प्रसन्न होकर खान ने ऊदा को मुक्त कर दिया और वीरम का अपराध भी क्षमा कर दिया।

'वीरम के जोहियों के पास पहुंचने पर उन्होंने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया और दाण में उसका विस्वा (भाग) नियत कर दिया। तब वीरम के कामदार कभी-कभी सारा का सारा दाण उगाहने लगे। यदि कोई नाहर वीरम की एक बकरी मारे तो यह कह कर कि नाहर जोहियों का है वे बदले में ११ बकरियां ले लेते थे। एक बार ऐसा हुआ कि आभोरिया भाटी बुक्कण को, जो जोहियों का मामा व बादशाह का साला था और अपने भाई सहित दिल्ली में रहता था, बादशाह ने मुसलमान बनाना चाहा। इस पर वह भाग कर जोहियों के पास जा रहा। उसके पास बादशाह के घर का बहुत सा माल और वस्त्राभूषण आदि थे। गोठ जीमने के बहाने उसके घर जाकर वीरम ने उसे मार डाला और उसका माल असबाब तथा घोड़े आदि ले लिये। इससे जोहियों के मन में उसकी तरफ से शंका हो गई। इसके पांच - सात दिन बाद ही वीरम ने ढोल बनाने के लिए एक फरास का पेड कटवा डाला। इसकी पुकार भी जोहियों के पास पहुंची पर वे चुप्पी साध गये। एक दिन दल्ला जोहिये को ही मारने का विचार कर वीरम ने उसे बुलाया। दल्ला खरसल (एक प्रकार की छोटी हल्की बैल गाड़ी) पर बैठ कर आया, जिसके एक घोड़ा और एक बैल जुता हुआ था। वीरम की स्त्री मांगलियाणी ने दल्ला को अपना भाई बनाया था। चूक का पता लगते ही उसने दल्ला को इसका इशारा कर दिया। इस पर जंगल जाने का बहाना कर दल्ला खरसल पर चढ़कर घर की तरफ चल दिया। कुछ दूर पहुँच कर खरसल को तो उसने छोड़ दिया और घोड़े पर सवार होकर घर पहुंचा। वीरम जब राजपूतों सहित वहां पहुंचा उस समय दल्ला जा चुका था। दूसरे दिन ही जोहियों ने एकत्र होकर वीरम की गायों को घेरा। इसकी खबर मिलने पर वीरम ने जाकर उनसे लड़ाई की। वीरम और दयाल[1] परस्पर भिड़े। वीरम ने उसे मार तो लिया पर जीता वह भी न बचा और खेत रहा। वीरम के साथी गांव बड़ेरण से उसकी ठकुराणी (भटियाणी) को लेकर निकले। धाय को अपने

(१) मुंहणोंत नैणसी का पूर्ण वक्तव्य परिशिष्ट में दिया गया है।

एक वर्ष के पुत्र चूण्डा को आल्हा चारण के पास पहुँचाने का आदेश दे वह राणी मांगलियाणी सहित सती हो गई।

(जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड; पृष्ठ १६३)

श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ

"यह सलखाजी के पुत्र और रावल मल्लिनाथजी के छोटे भाई थे। यद्यपि मल्लिनाथ जी ने इन्हें खेड़ की जागीर दी थी, तथापि जोहिया दला की रक्षा करने के कारण इनके और मल्लीनाथजी के बीच झगड़ा उठ खड़ा हुआ। इससे इन्हें खेड़ छोड़ देना पड़ा। वहां से पहले तो यह सेतरावा की तरफ गए और फिर चूंटीसरा में जाकर कुछ दिन रहे। परन्तु वहां पर भी घटनावश एक काफिले को लूट लेने के कारण शाही फौज ने इन पर चढ़ाई की। इस पर यह जांगलू में सांखला ऊदा के पास चले गये। इसकी सूचना मिलने पर जब बादशाही सेना ने वहां भी इनका पीछा किया, तब यह जोहियों के पास जा रहे। जोहियों के मुखिया कल्ला ने भी इनकी पहले दी हुई सहायता का स्मरण कर इनके सत्कार का पूरा पूरा प्रबन्ध कर दिया। परन्तु कुछ ही दिनों में इनके और जोहियों के बीच झगड़ा हो गया। इसी में वि० सं १४४० (ई० सं० १३८३) में यह लखवेरा गांव के पास वीरगति को प्राप्त हुए। विरमजी के पांच पुत्र थे: १. देवराज, २. चूंडा, ३. जैसिंह, ४. विजा और ५.गोगादेव।

(मारवाड़ का इतिहास प्रथम खण्ड)

"वीरवांण की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें कवि ने मुसलमान होते हुए भी धार्मिक उदारता का परिचय दिया है। जोहिया मुसलमानों की सहनशीलता का परिचय भी प्रस्तुत काव्य द्वारा प्राप्त होता है। जोहियों ने वास्तव में वीरमजी और उनके साथियों की हठधर्मी पूर्ण कामों और अपराधों से विवश होकर ही युद्ध किया था। फिर वीरमजी की रानी मांगलियाणी ने जोहिया मुसलमानों को अपना राखीबन्ध भाई बनाया तो दोनों ही पक्षों ने अपने उच्च सम्बन्धों का निर्वाह किया। यहां तक कि चूण्डाजी भी अपने मामा पर तलवार चलाने के लिये नहीं तैयार होते हैं और गोगादेवजी को वीरमजी का बदला लेने के लिये भेजते हैं।

"वीरवांण" में वीररस का उत्कृष्ण निरूपण हुआ है। "वीरवांण" वास्तव में वीर-रस-प्रधान काव्य है और इसमें आलंबन, उद्दीपन, स्थाई एवं संचारी भावों का विस्तृत वर्णन हुआ है। युद्ध के कारण मध्य युगीन परिस्थितियों के सर्वथा अनुरूप हैं जैसे स्त्री हरण, मार्ग में जाते हुए धन का लूटना, घोड़ों ऊंटों और गायों को घेरना, धार्मिक भावनाओं पर आघात करना आदि। युद्ध का वर्णन तो कवि कल्पना और ओझ से ओतप्रोत हुआ है।

'वीरवांण' की तीसरी विशेषता कथा-वस्तु का सुसंगठित होना है। काव्य सम्बन्धी प्रत्येक घटना पिछली घटनाओं से जुड़ी हुई है और वीरमजी तथा जोहियों के युद्ध में संघर्ष चरम सीमा पर पहुँचता है। संघर्ष का अन्त गोगादेव द्वारा जोहियों से बदला लेने से होता है और यहीं काव्य पूर्ण भी होता है। इस प्रकार काव्य की कथा वस्तु भी पूर्ण संगठित है।

'वीरवांण' की भाषा राजस्थानी है। 'वीरवांण' की भाषा पूर्ण रूपेण परिमाजित नहीं होते हुए भी विषय के अनुरूप ओजपूर्ण है। भाषा में कई स्थलों पर पंजाबी प्रभाव भी

झलकता है। पंजाबी की "दा" "दी" विभक्तियों का प्रयोग "रा" "री" के स्थान पर कई बार हुआ है। बहादुर ढ़ाढ़ी का शास्त्रीय अध्ययन नहीं ज्ञात होता है और इसलिये भाषा दोष और छन्द दोष भी कई स्थानों पर मिल जाते हैं।

'वीरवांण' में राजस्थानी काव्य के प्रिय अलंकार 'वैण सगाई" का सफल प्रयोग भी कई छन्दों में किया गया है।

राजस्थान में ढाढ़ी कवियों ने नीसाणी और दूहा छन्दों को अधिक अपनाया है। इतिवृत्तात्मक वर्णन के लिये निसाणी, चौपाई और दूहा छन्द सर्वथा उपयुक्त रहते हैं। इसलिये 'वीरवांण' में भी नीसाणी और दूहों का प्रयोग किया गया है। कवि के शास्त्रीय अज्ञान अथवा प्रतिलिपि कर्ता के अज्ञान से कई छन्दों में मात्रा दोष भी वर्तमान है। काव्य के अन्त में एक गीत चितहिलोल़ है और यह काव्य कला का अनुपम उदाहरण है।

पद्य के साथ गद्य का प्रयोग कई राजस्थानी ग्रन्थों में मिलता है। राजस्थानी वार्ताओं और ख्यातों में गद्य की प्रधानता होती है तथा पद्य का प्रयोग न्यून होता है। इसी प्रकार कुछ राजस्थानी काव्यों में कहीं-कहीं गद्य भी मिल जाता है। विषय के स्पष्टीकरण के लिये 'वीरवांण' में कहीं कहीं गद्य की कुछ पङ्क्तियां मिल जाती हैं। 'वीरवांण' में प्रयुक्त राजस्थानी गद्य पूर्ण परिमार्जित हैं और इसमें पद्य की तरह तुक मिलाने की प्रवत्ति भी दिखाई देती है।

'वीरवांण' का कर्ता स्व० पं० रामकरणजी आसोपा के लेखानुसार रामचन्द्र नहीं ज्ञात होता जैसा कि उन्होंने स्व० सम्पादित राजरूपक भूमिका में प्रकट किया है। 'वीरवांण' का कर्ता बादर अर्थात् बहादुर ढ़ाढ़ी था। ढ़ाढ़ी भी हिन्दु नहीं वरन् मुसलमान ढ़ाढ़ी था जैसा कि हिन्दुओं के लिये किये गये उसके काफिर शब्द-प्रयोग से ज्ञात होता है। कवि के आश्रय दाता भी मुसलमान जोहिये थे और कवि ने अपने आश्रय दाता और इस्लाम धर्म के लिये बहुत ही आदर सूचक प्रयोग स्थान स्थान पर किये हैं।

वास्तव में 'वीरवांण' सम्बन्धित इतिहास के लिये एक आधारग्रन्थ है। 'वीरवांण' काव्य का कर्ता ढ़ाढ़ी बादर सम्बन्धित कई घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी, निष्पक्ष, उदार और काव्य-कला निपुण व्यक्ति ज्ञात होता है। ग्रन्थ की ऐतिहासिक और काव्यात्मक उपयोगिता समझ कर ही हमने अपनी नवीन खोज में प्राप्त तथा सम्बन्धित घटनाओं पर आधारित आढ़ा पाड़खान जी रो रूपक, गोगादेव जी रो, वीरमदेवजी री बात, चूण्डाजी री बात, गोगादेवजी री वात आदि और मुहणोत नैणसी का पूरा वक्तव्य परिशिष्ट में दिये हैं। साथ ही ग्रन्थ के परिशिष्ट में देवगढ़ से प्राप्त 'वीरवांण' की एक अन्य प्रति के पाठान्तर और काव्य-सम्बन्धी कठिन राजस्थानी शब्दों के हिन्दी अर्थ भी दे दिये हैं। वीरवांण की एक प्रति हमें श्री मांगीलाल व्यास, जोधपुर से देखने को मिली किन्तु इसका पाठ नितान्त अशुद्ध होने से हम इसका उपयोग नहीं कर सके।

अन्त में मैं "राजस्थान ओरिन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट" के संमान्य संचालक आदरणीय मुनि श्री जिन विजयजी महाराज़ के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूं जिन्होंने प्रस्तुत उत्कृष्ट काव्य के सम्पादन और प्रकाशन के लिये प्रेरणा दी है।

लक्ष्मी निवास काटेज,
बनी पार्क, जयपुर
श्रावणी तीज, सं०, २०१४ वि०

लक्ष्मीकुमारी चण्डावत

ढाढी बादररो वणायो

वीरवांण

॥ श्री गणेशाय नमः । श्री सारदाय नमः ॥
॥ श्री माताजी । श्री रामचन्द्राय नमः ॥

अथ ग्रंथ वीरवांण ढाढी बादरो वणायो लिषंते ।
रावजी श्री सलषेजीरा कंवराँ च्यारांरा परवाड़ा लिषंते ।

दूहा

सुमत समापो सारदा, आपो उकती आप ।
कमंधा जस वरनन करूं, तुझ महर परताप ॥ १

समरूं गणपत सरसती, पाण जोड़ लग पाय ।
गाउं हु सलषाणीयां, विध विध सुजस बणाय ॥ २

सुणी जिती सारी कहुं, लहु न झूंठ लिगार ।
मालजैत जगमालरो, वीरम जुध विचार ॥ ३

राज समालो नगरमैं, सोभत जैत समीयांण ।
थान खेड़ वीरम थपे, जगजाहर घण जांण ॥ ४

मालदेजी जैतसींघजीरो वीरमदे जिसोवतजीरो राज-वरनन

नीसाणी

सुत च्यारूं सलषेसरा कुलमै किरणाला ।
राजस बंका राठवड वरवीर बडाला ।।
साथ लियां दल सामठा वीरदाँ रूखवाला ।
भिड़िया भारत भीमसा दल पारथ वाळा ।।
देस दसु दीस दाबिया कीदा धकचाळा ।
केवि धस गीर कंदरा वपसंक बड़ाळा ।। १

जैतसींघरो झगड़ो लिखंते

जैत चढ़े गुजरातकुं सामान सझाया ।
पमंग लिया संग पांचसै चड षुर चलाया ।
सामत चढ़िया सूरमा राडधरै आया ।
चित उजल चोगानमैं तंबु तणवाया ।
अषैनंदै मीलणका मनसोभा थाया ।। २

बीसै विधविध वरजिया मत जावो भाई ।
देस दिषाया जैतकुं आ कुबद कमाई ।।
गोयल षेड गमाडीया उंणहुंत सवाई ।
धर जासी घर लुटसो कर जेज न काई ।। ३

वीसै वरज्या नह रेया थट भेळा थाया ।
अषानंदा एकठा उठ डैरै आया ।
हुकमज दीयो हजूरियां लष दारू लाया ।
चळु करंता चूक ह्वी अरी काट उड़ाया ।
जैत कमंधज जेण दीन धर श्रोण धपाया ।
पमांरां धर पालटी धर जैतल पाया ।
गांवां अठचालीस सौ राड़धरा आया ।। ४

दूहा

राडधरो कायम कीयो, नरनामी नष तैंत ।
मेली रावळ मालनै, जबर बधाई जैत ।। ५

नीसांणी

लंगर लषुं लार वैह दळ पार न पाई ।
मालबीयो बलराव है जैचंद वीजाई ।।
राज करै धूम रीतसों बध कीत सवाई ।
घर घर आणद है घणा थित मंगल थाई ।।
मँहपत रावल मालरी प्रज फूलां छाई ।
मंडलीकां ज्युं मालदे वंका बरदाई ।। ५

इण रीत रावल मालदेजी गुडै नगर राज करै जकां दिनाँ समीघांणेसु रावल जैतसीजी इडर गुजरातने चडीया । जाय राडधडै उतरीया । जठै अपैनंदे दोनुं कोटड़ीयां जाय राड़रै पंमारांनै आदमी बांवनसु मारनै राडधरौ लीनौ तैरी राड़ संपूरण ।

मालदेजीरो समो लिषंते

दूहा

भायां परधानां भडां, दळबळ अथग दुभाल ।
कीधो उछब कांमती, मीण धर रावळ माल ।। ६

रावल मालो राजवी, राज करै धुम रूप ।
बारा हरचंदरा वहै, सागे सरग सरूप ।। ७

वीरम भाई बांकडो, ज्यूं बेटो जगमाल ।
दत्तक भाव रचावा दुनी, साह उरांरा साल ।। ८

तबेलै मालह तणै, पाणी पंथा पमंग ।
सांवत दरगह सूरमां, वे असवार उमंग ।। ९

तीकां दिनां मणीयर तीसो, दूजो नांही देस ।
घर घर व्यांवे घोड़ीयां, वदै वीछेरा वेस ।। १०

पड़ मांहि नाहीं पड़ै, घाट ईसै घोड़ांह ।
भड़ चढीया अत सोभ दै, ऐस आ घोड़ाह ॥ ११

नग धर मीणीय नीपजै, कोड़ीधर केकांण ।
मैहमंद लेवण मेलीयो, मरवण षान पठांण ॥ १२

सिंणलागर सागर समै, भरीया नीर तळाव ।
किलमां आय डेरा किया, सोदागरां सुभाव ॥ १३

तीजणियां दिन तीजरै, सजे साज सिंणगार ।
हीडे आई हींडबां, अपछररै उणियार ॥ १४

अरक तणो पण आथमण, मेह अंधारी रात ।
तीजणीयां लेगा तुरक, घोड़ां ऊपर घात ॥ १५

बोले बांमण बाणियां, मालहुंत कह बात ।
तीज तऐं मग रैंत दिन, सुत मम लेगा सात ॥ १६

जिण कारण मेले जगो, छाने हेरा च्यार ।
मांडळरी धर मेलीया, वालण वैर विचार ॥ १७

कंवरहुंत हेरु कहै, धुर सुण धणीयांह ।
मांडळपुर मैहमंद घर, बैठी तीजणीयांह ॥ १८

मैहमँदसारी डीकरी, गींदोलीरे साथ ।
मैह जीता आवै मुकर, जमैरातरी जात ॥ १९

कंवरजी जगमालजी मांडवैसु तीजणीयां लावण नै वा गंदोली लाया वो समो लिषंते

नोसांणी

कथ हेरुकी सुण कंवर कमरां कसवाणी ।
भड चंगा लीधा भला तंग षैगां ताणी ॥

भुजं पारथ क्रन भीम सा ऐहड़ा आपाणी ।
पाव धाव पंष राव सा अस पंथा पाणी ।।
सुभटां वीसी सातसुं चढीयो मालाणी ।
पूगा दिना दसमें प्रथम मांडलगढ आणी ।।
कहियो मै बंदगी करां आगल उचराणी ।
डेरो कर वेरो दियो जगमाल मालाणी ।।
तीजणीयां सब आवजो पूजण पीरांणी ।
कल मैहमदरै इदरौ मेळो मंडवाणी ।।
आय हुई सब एकठी कथ जेम कहाणी ।
वेलि वा पुकारियां जगमल मालांणी ।।
ऐ तीजणीयां एकठी आई आपांणी ।
सजो सुभटां सूरमां किम जेज करांणी ।।
आ कहतां भड़ ऊठीया वीरा दवी रांणी ।
ज्युं मृग डार ज ऊपरैं चीता मलफांणी ।।
तुरंगा चाढी तीजण्यां हुव कुक हुवांणी ।
सापूत बेटी साहरी जगमालै जांणी ।।
गींदोली करसुं ग्रहे हय पीठी चढांणी ।
लेगो ज्युहीं लावीयो जगमाल मालाणी ।।
चावळ कमधां चाढीयां जसडा कव जांणी ।
कूक गई मैहमंदके जग सारैं जांणी ।
इळ मीणीयर कर ऊजळो तीजणीयां आंणी ।। १९

दूहा

दी छाने जगमालनैं, मैंमदसा फरमास ।
दीनी गींदोली देऊं, जूनागढरो वास ।। २०

हुं मैंमदसा वेगडो, गोरीसाह दुभाल ।
....................................।। २१

....।

राज गींदोली राषीयां, मरजासो माहाराज ।। २२

जगो महा भड़ जोरवर, भीरड़ कोट कुळ भांण।
महमद गोरी साहरी, कंमध न मानी कांण ।। २३

बैर सताबी बालीयो, सत्रवां उर साल ।
जिणरै उछबरो जबर, मेळो रचियो माल ।। २४

मैलै रावल मालरै, आया इसड़ा पीर ।
जांणक चौसठ जोगणी संग लै बावन वीर ।। २५

आया कितायक अवलिया, बड़ा बड़ा दरवेस ।
पाचांही पंडवां जिसा, उमियां सेत महेस ।। २६

जैसळ नै तोली जिसा, सबै आवीया साथ ।
आइ तषत बैठाविया, निकलंक हुआ सुनाथ ।। २७

दरसण आया देवता, सिध साधक ले साथ ।
चौरासी पीरां सहत, नवही आया नाथ ।। २८

राणी रूपादे जिसि, सापूत जिका सकत ।
धारु जिसड़ा उण घरे, भव भव तणा भगत ।। २९

मेलै रावळ मालरै, रचीयौ सतजुग राह ।
वेरो देवण भीरड़ गढ, चढ़ आया पतसाह ।। ३०

नीसांणी

दिलीसुं चढी आया दुझल गोरी सुलताणा ।
मांडलगढ मैहमंद चढ, षांमद षुरसाणा ।।
सांतु लोपी सायरा मिलपा जजलांणा ।
इण विध मैहमंद आवीयो सभ दल घमसांणा ।।

हजरत बेंहुं भेळा हुआ पूरब पिछमांणा ।
है बेहुं घर मोटा बोहत छोटा रहमांणा ।।
षोज गमावण षूनीयां जोडै जमराणा ।
रीस करै ज्यां रोळवै बोळै महरांणा ।।
कवण षून जांरो करै हींदु तुरकाणा ।
जलल करी जगमाल दे करडी कमरांणा ।।
ओरत आणी एकरी एकण धी आणा ।
सझ बेंहुं आया पातसा घुरता नीसांणा ।।
षेड़ तणा वला षोसणा पलटै लंक पाणा ।
आरंभ कीधा ऐहड़ा सज बेहुं सुरतांणा ।।
षंचिया दोळा षेडरै तंबू तूरकांणा ।
घेरो लागो भीरडगढ़ डेरा दरसांणा ।। ७

रावजी मालदेजीरो पैलो झगडो लिषंते

दूहा

घेरो लागो भीरड़गढ, उडण लागो सोर ।
छूटण लागी नाळीयां, बोलण लागा मोर ।। ३१

सतगुरसुं कहियो बचन, विदा हुवंता वांण ।
भिलै नहीं गढ भीरड़रो, मलीनाथरो मांण ।। ३२

निसांणी

इष घडा असुराणरी चित रोस चढाया ।
जागवीया अह रावकै जमराव षिजाया ।।
धोम झलाहळ धेषमै उठ बाहर आया ।
मुछ धरै कर मालदे सझ कंवर सवाया ।।
जरद कसै भड़ जोरवर अंग रोस न माया ।
कमधज उठियो धूप कर केकांण कसाया ।।

असुर दिली दल ऊपरां अस एम उठाया ।
षाग चमंकी बीज ज्यूं घण घाव लगाया ।।
केता रुंड मुंड काट कर रिण जंग मचाया ।
असुर गया रिण ओसके माले डकराया ।।
कीलम अराबा त्यार कर दूज़ैं दिन आया ।। ८

रावलजी मालदेजीरो दूजो झगड़ो

भुरजां भुरजां भीरड़ गढ बड़ नाळ गड़की ।
सोर धुंवारिण घोरसुं धर अंबर ढकी ।।
आयर वीज अचींतकी असमान कड़की ।
भुप तुराटां भेळीया जुध कारण जकी ।।
आलम आलम अषीयो धज नेज फरकी ।
रजवट वंका राठवड़ जुटा षळ जकी ।।
म्लेछ तड़फड़ मारका गीधाण गहकी ।
पत्र भरे रत पूरिया वीरांणव भकी ।।
जैं जैं जपैं जोगणी आसीस अछकी ।
अपछर आय उतावळी हूरां वर तकी ।।
आसुर दळगा ओसके यण घावां छकी ।
सुणियां बायक पातसा सेना बेहुं संकी ।। ९

दूहा

दळ मेले गोरो दुझल, तीजैं झगड़ैं तैड़ ।
मारां रावळ मालनैं, षोस लेंवां गढ षेड़ ।। ३३

साहां वायक एम सुण, दे डाढी पर हत्थ ।
अला अला उचारकैं, दळ मेले समरत्थ ।। ३४

रावल मालदेजीरो तीजो झगड़ो

नीसांणी

चढ दळ आया षेड़ पर हैदळ षुरसांणी ।
काली दांमण कुंजरां पाहाड़ प्रमांणी ।।
हींस हुवँ ऐराकीयां पोह कीध पलांणी ।
चढीया धुसै वाजतां जंग भिडीयां जाणी ।।
रावळ माला माहा बळी आगळ हिंदवांणी ।
सादुळो किम सांसवै सिरगाळ सहांणी ।।
असमर ले कर ऊठीया जम रुठा जांणी ।
आप दरगह आवीया आयस फुरमांणी ।।
वीड़ंगां चढीया वीरवर सुण रावल बांणी ।
मीर छड़ालां मारीया षग बाढ षीरांणी ।।
केतां अरीयण काटीया धर सोण धपांणी ।
तेरे तुंगा भाजीया माले सलषांणी ।।
दीन धौळे दळ दाटीया चाढे उर वाणी ।
मीर गजां घड़ मारीयां केता मुगलांणी ।।
माले मिणीयर देसमैं पंष चाढचो पांणी ।
मालन भागा मुगळां सांवत सलषांणी ।। १०

दूहा

साह दोऊं मन संकीया, फोज विदा की फेर ।
भिळे नहीं गढ भीरड़रो, माल तणो गिरमेर ।। ३५

राघै बाघै राड़रा, भुज झेला भुरभार ।
चोथे जुध जुड़वा चमुं, लंगर लीधा लार ।। ३६

राघो वागो वीरवर, इका वैहुं अबीह ।
जुध जुटा इण विध जबर, सांकल छूटा सीह ।। ३७

राती वासो दैण रच, मन जुध चोथे माल ।
वींरम घड़सी वरजीया, माधैनैं जगमाल ।। ३८

वीरम घड़सी वीरवर, पाल माल परभात ।
अब यां अरीयां उपरा, रचसां जुध अधरात ।। ३९

रावळजी वीरमदेजी कँवरजी जगमालजी रावळजी घड़सीजी भाटी जवाई जेसलमेरीया नै सोलंषी माधोसिंघजी प्रधान वीरमदेजीरा झगड़ा लिषंते ।

नीसांणी

अजबै ऊपर ऊरीयां घड़सी रिण घोड़ा ।
एकण घाव उतारीया जंगम वड जोड़ा ।।
पाहड़षान पछाड़ियो विजड़ां दुजोड़ा ।
तेजलषां जुध तीसरै चिमनो चोथोड़ा ।।
पीरषान रिण पंचमै सारंग छटोड़ा ।
इकां षट ही षूटगा घर ढहगा घोड़ा ।।
जद आयो जैतकर जस षाट भलोड़ा ।
माल वधांवां मोतीयां भर थाळ वडोड़ा ।। ११

घड़सी बाई गरजके बागेषां ऊपर ।
गुरज घमोड़ी बागड़े घड़सीके धु पर ।।
घोड़ा सहतो गुड़ गयो लुटीयो धरती पर ।
जांण कबूतर छुट गयो हातांबाजीगर ।। १२

जितै षाग जगमालदे पछटी बागे पर ।
बगतर सहतो बोटकै निरलंग कियो नर ।।
कीरमिर वाही करगसुं दुजै इका पर ।
जाण चमंकी बीजळी करकाळै डंबर ।। १३

राघै फिर पग रोपीया इकै अड पाई ।
राघै ऊपर रूक रस वीरमदे वाई ।।

घिरतै फिरतै कूदतै ठठर तै ठाई ।
ठाई ठठर ठोर भुज राघेषां वाई ।।
बाई जीतरै वीरमै कर जोर कलाई ।
वीडंग तणा दोय टूक हुय राघा भागाई ।।
रचियो भारथ माधड़ै समसेर चलाई ।
जाण मिरंगां डार पर चिंता मलफाई ।।
राघो बाघो कट पडै रिण मांझ सिपाई ।
वीरम घड़सी माधंडै जगै वरदाई ।।
पतसाहांरै सामनै समसैर चलाई ।
उरस छिबंतां आवीया भाटी अरु भांई ।
माला वधाया मोतीयां कर कोड किताई ।। १४

दूहा

राळा बोळै रातरा, पैले वषत पधार ।
इका घड़सी मारीया, बैयां आंगळ च्यार ।। ४०
भाटी आगळ भैचकै, नाठा जवन निराठ ।
घड़सीरै जुध जोरमै, जबरी वागी झाट ।। ४१
मैमंदसा नै मालरा, भिडीया बेंहु भीच ।
घड़सी डोळी घालीयौ, बागो षाडा बीच ।। ४२
चढीया डोळी च्यार सै, घड़सी साथे घाय ।
उतै जवन कट आठसै, षांपां दिया षपाय ।। ४३

रावळजी मालदेजीरै पातसारै इकांरी लड़ाई थपी । भाटी घड़सीजी-इका छव मारीयां । पछै राघो और बागो दोनुं ही ईकां आपरी फोजसुं लड़ाई करी । भाटी घड़सीजी कंवरजी जगमालजी रावळजी वीरमदेजी सोलंषी । माधोसिंघजी प्रधांन वीरमदेजीरा आं च्यारां ही राघे बाघेरी फोजसुं लड़ाई करी और बाघो जगमालजी हाथसुं मारीजीयो । इण रीत जुध हुवो ।

दूहा

राघो बागो रिण रैयो, संक्या साह मन सोय ।
धीरज दीनी उठ घर, दूजां ईका दोय ।। ४४

मंडीया नेड़ा मोरचा, तुरक लगावै ताय ।
मालै इमं कहियो मुषां, एै काइ दियै उठाय ।। ४५

जगै अरज कीधी जरां, अभंग मालनै आय ।
कुंपो है अस कवलीयो, अब दूं फोज उठाय ।। ४६

मालै इम कहियो मुषां, सुघड़ वात दिल सौज ।
इण अस चढ तूं एकलो, फेरे किण विध फोज ।। ४७

नीसांणी

आलण कुंपो अथ वहै ज़ाता जैसांएै ।
रिण मायां भूतां रची, तंवर तेजल आंएै ।।
आलणकुं तेजल कयो मासी सुत जांएै ।
मै रिणमैं अवगत गया धि भोजन षांएै ।।
आलण बेटी आपरी तू रिणमै आंएै ।
कंवर प्रणावो कुंपकुं जग सारो जाएै ।।
धि चंवरी लागां धुंवों सुरलोक पयांएै ।
कुंपैकुं आलणी कही अगल मुष आएै ।।
कमधज परणी कूपसीं आलण धि आंएै ।
दीदो भूतां दायजो कवलो केकांएै ।।
फतेजीत वाजो दियो षांडो षुरसांणे ।
अकथ कुंपैरी इसी जग मालो जांणै ।
वीरांरै वचनां तणो आयो अवसांएै ।। १५

दूहा

अभंग नगारो आपीयो, अरि गंज षाग उचेट ।
कुंपानै अस कवलीयो, भूतां कीदो भेट ।। ४८

वीरां जद दीनो वचन, हतलेवो छुटवार ।
याद करो जद आपरै, हाज़र वीस हजार ।। ४९

कुंप कंवर विदा कियो, पांण जोड़ कर प्रीत ।
दीनों भूतां दायजो, कुळमें राषण रीत ।। ५०

भीरड कोट दळ भेळसी, हणसी हातां हुंत ।
आडा किण दिन आवसी, भीडज कवलींयो भूत ।। ५१

कुंपादै अस कवलीयो, मुषसुं कहियो माल ।
आलण वचनां याद कर, जुड़सी रिण जगमाल ।। ५२

कुंपे दीनो कंवलीयो, जद लीनो जगमाल ।
रातीवासो रातरा, देवण सज्यो दुभाल ।। ५३

अभंग नगारै वंब पड़, अरिगंज षाग उठाय ।
कवलै आगळ धूंप कर, दीयो पागड़ै पाय ।। ५४

कमधज चढीयो कवलीये, वंध्यो रोस मन मांय ।
दळ फिरिया दरीयाव ज्यूं, ओळा दोळा आय ।। ५५

मुजरो कर जगमालसुं, भाष्यो इण विध भूत ।
कहो जको कारज करां, राज तणां रजपूत ।। ५६

जगै हुकुम दे भोकी [या], किलमां पर कैकांण ।
बीस सहस लगि वहण, भूतांरी केवांण ।। ५७

मीरांरा माथ उडै, मुष बक मारो मार ।
मालावत जगमालरी, वहन लगी तरवार ।। ५८

वरण साहां घड वीनणी, सभ आई सिंणगार ।
जिणनै परणी जण जगो, कसीयो राजकँवार ।। ५९

जबर भूत लै जाणीया, दुलही फोज दुभाल ।
जुध हथलेवो जोड़ियो, मालावत जगमाल ।। ६०

निसांणी

भातीजो वीरम तणो मालारो बेटो ।
जुध चढीयो जगमाल दे कर टोप लपेटो ।।
बगतर कुंठा वीडीया धुब पोरस धेटो ।
सिरपर बांध्यो सेहंरो जस विरदा जेटो ।।
चंवरी रिण कामण चमुं फेरे दे फेटो ।
झुंळलीयां संग जानीया हतलेवे षेटो ।।
सावो अध रत साजीयो भारतमें भेटो ।
झांपां भरे कवलीयो रुकां बळ रेटो ।
जिण विध भेटै चालै जो समै भूतावळ भेटो ।।
कुण जाणै वावै कवण पावे नह पेटो ।।
पाडे दळ पतसाहरा षीमे कुण षेटो ।। १६

बटका उडगा वगतरां झटकां कर झाड़ै ।
पतसाहां दळ पाधरै राठौड़ रमाड़ै ।।
घोड़ां आगळ गैबका बाजा बजवाड़ै ।
तेग बहै भूतां तणी राठौड़ अगाड़ै ।।
मारै दळ मुगलांणका झाटां षग झाड़ै ।
धड़ लुटता दीसै धरा मसतक भमाड़ै ।।
पग पग नैजा पाडीया पग पग ढल पाड़ै ।
अबकै ओ मोटो परब महमंद लीलाड़ै ।।
गीदोली बांधी गळै जगमाल अनाड़ै ।
जकौ न देवै जीवतो कुण मार ले राड़ै ।। १७

मैहमंद मांडळ पातसा गुजरात धरांरा ।
एलै फौजां अवीया लषुं अठलारा ।।
दीदो घेरो ढोळीयां वीरम पुरारा ।
मैवै रावळ मालदे ओपमा अवतारा ।।

परतक पोर पचीस मो चोवीस सिरारा ।
कया विगडै उसका कहो कांम तकरारा ।।
केस वळे मुष केसरी कुण लेवणहारा ।
मिण लेवण वासष मुषां कर कोण पसारा ।।
गींदोली जगमाल घर नह देवणहारा ।
मैमंद गोरी घर गया कर कुच सवारा ।।
माल वधाया मोतीयां भर थाळ सोनारा ।। १८

दूहा

तीन लाष जुध मैंत दिन, घोरा जवन चलाय ।
जुध जीत्यो जगमालदे, लीधो माल बधाय ।। ६१
पग पग नेजा पाड़ीया, पग पग पाड़ी ढाल ।
बीबी बुजै षांनने जोध किता जगमाल ।। ६२

गींदोलीरी लड़ाईमें झगड़ा तीन तो रावळ मालदेजी आपरै लोकसुं एकला किया । झगड़ो चोथो भाटी घड़सी रावळजी वीरमदेजी कंवर जगमालजी सोलंषी माधोसिंघजी । पांचमो झगड़ो कंवर जगमालसिंघजी एकलां भूतांरे जोरसें कीइंयां । पांचां झगड़ामें तीन लाष आदमीं षेत पड़ीया । अठी राठोड़ांरा आदमीं लाष छा जांमासुँ आदमीं हजार पचीस षेत पड़ीया । माहा-राई चक्र जुध हुवो । जोईया राठोड़ां कनै आया जिणसुँ वरस पांच पैला ओ झगड़ो हुवो छो । हूं बादर ढाढी जोयारो ही । सो मै पूछनै सुणी जिसी हगीगतसुँ वणावट करी । मारी उकत प्रमांण रावळजी जगमालजी वा कंवरजी रिड़-मलजीरै कैणंसु जस वणाय नै सुणायो । ओ झगड़ो हुवां पछै वरस बीससूँ ओ ग्रन्थ वणायो । जोया वरस पांच अठं राठोड़ां कनै रंया । जितै हुं जोयां साथे हो सो वात सारीसुं वाकब हुवो और वीरमदेजी मधुरे आपसमें फूट पड़ी । झगड़ो हुयनै मारीजिया । धीरदेजी गोगादे की तांई जिती बात सारीसुं मारै आंषीयां आगे हुई । मै जोइयांरै नंगारै माथै हो । हेत बैर सारो निजरां देष्यो । पछै धीरदेजी काम आया । जां पछै तेजमाल जोयै मनै कैयो कै बादर सिरदार मारीजियां जिण तरै हुई थें देषी जिसी सारी हगीगत वरण करो । जरां जोइयां राठोड़ां कनै आया । धीरदेजी मारीजिया जिता दिनां मै जो जो वात

वा झगड़ो हुवो जिसो वरणो । तिणरी हाजरी जोयांनै साही वाण मैं तैजलरे आगै दीनी । राठोड़ांनै सेतरावै मंडोरकेतुमै चुंडजी देवराजजीनै हाजरी दीनी । पछै चुडैजी मंडोवर लीवी जिणरी हगीगत मनै कही । जिण रीत जस वणाय हाजरी दीवी । जा पछै नगर जाय जगमालजीनै वा कंवर रिडमलजीनै हाजरी दीनी । जद पैला झगड़ा हुवा जकांसुँ हुं वाकब हो । फेर कितीक हगीगत वाँ कही जिण मुजव पछे वणाय ग्रन्थरै आदमै वरण दीनी छै । हु तै झगड़ै मधु वीरमजीरैं वात हुई जकण ठौड़ मैं कैं दीनो छं नला सला नीवडैं सो जाणें । अलामें निजरां देखी वा कांना सुणो जिण मुजब सची-सची वरणन करी छे । सो मारे ग्रन्थमें भूल चूक हुवे तो कवी लोक सुधार लेसी ।

दूहा

उकत समापो इसरी, माता सुण महमाय ।
गाऊं हुं लुणीयाणीयां, सांचो सुजस वणाय ।। ६३

दलो मधू देपाळ जसू, जैत देवति जमाल ।
सुत सांतू लुणरावरा, पतसाहां उर साल ।। ६४

जकां दिनों ए जोइया, लावे दस दिस लूट ।
षगधारां ऊपर षिमै, तारां जिम ही तूट ।। ६५

कोड च्यार रोकड़ कींमक, असरपीयांरां ऊंट ।
सांप्रत मैमंदसाहरा, लायो मादव लूंट ।। ६६

दलो मधू देपाळ दे, सिंध गया सब जांण ।
तुटी मैमंदसु त दिन, छूटी धर साहि वाण ।। ६७

मैमंद धरि सारो समन, जद युं लिष्या जवाब ।
सिंधां लेसुं सात ही, द्रबरै बदलै दाब ।। ६८

सिंध धणी कद संकीया, मैमदरा सुण बोल ।
दो मोहरां पाछी दला, तिण दिन रहसी तोल ।। ६९

जोइयां बदळै जावसी, सहर समेती संध ।
दलै समझायो दुभल, मानि न सदू सबंध ।। ७०

तुटि सिंधसुं ईण तरै, जोइयां गहियो जोर ।
सिंध तणी धर सोवनी, मधु उडाया मोर ।। ७१

नीसांणी

जद झडपी सिंध जोइयां सांतू चढ सारी ।
रयत सारी सिंधरी दरबार पुकारी ।।
जंग मचायो जोइयां सुणीयो जग सारी ।
जिण पर जीवणषाननै तद कीध तयारी ।
मदु जीवण मारका भिडिया रिण भारी ।। १६

सार भलां भल साभीया भालां भळकाया ।
सिर तुटा फुटा सुघट रत षाल चलाया ।।
मादु बाहादर मारकै षळ रिण केषाया ।
घट पड़ीया घट घायलां रिण जंग रचाया ।।
जीवण मारै जैतका त्रमंक वजाया ।
लुटै सिंध जंग जीत कर इळ मीणीयर आया ।। २०

दूहा

मैंमंद नै जगमालरै, जबरं बैर ओ जांण ।
आया सरणै जोइयां, सिंध छोडे साहिबाण ।। ७२

मलीनाथ बंदु मुदै, वीरम करै सु बात ।
अंतहपुर वीरम त्रीया, मांगळीयाणी हात ।। ७३

नीसांणी

माल तणै घर बार मझ वीरम वरदाई ।
सारो वीरमरो सरब थित मंगळ थाई ।।
मिलिया वीरम जोया भेळप दरसाई ।
आया डोढी ऊपरै सामल साराई ।।

मांगलियाणीसुं दलो भलहो धूम भाई ।
सात पोंसाषां सातसो मोहरां गुंजराई ।।
बेस किसुंमां सुंवणै भूषा सिपवाई ।
आया सरणै आपरै ओडी उतराई ।।
दलै कयो इण देसमै बैसां मै बाई ।
वीरमरा मै सांपरत सह कोय सिपाई ।।
अरज करो थे आपसुं मो जाणै भाई ।
रावल सरणै राषसी बंको बरदाई ।। २१

दूहा

मांगलीयाणी मोढ मन, पायो जोयो पीर ।
दलों, मदु, देपालदे, सांतुं वीर सधीर ।। ७४

राणीजीरी अरज

मारो काको जैतमल, आप तणी की आस ।
मांनै तो जगमालरो, मुळ नहीं वैसास ।। ७५

दस हजार जोया दुझल, षरची घररी षाय ।
आडा आसी आपरै, अबषी विरीयां मांय ।। ७६

मांगलीयाणी महलरी, धीर म मानी बात ।
जरां ढबाया जोइया, सुष पायो सब साथ ।। ७७

मुजरो रावल मालसुं, वीरम दियो कराय ।
माल कैयो इण मुलकमैं, बसो षान थे आय ।। ७८

दलो रहै दरबारमै, जोयो आठूं जाम ।
जंगा मझ भिडीयां जवन, काढै मोटा कांम ।। ७९

तलवाडै थाणौ तठै, पमंग रहै सो पांच ।
माल धणी घर मायतै, आवण दिये न आंच ।। ८०

बंदडै बारा भूंपड़ा, कर षेती विणपार ।
वीर[म]देरै हुकुमसुं, हालै दसुं हजार ।। ८१

नीसांणी

सिंध दिली सुरतांणरी फोजां चढ़ आई ।
सांपो दलो जाइयो भड़ सातों भाई ।।
वीरम बोल्यो वीरवर बंको वरदाई ।
दूं माथो नह दूं दलो वर घर सिर जाई ।।
एण जबानी ऊपरां कमरां कसवाई ।
बीडंगा चढीयां वीरवर समसेर समाई ।।
केता दुसमण काट कर फोजाँ फिरवाई ।
मीर केइ रिण मारीया वीरम वरदाई ।।
आइ न जोयां ऊपरै तिल एक तवाई ।। २२

दूहा

वीरम मालै वीरवर, अरिअण दिया उठाय ।
सरब फोज पतसाहरी, पाछी गी पिछताय ।। ८२

वरस किताईक बीतिया, जोइया रहिया जाय ।
कीयो ठांण अस काळमी, बेटी भई वलाय ।। ८३

जोइया अस लाया जकी, जिणरो नाम जवाद ।
प्रगटी उणरा पेटरी, साकुर नाम समाद ।। ८४

तिका हुई ब्रस तीनमैं, बसुधा हुवा वषाण ।
मुंडा आगळ मालरै, किणीयक कीधी आण ।। ८५

मुंडा आगळ मालरै, सो आंणी वरहास ।
कैं पाबुरै कालमी कै, सुरज रैं सपतास ।। ८६

मलीनाथ मांगी मुंषां, साकुर मोल समाध ।
जकां न दीधी जोइयां उंणसुं वधी उपाध ।। ८७

दस हजार रिपीया देऊ, षैंग देऊ दस षोल ।
आध देऊ सिणली अषी, मदु उरी दे मोल ।। ८८

दले घणोही दाषीयो, मदु परी दे मोल ।
मदु न जांणै मोट मन, राजवीयांरा तोल ।। ८९

जका बात जगमालरै, कीधी कीणीयक कांन ।
आग वलंती ऊपरां, दियो मुराड़ो दान ।। ९०

ए वीरमरा आवगा, जौया रहे जरूर ।
आंपांनै न गिएौ अबे, मन छाया मगरूर ।। ९१

सोरठो

मारै लैसुं माल, साकुर पण लेसुं सरब ।
जोयां पर जगमाल, रचै चूक उण रातरो ।। ९२

दूहा

मालणनै नितरी मोहर, दलो दिरातो दान ।
चूक तणी चरचा चली, आई मालण कांन ।। ९३

जद उण मालण जाणीयो, दले दियो बहु दान ।
सीलूं उंणरो सीलणो, कथ आ घालूं कान ।। ९४

डिगती डिगती डोकरी, पूगी दलै पास ।
दला चूक तो पर दुझल, नास सके तो नास ।। ९५

तलवाडै थाणो तठै, सोवै बंदव सात ।
वीरा थां पर बाजसी, रुंक झड़ी अध रात ।। ९६

नीसांणी

कोट महेवा छंडीया सुध ले साही बांणा ।
दलै षान समाध चढ झांपी उपरांणा ।।
जांण लंका गढ उपरां हनुमान कुदांणा ।
सुता बंधव सातकुं जो सैल जगाणां ।। २३

दूहा

दलै कबीला देसनै, बहिर ज कीधा वेग ।
साथे बंदव सात ही, तिके उरसरी तेग ।। ६७

षेड मिलणनै आवीयो, वीरमसुं अधरात ।
चौड़े षोली चूकरी, वीरम आगळ बात ।। ६८

मदू न दीनी मोलमैं, उणसुं बधी उपाध ।
वीरमनै दीधी बीड़ंग, सागे जका समाध ।। ६६

वीरमरै उणहीज वषत, पमंग हुवा पलाण ।
दलै साथ चढ़ीयो दुझल, जोवण धर साहिवाण ।। १००

कुसले षेमे काढीया, जोइयांने धण जांण ।
जोइया पर वीरम जबर, रोकीया अवसाण ।। १०१

दलो षेड़ पूगो दुझल, हमैं न आवै हात ।
जद धिकीयो जगमालदे, भिडवा कज भारात ।। १०२

नीसांणी

राष्या सरणै राव बड़ जग साष जपंतै ।
मांझी बैदळ मारका मन भार भारमतै ।।
जगड़ षिजाया जोइयां जमराज विरतै ।
सांमा वीरम साळल्या असमान छिबंतै ।। २४

वरदायी वीरम कमध जुडीया जुध जंगा ।
सझ दोऊं दळ सांफला कर तेगां नंगा ।।
वीरम मुडे न वीरवर जावै नह जंगा ।
एकणजोया वास तै हुय सेन विरंगा ।
माल विछोडै मांझीयां कीधा मन चंगा ।। २५

जद धिकीयो जगमाल मन रोस न मावै ।
वीरम काज बिगाड़ियो, सो नांहि सुंहावै ।।

ओ अवषांणो याद कर किरणाळ कहावै ।
परत कहै कण पर दलो दोय तेग न मावै ।।
एकण घर दोय राजवी बकवाद बढावै ।
इण घर रहणो आपरो थिर नांही थावै ।। २६

वीरम मालो बिछड़े भड़ दोनु भाई ।
वीर भरत ज्यूं राम बिन बसीयो वन मांई ।।
जुध कर लीनो जोइयां इहां आंच न आई ।
साज मंडाया साकुरा वीरम वरदाई ।।
पण लीनो जल पीणरो माला घर मांई ।
नर चढ़ीयो पाटण नवी की जैंज न काई ।। २७

दूहा

माळे कियो मनावणो, मांगलीयांणी तेड़ ।
आं धर वीरम आपरी षित बापोती षेड़ ।। १०३

मालक यो सुष सातमों, पोह वीरम परताप ।
जोया पोहचावै ज दिनां आजे वेगा आप ।। १०४

नीसाणी

वीरम धीरप मालनै चढ षुर चलाया ।
साथ लिया दळ सांवठा थळवटी आया ।।
कमधज भूषा केहरी अत क्रोध अघाया ।
गहलोतां ऊपर गरज रचित रोस चढाया ।।
षडिया षैगां षेडसुं अण चित्या आया ।
भड असायच भोमीयां सज सुर सवाया ।।
पळ भष षाया पळचरां अछरां वर पाया ।
सूरा कट पड़ीया समर गुण जोगण गाया ।।

कूट असायच काढ़ीया षग बाड षीराया ।
कमंध बतीसु गांवसै सेत्रावा पाया ।
सेवै वीरम सधू बड थिर थांनक थाया ।। २८

दूहा

देवराज जैसिंघदे, विजै सहत वरवीर ।
सैत्रावै राषै सधर, कंवर तीर कंठीर ।। १०५

नीसांणी

जोइयां पोहचावण ज दिन उमंग मन आणी ।
देषण भाड़ंगनेर दिस पोह कीध पलांणी ।।
कुंडल वीरमदे कमंध परणे भठीयाणी ।
नर गोगादे नेमीयो जग साष जपांणी ।। २६

रचे हगांमा राग रंग रिण तुर रूड़ाया ।
दान हजारां दरब दै बध रीत सवाया ।।
इम जोईयां घर आवीया भूपत मन भाया ।
उरड़ मोतीयां थाळ भर वीरम वधवाया ।
कर उछब घर घर कितां गुण मंगळ गाया ।। ३०

दूहा

पांनां फूलांमैं प्रकट, दलो पुगावै देस ।
आयो वीरम आपरै, नाहर थाहर नेस ।। १०६

नीसांणी

वीरम कुरंगां वळवै कैकांण कुदावै ।
जका षटक जगमालरे मनमैं नहीं मावै ।।
वीरम भारत वंकडो आगमणी न आवै ।
दलै रीज [illegible] री संसार सरावै ।।

वीरमसुं जुध बाजकै कुण कुसळै जात्रै ।
दळ बळसु जगमालदे पोह बाज न पावै ।।
डेरा समीयांएौ दीया वीरम चेतावै ।
मेळ दिलीसु मेलीयो तुरकां तेडावै ।।
चेतवीयोड़ो सिंह थळ हात न ग्रावै ।
वीरम जिसड़ा वीरवर ठहके मठ गावै ।। ३१

नगर धणी लिष नीतसुं पठ ग्रषर पांनै ।
माल कहै बैमारका मुझ बात न मानै ।।
जोथ केरै जगमालदे छळ घातां छाने ।
मेळ दिलीसुं मेलीयो तेड़ै कां तुरकांनै ।।
वीरम तोसु वाजसी करसी धर कानै ।
काढ कबीला छांन है चढ़ वीरम छानै ।।
जाय कबीला जांगळु घोड़ा घोडाने ।
रेवंत मांण करावरी कर लीधी कानैं ।।
जांण सीचांणे झड़फीया हद ठाळ हुलानै ।। ३२

लीधा ग्रस फिर लाडणु वीरम वीरथे ।
ग्राय पोहता डांवरै सब मोयल सथे ।।
वीरमको डंड पकड़ीयो भल तरगस भथे ।
चाढ चिमंठी चौट दै ग्रसवार उलथे ।।
क्या निसांणी तीरदी मीरजादा कथे ।
जांण कबुतर छुट गया हुव लथो बथे ।। ३३

ऊंटां तीसां ऊपरै ग्रसरपीयां ग्रावै ।
सो मेली पतसाहके जोगणपुर जावै ।।
पैसकसी पतसाहरै पतसाह पुगावै ।
मिलीया वीरम मारगां ग्रस लीधां ग्रावै ।।
सब मोहरां पतसाहरी लुटे लीवरावै ।
सांमल हुय सारा सुभट मीया करमावै ।।

ओ धन वीरम आपरै घरमै नह मावै ।
वीरम औ भष बाघरो पोह केम पड़ावै ।। ३४

मंडोवरगा नारका मिल मुगलां मीयां ।
वासै चाढो बाहरां ढोलां पड़ ध्रीहां ।।
तीन सहंस चढ़ीया तरां अस लारै दीयां ।
जाण न पावै जीवंता असरपीयां लीयां ।। ३५

मोकळ कला भारभल पुत्रे जिण जाया ।
वीरम वंका वीरवर उदै घर ब्याया ।।
इण कारण पड़ीया अठे जंगलपुर आया ।
सांमत सारा सांषला अत वेढ अघाया ।। ३६

दूहा

उदाउ सहर आवीया, कुतमदीन पतसाह ।
षत्रवट षेत बहारजे, रजवट हंदा राह ।। १०७

नीसांणी

उदलकुं पतसाहजी ए हुकम अषंदा ।
कमधज आद अनादसै षूनी मुझ हंदा ।।
लीया षजाना साहदा तुझ नाहि जरंदा ।
उदा गुनैगार तु पतसाहां हंदा ।। ३७

साह तणां दल सामठा जंगलपुर आया ।
जुंजाउ पतसाहरा नीसाण वजाया ।।
सहर भिल्यो जद सतां मिल लूटी माया ।
वीरम षातर सांषला सिर कीध पराया ।।
बहादर उदै क्रोध कर रिणताल रचाया ।
लड पतसाहां सांषला भुजपाण दिषाया ।। ३८

आ काढे ओठी कोटसुं भीम जेहा भाई ।
सला दिराई सांषला जोइयां घर. जाई ।।
धींगे धींगे ढोलको साहि वाण सुणाई ।
दस हजार चढीया दुझल मिल छत्र ही भाई ।। ३९

चढ घोडां भड़ चालीया रज गैण ढकाया ।
मिलीया भारत जांगळु अध रतरा आया ।।
मीर केइ रिण मारीया मदु मन चाया ।
काट कटकां काढ़ीया षळ वैंग षपाया ।।
हुर अपछर हरष अत सूरां वर पाया ।
ग्रीधण साकण जोगणी पळ पूरा षाया ।।
वीरम छोडे जांगलु साहीयांण सिधाया ।
सज जुध जोया सांषला वीरम वचवाया ।।
जद पीछा चढ पातसा धर अपणी धाया ।
दलजी कोसां दोय तक सामे ले आया ।।
सजे उमंग साहिवाणमैं वीरम वधवाया ।
दीध वधाई राइकां जद गोगा जाया ।।
एक महीनो आठ दिन थठ गोठां थाया ।
वैरो लष रहवास कुंदलजी दरघाया ।।
बारा गाम ज बगसीया चित वीरम चाया ।
डांण वले उचका दिया आधा अपणाया ।
धाडै धन धुर माझीया मांझी षैमाया ।।
वीरमकुं देवण वळे लष वेरैं लाया ।। ४०

दूहा

लष वैरे पैदा सलष, सषरी आवै साष ।
साषांरा उपजै सदा, लेषे रिपीया लाष ।। १०८

पूजै हरीयल पीरकुं, जोइया भड सब साथ ।
वीरमरो देषे बदन, जीवै जोया जात ।। १०९

जलम्या तीन जवादरै, जके जोड सपतास ।
पमंगा सिरै पडाहीयो, हीरा लोही हुबास ।। ११०

हैंसु चढे पड़ाहीये, मादु चढै जवाद ।
हीरा ले धीरो चढ़ै, वीरम चढै समाध ।। १११

पैलै ठांण समाधरै, जलमीं सींचाणीह ।
वीरम गोगेने दीवी, जग सारै जाणीह ।। ११२

मालावत जगमालरै, उरमैं षठक अपार ।
जद केइ काढचा आदमीं, वीरम कनै विचार ।। ११३

ऐ आया वीरम कनै, रचै सला दिन रात ।
जोयांसु जुध जुडणरी, वीरम आगळ बात ।। ११४

सो षग वगां सूरमा, वीरमरा जुधवार ।
मुडवै नह पाछा मरद, जुडीयां रिण जोधार ।। ११५

पींड लीधां सुरापणो, विध इण वनो उजीर ।
जामै छल धणीयां जिसा, आगे इसा उजीर ।। ११६

वीर चढै नित वीरमा, धर लेवण चित धाव ।
घण मोडण जोयां घडा, वन रूठो वनराव ।। ११७

नीसांणी

दीठी वीरम हेक दिन पीती सर पांणी ।
वीरमरै सब सांढीयां निजरां गुजराणी ।।
वीरम चित विटाळिया ऊंधी मत आणी ।
सात हजारु सांढ़ीयां दिन हेक दगांणी ।।
आयर जिणरी ओठीयां कल कुकरांणी ।।
दस हजार चढीया दुभळ रज गैण ढकांणी ।
मारे वीरम मेदसां करसां तुरकांणी ।।

लष वैरै वीरम लियै सांढचां श्रापांणी ।
दोय कोसां पूगो दलो लारै लुणीयांणी ।।
मानों मानों मारकां सचो सलषाणी ।
मलिनाथ जगमालसु तिण किसड़ी तांणी ।।
श्राप तणी धर छोड़के श्रायो श्रापांणी ।
श्रांपां मारण उठीया लष कोट लगांणी ।। ४१

लष वेरैसुं थट लीयां चढ़ कमंध चलाया ।
मोढलरै गढ पाषती एकण दिन श्राया ।।
सरवर भरीया नीरसुं तरवर तट छाया ।
वीरम जेत विराजियां जाजम विछवाया ।।
मोटल श्रावै मिलणकुं जहुवार कैवाया ।
जिसकी बाटां जोवता श्रो भी चढ श्राया ।।
केइ पकवान कढावियां बाकर बटकाया ।
हरिया मन राजी हुई गीतां गवराया ।।
मोहले महले मंडली रंगराग रचाया ।
मुंगे श्रतर गुलाबका छिड़काव कराया ।।
पोळां तोरण बंधीया सामेल सझाया ।
ऊपर मोती वार वार भल थाळ भराया ।।
मोटल मिलीयां वीरमे श्राफु गळवाया ।
श्राफु हात उछाळके छळ चोट चलाया ।
मोटलकु भी मारीयो बेली बफनाया ।।
धन लुटे लीधी धरा गढकुं अपणाया ।।
हरीया झाले हतसुं रथ पर चढ़वाया ।
हरीरा जेवर सुतन वीरम संभलाया ।।
प्रोयत संग पठायके साहिवाण पुगाया ।
सो श्राया साहीवांणमै कूका कर लाया ।।
मदु श्रषै मारको श्रत वेढ श्रघाया ।
जंगमां चढ़वा जोइयां वीर रस छाया ।।

मोटलका धन मांगसां ले वैर सवाया ।
षाफर हिंदु काटकै करसां मन भाया ।।
पोडां धर धूज पड़ाहीवै दलजी चढ़ आया ।
बातांसुं बिलमायकै ज्यांनै जजमाया ।।
सीहै कहीया बचन सब नांही मन भाया ।
सुगन विचारो सुगनियां ए जाब कहाया ।।
पांच दिहाड़ां पाळीयां मत बाहिर जाया ।।
सुगन भला ले साथ सब भरजो पग भाया । ४२

दूहा

दले चिगायो देसनै, इसड़ो बुध आंबेज ।
भायांनै भोळावतां, जिणरै कासुं जेज ।। ११८

[सोरठो]

सरणायां साधार, दलै जिसो नह देषीयो ।
वीरमरा विनपार, जबर गुना जिण जारीया ।। ११९

नीसांणी

दल भेज प्रधांनकुं ए जाब अषंदे ।
वीरम तुम गुना करो हम जाय षिमंदे ।।
ढाबो ढाबो ठाकरां धर पाय धरंदे ।
मदु न मांनै माहरी कल काहे करंदे ।।
हेकण जगा न मावही दोय सेर बकंदे ।
हेकण म्यान न मावही दोय षाग धकंदे ।।
तुम हिंदु गुना करो मुष बोलो मंदे ।
दोय घर डाकण परहरै गाम धणीयां हंदे ।। ४३

आषै वीरम राठवड़ आगळ पलावै ।
डाकण किणनै परहरै जब भूषी थावै ।।
गुण भूलो सारा दलो परधांन मेलावै ।
आय प्रधांनसुं अषीयो वीरम वट षावै ।।

सूर उगै साइयांणमै नित ध्राह घलावै ।
जोयां हंदी जीवका षोसे ने षावै ।।
दले अरु देपालकुं नित ध्राह सुणावै ।
वीरम न्याय नह लही अन्याव सुहावै ।।
जोइया बडपण जाणनै कथ नीत कहावै ।
षोसैं फेरूं षाजरु सफरै राषावै ।। ४४

दूहा

जावे भागा जोइया, पाळे अगली प्रीत ।
धीर न वीरमदे धरै, निस दिन करै अनीत ।। १२०

दस हजार जोइया दुझल, लाष लोकरी लाठ ।
ज्यां जोयां ऊपर जबर, वीरम घाली बाट ।। १२१

दोनुं तरफांरों दलो, दुष भुगतै निस दीह ।
झलीया रहै न जोइया, लोपी वीरम लीह ।। १२२

निसांणी

दिन उगै पसरा दियै उठ वीरम आया ।
उचका डांणी उथपै अपणा बैठाया ।।
माणस पनरै मारीया जोइयाणी जाया ।
झरतां हतां जोइया कुकाऊ आया ।।
सो सारा साहीयांणमै थट भैळा थाया ।
अधी उच आपां दई बधी अपणाया ।।
आपां ऊभां आपणां माणस मरवाया ।
जमी गमावै जीवता जांनै किम जाया ।।
ज्यांरी जननी जनमता षारा नह षाया ।
दस हजार चढ़ीयां दुझल रज गेण ढकाया ।।
लष वैरे ऊपर लहर दरियाव हलाया ।।
दोय कोसां पुंगो दलो वातां विलमाया ।

सो पाछा साहियाणमै ओठा ले आया ।।
दाढे नित अवगुण दलो सलषांण सवाया । ४५

युं देपाले अषियो सुण दला लुणीयांणी ।।
वास चोवीस वसावीया वक भूठी वाणी ।
तो मारे धर लेवसी वीरम सलषांणी ।।
तडछै जासी जोइयां आयो आपांणी । ४६

दूहा

मुदै जवाइ मारीयो, लीधो सारो डांण ।
मसतक टोपी मेलनै, सुंप परी साहीयांण ।। १२३

दलो कहै देपालदे, मांभी बंस मरोड़ ।
भाया गुण भूलो मती, ओ वीरम राठौड़ ।। १२४

दुसह वचन कहीया दलै, जोइयांनै जजमाय ।
तिण समीयै पुगल तणो, भाटी बूकण आय ।। १२५

नीसांणी

बुकणरै दोय बेटीयां गत एक नीहालै ।
नाम बडी कसमीरदे परणो देपालै ।।
रांनल कंवरी राजवण ग्रभ अछरां गालै ।
सो मांगी देवराज युं कर जोड़ हूतालै ।।
रांनल मुभकुं राजवण भाभी परणालै ।
भावज गुण भूलां नहीं ध्रंम षोड़ विचालै ।।
कहीयो जद कसमीर दे चढ़ क्रोध अचालै ।
हुँ परणांसु हिंदवां तुरकां हरटालै ।।
सो कुण हिंदु हम सुणां जिसकुं परणालै ।
परणांसुं सगपण करै वीरम विगतालै ।।
जद पाछो कहीयो जसु आगम अषतालै ।

मानै भाभी माहरो वायक सिर मालै ।।
बैठी रोसै बापनै कर मुंडे कालै ।। ४७

दूहा

झडपे बुकण लेवसी, दोलत दामो दाम ।
आसी वा भी आपनै, तो सिर भुंड तमाम ।। १२६

वीरमनै वर माळतां, मिटी अकल कसमीर ।
बुकणरो घर बूडसी, नदी बहंते नीर ।। १२७

गोडेमै जांरै गया, धारा जकै धणीह ।
वेहीज मारण उठीया, तेवर चूक तणीह ।। १२८

सीहांनै सलषांणीयां, त्यांरी एक तरेह ।
आ दुअ पतीओ धरो, कुण विसवास करेह ।। १२९

तिरिया हठ झाले तिको, मैलै नांहि परत ।
गम विन वाजै बेगमां, ज्यांरो नाम जगत ।। १३०

मेले जादम मोदसुं, बीरमनै नालेर ।
आप परणवा आवजो, विचै म करजो वेर ।। १३१

सार छतीसुं संकै, मसतक बांध्यो मोड़ ।
वीरमदे चढीयो बिडंग, रचे चूक राठोड़ ।। १३२

नीसांणी

बुकणदे घर व्यावदां रंग राग रचांणा ।
चारण भाटां चोहटां गरटा दिवरांणा ।।
मन कुंता बहु मालरा लेषां लिवरांणा ।
बेहुं मुदाइ वादसी बे त्याग करांणा ।।
सोनारां घर सांपरत संचगर दिवरांणा ।
कंठीयां कड़ा मुंदड़ा घण घाट घडांणा ।। ४८

कोड करै कसमीरदे भर मोतिन थाळा ।
वीरम संग बधावसां मेले वरमाळा ।।
जादुम चूक न जाणीयो विय्याह विचाळा ।
कपटरैं कसमीरदे पयसु रच चाळा ।। ४९

सावैसुं इक दिन अवल अध रतरा आया ।
भाटी षागा भाजीया रिण चूक रचाया ।।
व्याव न किधो वीरमै लालच मन लाया ।
बुकण बेटां बेलीयां षागा षलकाया ।। ५०

चारण चारण कुकतां आरण जगांणा ।
बामण भुरी वासता सिर आप दिरांणा ।।
भागा मुंडा भाठदां षुल दांत षिराणा ।
डोफा भागा डुमड़ा भाटक भेरांणा ।।
कटिया हात कमीणदा दत नेग दिरांणां ।
गहणा गायणीयां तणां लुटे लिवराणां ।।
केतां पावज कटी हातांँ हेरांणा ।
जावै गुणीयण जीव ले कर षांचा तांणा ।।
ठांवां पंथ विच एकठां मिल ठाक घतांणा ।
फिर कोइ इसड़ा ज्यागमै मत पाव दिरांणा ।।
सलषांणी जिसड़ा सुपह वनड़ा वरवांणा ।
बुकणका घर षोदकै धन सोध लिरांणा ।।
बुकण सहतां बेलीयां इक षाड़ दिरांणा ।
भटीयांणीदै भागका क्या चक्र फिरांणा ।।
कह भाटी कसमीरकुं क्या फाग षिलांणा ।। ५१

दूहा

सत्रवां षागां साभीया, घणो उतारे घांणा ।

व्याव न कीनो वीरमैं, अण भग रच आरांणा ।। १३२

आयो पुगलसुं अठै, बादै षडीयां ऊंट ।
कसीद कैयो कसमीरदे, लेगा धन सब लूट ।। १३४

निसांणी

देपालक ने कसमीरदे बड़ एक तरोई ।
वीरम साहंस तोलीया सलषांणी सोई ।।
छुट पड़ी किरवांणीयां विमांह न होई ।
अवलज सुजो आषीयो सो सची होई ।।
बुकणका घर बोटिया साला सातुई ।
बोतल हातल बटीयां विमाह न होई ।। ५२

आ सुण जोइया आवीया दलेषां आगै ।
देपाळो मुष दाषबे लाणत लष लागै ।।
मुझ गनायत मारीया जुध छ्टी जागै ।
वीरमसुं जुध वाजसां अवगुण लष लागै ।।
ऐ बल धारे उठीया षळ मारण षागै ।
आज वालां धर आपणी सलषांणी भागै ।। ५३

लष वेरै पैदा सलष वीरम सुष बोळे ।
हैंवर दोय हजारीयां सोहडां थट दोळै ।।
सहंस दसुं ही सांडीया टोळायत टोलै ।
लाष पचासां लूटीया रोकड़ धन रोळै ।।
मोटल सिरषा मारीया गढकी धग बोलै ।
जोइयांसुं जुध जुटबा चित चेत न चौळै ।।
मावै नह छाती मधु इणसुं रह ओलै ।
झलीया रहै न जोइया तैगां बळ तोलै ।।
दोउं दिसरा दुष दलो भुगतै मन भोळै ।
दिल फाटा दोउ ए दिसा घातां मन घोळै ।।

दिन उगै भायां दलो परचाय पंचोळै ।

आयो बीरम आंपणो षित छोड़र षोलै ।
लज सांकळ तोड़ै लिया मदपुर मचोळै ।। ५४

दूहा

कठा लगा कथ कुड़, दाठै भड़ भायां दलो ।
धमतां धमतां धूड़, सोनो ही होवै सदा ।। १३५

नीसांणी

दलैषान विचार कर परधान पठाया ।
लष वरै वीरम कनै ए जाब कैवाया ।।
जगड़ तणी षग झाट सैभंग वीरम आया ।
आयाकुं आदर दिया हम लीध वधाया ।।
लष वेरो रहवासकुं दळजी दरवाया ।
धरती चोबी गांमड़ा सब राज समाया ।।
उस मांसुं वीरम तनै आधा बगसाया ।
डांण वलै उचका दिया आदा अपणाया ।।
चोबी गाम चबुतरा किह काज बैठाया ।
षोसे इकसठ षाजरु सफरै राषाया ।।
जोइया पग मांडे जिती धरनीही रहाया ।
हाती रहै न जुटिया केहर उकराया ।।
मीलीयां चिडीयां महलै अहि जाणक आया ।
जांणक डोकर षोलडै विच बाघ वसाया ।।
क्या तेरा अवगुण किया हम लीध नीभाया ।
षायरहि दुगुण कियां सब जाय भुलाया ।। ५५

हमहो भाइ सात हैं भुज आ भठ भाई ।
मधु सीरीषा मारका थोड़ा जग मांहि ।।
साकुर भड़भी सांतरा दस सहंसा सोई ।
तो भी वीरमतै वड इसड़ी हम मांई ।। ५६

सब बेठां सीहांणमैं जोइये कुल जाया ।
सठ लेवण सीहांणकुं हैरा लगवाया ।।
जावो जावो कह जोइयां एथी मत आया ।
पटकी जोयां पागड़ी सिर टोपी छाया ।।
जोरु छोरु छोड़ कर वनवास वसाया ।
देषे सब निजरां दलो समझै मन माया ।।
दिन कितरा टाळै दलो अंत विरम आया ।
मेतो मांरा आज लग स वचन निभाया ।।
कांमेती कह कर इसी आतुर उठ आया ।
मांगलीयांणी मोट मन भीतर बुलवाया ।।
भोजायां भाया कंनै मुजरा मैलाया ।
दलै अरु देपाळकुं ऐ जाब कैवाया ।।
पालो रुंष न काटवै जो छांह अछांह्या ।
मोरो पीहर थां घरे थे सांतु भाया ।।
मे घर छाडे मांहरा घर थारै आया ।। ५७

दूहा

कथन दलाहुं ता कया, पाछे आय प्रधान ।
बाइ समझायो बोहत, कमंद न दीनो कान ।। १३६

नीसाणी

मांगलीयांणी सांषली परचावैं पीवै ।
जोइया तो जळ वारता तो दीठां जीवै ।।
धर आधी दी धरपती क्युं कांकल कीवै ।
हक राठोहड हलणा थट चंगा थीवै ।।
सुष छोड़े दुष सापरत अपजस किम लीवै ।। ५८

वीरम चढ़ीया वीरवर कीधा घमसांणा ।

तुरगां वोम धड़क धर मेले डमरांणा ।।

देष दरगह पीरदी आया सलषांणा ।
वीरम न्याव नह लही अनीयाव सुहाणा ।।
इम मुंजावर बोलीया चढीया मत आंणा ।
पतसाही पाळा चले क्या रावल रांणा ।।
है वे हिंदु समझ मन फरहास पीरांणा ।। ५९

दरषत हरीयल पीरदां विच दरगह सोवै ।
जोइया देस वीदेसमै जिण सांमो जोवै ।।
पीर प्रचाइळ प्रगट दुष दालद षौवै ।
राम रहिम जु एक हैं कबु दोय न होवै ।।
वीर फरासा बाढ़ बाढ़ बषाती ढोवै ।
के मुलां तागा करै हुब हाका होवै ।। ६०

बाढ फरासां वीरमै घड़ ढोल मंडाया ।
गुणपत ढोली गेरका चढ कोट बजाया ।।
बारै कोसां वैंब देवो ढोल सुणाया ।
सो सुणीया सीहांणमै डर इचरज आया ।।
ऐसा जोगी उमदा एथी कुण लाया ।
सिंध दिली सुलतान दळ वीरम पर आया ।।
दसुं सहंसां हुता दलो चित सेस चढ़ाया ।
जांवा वीरम जीवतां तो जांणे आया ।।
इम दलो गल उचरै भल सजो भाया ।
बगतर कुंठा वीड़तां मुंजावर आया ।। ६१

दूहा

दरगासुं मुंजावरां, कयो दलानै आय ।
वो फरहास ज पीररो, वीरम लीयो वडाय ।। १३७

फरहासांरा फाचरा, सबदां घुरै स तोल ।
वैरै लष वजाड़ीया ध्रींगै ध्रींगै ढोल ।। १३८

लष वेरोरो वाणीयो, उरे पण मिलियो आय ।
वागा ढोलांरी विगत, सारी कही सुणाय ।। १३९

मदु सुण पग मांडीया, हणीया छाती हात ।
जद सजीया भड जोया, सहंस दसुं इक साथ ।। १४०

सझतां भड़ मदु कयो, करै मुंजावर कूंक ।
पीणी देष र पीवता, जको कटायो रूंष ।। १४१

दे टोपी हाते दला, बणां फकीरी वेस ।
मांगे षासां मुलकमें, नहँ आसां इण देस ।। १४२

नीसांणी

पीरां करवा पट कीया, आय आगळ दलै ।
जीण करै मदु जवन मुंछां बळ घलै ।।
हीरा लै षंध थाळै अस आय अललै ।
कर षुररो लगांम दे जर पाषर घलै ।।
आ जोका जोया इसा धरती उथलै ।
दलो हकालै दाटवै भड़ ओगण भूलै ।।
वीरमसुं जुध बाजबा चित चेत न चलै ।। ६२

मालै अरु जगमाल मिल क्या गोठ रचाई ।
जांरो सरणो ताकीयो धणिया पधराई ।।
वे हीज मारण ऊठीया सो हीज सीहाई ।
मांगळीयांणी मोटको गुण कीनो बाई ।।
आंपां कुसळे काढीया वीरम वरदाई ।
सिंध दिली दोऊं फोज सज आंपा पर आई ।।
वीरम बदलै आपणैं समसेर चलाई ।
आंपा धरती आंपणी पाछी जद पाई ।।
मदु वै दिन मारकां भूलो मत भाई ।। ६३

कुछ वीरमकुं नह कैया उचभी अपणाई ।
बारै गांव ज बगसीया भेले हुय भाई ।।
सात हजारां सांढीया दिन हेकण दगाई ।
मोटल सिरषा मारीया जीण सकड जवाई ।।
षाधा षोसे षाजरु संक लोप सवाई ।
आंपां ऊभां आपणी घर लाज गमाई ।।
मधु अषै मारको संच.................. ।। ६४

गुना अनेकां जारीया दलै लुणीयाणी ।
कर दरसण फरहासको पीता में पाणी ।।
सो फरहास कटावीया अस मान गिरांणी ।
षाफर माल कुरांणकुं लष वेर लगांणी ।।
दुभ्रल मदु देपालदे भाषै आ वांणी ।
आज परा जो आलसां जोइया मन जांणी ।।
अपणा बांधर आंपणीके देदां पाणी ।
जावे घरसु जोइया कै खुटै सलषांणी ।। ६५

आज बराछ करी समै अणचिंत्या जासां ।
जाण हली घण कंठली वरसाल मचासां ।।
हरषत मन सुरा हुवा बधते गांवासां ।
जुडसां वीरम सांजरां बटका उडवासां ।। ६६

दूहा

कहीया भड भायां दलै, वडपण कथन विचार ।
वीरमसुं जासो विडण, है जीतां ही हार ।। १४३

बाई की मन जांणसी, भाई आया भाय ।
लष बेरैं जाजो मती, घेरो जायर गाय ।। १४४

नीसांणी

साकुर अर पांडवनै षुररां करवाया ।
बाप बाप विरदाव दे मुष बाग चढ़ाया ।।
मदु सेर जवाद पर पाषर पटकाया ।
साषत कर सब सोवनी अब बाहिर लाया ।।
बगतर कुंठा बीडीया सिर टोप सुहाया ।
सार छतीसुं साझ सब इम मदु आया ।।
पांडव लाय जवाद पर असवार कराया ।
जैतलसु देपालदे सझ सुभट सुहाया ।।
मिलीया अव सारा मरद अस पीठां आया । ६७

चढीया सामत सुरमा मुछां बल घलै ।।
तरगस भीडै तेजमै हाथां षग झलै ।
धनमै घेरा धांडमै कर षवरां किलै ।।
चढतां हैसु धीरनै घर राष्या दलै ।। ६८

दूहा

जेज न कीधी जोइयां, घेरी जायर गाय ।
सुण बीरम ग्वालां सबद, लागी उरमै लाय ।। १४५

दस हजार जोया दुझल, कठठ साररा कोट ।
ढाळां जंगा चालणा, ठाला करै न ठोट ।। १४६

नीसांणी

आप गवालां आषीयो गायां घेरांणी ।
अण भंग कोपे ऊठीयो षष चाढण पांणी ।।
ढोल वधाई बाजीया वीरां रसवांणी ।
आया सज भड एकठा नह जेज करांणी ।। ६९

मांगलीयांणी सांषली धण उभी पलै ।
रहजा नार वरजीयो सुण मेरी गलै ।।
आज पड पण आपरै धन लीधो दलै ।
जो फरहासन बाडतो कलकी थुहलै ।। ७०

फीर वीरमकुं आषीयो कही मांगलीयाणी ।
जे तुं ठाकर सलषीयांण ए भी लुणीयांणी ।।
दलो अवगुण दाटवै गुण आदु जांणी ।
दुष पायो धायो दलो तद इतरी तांणी ।।
कहीयो कमधज रीस कर रहजा अब रांणी ।
पण नेम जब दीयो पीवण मुष पांणी ।।
रावत सारा रीसमै जम रूठा जांणी ।
धन नह जासी घाडमै ऊभां सलषांणी ।। ७१

उस वीरम उठ कर होकार दराई ।
साज मंडाया साकुरां कमरां बंदवाई ।।
कमधज ससतर भीड कर समसेर संभाई ।
सांणीकुं कहीयो सरस है बरस भवाई ।।
आ फुले उमंदा अंगा अडपाई ।
बोह तब थीटे बेलीयां मनवार कराई ।।
विंध विध कर मन वेठीयो षिम षुन किताई ।
भारतमै रहजो भला कथ रषां काई ।।
मांगलीयाणी पालबा इतरै फिर आई ।
गुना अनेकां जारीया दलै सिपवाई ।।
एक गुनो दिन आजरो बगसो वरदाई ।
मुझ तणी कंथ मानकै ठहरो ठुकराई ।।
ए सब गायां आपरी बिगड़ै नह काई ।
दलो सवारे देवसी लष वेरै लाई ।।
हुं पण कागद मोकलुं है महारो भाई ।। ७२

मांगलीयांणी माहरी गायां भिड़कावै ।
लषवैरैरी सींवमै कुसलै फिर जावै ।।
जोइया मनमै जाणसी वीरम संक षावै ।
हु आलस बैठसुं हमै थित इतरा थावै ।।
फणधर छांडै फणदसुं न भार संभावै ।
अरक पिछम दिस उगवै विधि वेद विलावै ।।
विग घटै वीहंगेसको सिव ध्यान भुलावै ।
गोरष भूलै ग्यांनकुं जत लिछमण जावै ।।
सत छाडै सीता सती हणमंत घबरावै ।
धणीयां धाडेता तणीकी ,षबरां पावै ।।
हुं सुंक कर बेठु घरे जग उलटो जावै ।। ७३

ऐ राठोहड आजरा उठीया अवतारी ।
हड हड नारद हसीयो भैरव ब्रद भारी ।।
मांगलीयाणी स्यामनै पालै घण प्यारी ।
घुड बलोइण ढोलरै लष धो बालारी ।।
उंधी किण दीधी अकल विणतै इधकारी ।
बाढण बात फरहासकी मुष केण उचारी ।।
मेटण राज समांहरी देवण दुष भारी ।
रांणी पांणी रालीयो आंषां अणपारी ।।
वरजे चढतां वीरमो ग्रहचाल पलारी ।
रह रह ठाकुर समझ मन सुणीये गल मारी ।।
जो फरहास न वाढाता टल जाती सारी ।
सांणी करी समांधकुं तद वैग तयारी ।।
पाव रकेबां पर ठकै कीधी असवारी ।। ७४

दोय सहंस चढीया दुझल षमंगां पषराळा ।
वीरम समांध कुदाडवै झल साबल झाळा ।।
आज न छोडां एक ही विच षेत वडाळा ।

त्राये त्राये आवीया मोयल मतवाळा ।।
मांगलीयां अरु सांषला सज साथे साळा ।। ७५

माणक हरीयो दोलीयो बड थाट बरवांणी ।
त्रीहूं हजूरी तेण दिन आया अगवांणी ।।
लेवण झांक लंगुर ज्युं मुसकण केकांणी ।
ठहरो ठहरो ठाकरां आयो सलषांणी ।।
मधु ऊपर वीरमैं झोकी केवांणी ।। ७६

दस सहंसु चढीया दुभल धारे मनं धंकी ।
दल षागां दाठ दे षुरे भष पंषी ।।
अछरां आय उतावली हु ऐवर तकी ।
जोगण चोसठ षेतमै बोले बकबकी ।। ७७

सामंत तेग संभायके इम भारथ मंडे ।
वीत न छोडां वीरमा पड पाधर पीडे ।।
सीह सपेखै कुंजरां बन घेर वीहंडे ।
मदु झोकी कालमो कर पोरस जडे ।।
देव विनायक क्या करै ऊलळीये गडै ।। ७८

वर बासुरां सांवतां अपछर उतरांणी ।
गीधण आमष गीलणकुं पांषां बजवाणी ।।
षेचर भूचर षलकीया केइ कोड करांणी ।
जुध सुण चोसठ जोगणी उछव मन आंणी ।।
जोइयो षडै जवादकुं पष चाढण पांणी ।
झांफी सेर जवादकुं अंग आतस आंणी ।।
सितर भालै साजीयां मदु लुणीयांणी ।। ७९

बाढ गणा सिर बैरिया रिण गाढा रहणां ।
साकुर एण जवादकुं केता रंग कणा ।।
मुछा रंग थारां मदु रज वठदा गहणा ।

बोहत तब कारँ है बेलीयां रिण गाढा रहणा ।।
जाता उण मारग बुहा आता उण बैहणा ।। ८०

वीरम बाग संभायकै तोषार झपटी ।
छुप मियानां नीसरी षुरसांण चोहटी ।।
पैसट जोइया पाडीया जंग वीरम जुटी ।
वीरम मदु वाजीया षल षैंगां षुटी ।। ८१

वीरम मदु बाजीया रिण मांझ समथै ।
आगल रहसी आंपणी इल भारत इथै ।।
षाग भड फड षेलिया रिण फाग रमंथै ।
लल भष साबल लेवतां हुय लथो बथै ।।
साजै हात कटारीयां नर वाहै षथै ।। ८२

वीरम मदु बकवकै घण घावां घाया ।
अस षड जोयां ऊपरै डाचक डकराया ।।
जद मिल सारा जोइया मदुपै आया ।
अस वीरमकी उचकै घण दल घबराया ।।
घट कुसलै जावा घरै लष धाड़ो लाया ।। ८३

दूहा

इत जवाद समाद उत, दाषै दोउ दल देष ।
वीरम मदु थां बिना, अस भड बचै न एक ।। १४७

नीसांणी

बलबंत मदु बोलीया विध चुक बताया ।
ढम ढम बाजी ढोलकी षोगीर बजाया ।।
ताली तास कतोवरा सफरा षडकाया ।
धिरी धिरी धीरपै भाषै मुष भाया ।।
जोवै चोसठ जोगणी अछुरां रथ आया ।
बापा बापा बोल दे वीरम विरदाया ।।

सुसती करण समाधकुं बाजा बजवाया ।
ऊँची ऊँची ऊछलै तंग पाषै आया ।।
नाचण लागी नाच पर रंभ नाच रचाया ।
ताजण मटकी तोप सालषतांन लगाया ।।
वीरम बदली बीडंग लष जद चावक बाया ।
भांण तमासो भालबा रथ ढाब रषाया ।।
धीब पडै तरवारीयां के भागै काया ।।
भाला भलकै सीस पर सिर ग्रीधां छाया ।
वीरम हांकै वीडंककुं पलटै नह पाया ।।
जद वीरम मन जाणीयां अब मरणा आया ।
जद वीरमरै जोइया चहुं फेर फिराया ।। ८४

अला अला उचारकै चढ षैंगा चला ।
जुडिया तेंगा जोइया हुय वीरां हला ।।
वीरम मलां वीटीया बाजी गलबला ।
भड वीरम मदु भिडे जाएै जम टीला ।।
वीरमदे जोयां विचै भासै रिण भला ।
सिंह अचानक सांकडै घड़ कुंजर घला ।।
केहर जाणक कोप कर उठीया गीर टीला ।
मधु वीरमकुं कहा सुण सांची सला ।।
पला विछाता पालता दिन कढता दला ।
सो दला अलगा रहा करता रिवमला ।।
मिलीया दलमै दांनमै मांझी कर सला ।
सामा वीरम सारका बण बैठा बला ।।
कहां कवीला कुटम घर कहां भाई भला ।
बादुर ढाढी बोलीया नीसांणी गला ।।

नलो सला नीवगे सी जाणी अला ।। ८५

मदु अषै वीरमा धीरज नह धारी ।
लाष गुना मै जारीया जोय जरणा मारी ।।
बात कही मुष वीरमै सुण मदु मारी ।
थे नह गुना जारीया जरणा दलारी ।।
दला बिनां तुं जारतो थिर जरणा थारी ।
मदु आषै वीरमा क्या मरजी थारी ।।
वीरम कहीया बादमै आषर उपगारी ।
वांण बंदूक कबांणकी तद चोट पलारी ।।
भड सारा मांसु भिडो तोले तरवारी ।
जद मदु हुं जांणसु थिर जरणा थारी ।।
कहीयो मदु कटककुं सुंणजो भड सारी ।
वीरमसुं जुध जुटजो तो ले तरवारी ।।
वाँण बंदुक कबांणकुं दुरी कर डारी ।। ८६

दूहा

दाषे मुष देपालदे, सांभल मदु सोय ।
वीरमसुं जुध बाजबा, कदम न धरसी कोय ।। १४८

इतरी बातां आगमैं, मानव कुण जग मांय ।
वकारै कुण वीरमो, सांमी षाग संभाय ।। १४९

नीसांणी

लोप भवर गिर लंकरो कुण जावै बारै ।
आभ भुजां कुण ओढमै कुण सायर जारै ।।
मिणधर दे मुष अंगुली मिण कवण लिवारै ।
सिंह पटा झर सांप हो कुंण मैंड पधारै ।।
तेरु कुण सायर तिरै जमकुं कुण मारै ।
बाद करै रिण वीरमो नर कौण वकारै ।।

मदु तो बिन मारको कुंण आसंग धारै ।
ऐ राठोहड आजरा पोरस विन पारै ।।
दसा हजारां दोठसी हय दोय हजारै ।
मत धडको दाषै मदु है साहिब सारै ।।
राठोड़ां रिण रीठसा दे धीठ अकारै ।
जल चाढां कुल जोइयाँ कथ रषां लारै ।।
वाथ घलां असमांणसु लज हात अलारै ।। ८७

सजै दोऊ दल सांमटा विच घूमर वगी ।
राठोडां अरु जोइयां असमाण सिलगी ।।
बाहे षग देपालदे फिर पीछी दगी ।
जांणक नाचत अपछरा घुमावण लगी ।।
जैतल वाही जोर कर विच मुठां लगी ।
पोड चहुं जब कपडा पग होय अपगी ।।
पषर रांणी चीर जिम घोसांटण लगी ।। ८८

उतरीया वीरम कमंध समाध कटाई ।
भाई भाई भाषीयो पुर ढोल बधाई ।।
ढाल लियां हन बाहमै समसेर संभाई ।
पैंसठ अस चढ पाडीया वीरम वरदाई ।।
वीरम पाला षेत विच ऊभा अड़ पाई ।। ८९

राठोडां अरु जोइयां भेरां घमकारा ।
बाजी हांक बहादरां हुय बर होकारा ।।
भल भल वाड भलकीया षुरसाण दुधारा ।
झबरक सेला आग झड उर फ़ट अफारा ।।
पडीया असफड पाषती धड न्यारा न्यारा ।
जाणक आप चोगानमे ढलीया विणजारा ।।
पालै पनरै पाडीया सज वीरम सारा ।
उण पुल मीयल रिण भिडा पग झले षारा ।।

मांगलीया अरु सांषला भिडिया जुध भारा ।
सोलंषी चायल सरब बांनै तब रारा ।।
नायक विदर नगारची कर समर करारा ।
वीरमरा जुध बीचमै तुटा जिम तारा ।। ६०

बीरम बाही बीजळा मदु अर मथै ।
सामी मदु साजदी षग झाटक षथै ।।
फेर ठंठारा फाचरा घण जाण घडथै ।
जांण रमै रिणु गेरीया डंडे हुड हथै ।। ६१

मदु वीरम माचीया सझ आंमा सांमा ।
हाथी जाणक हुचकै मदुपुर अमांमा ।।
साकल छुटासा परत नर नाहर नामा ।
मदु वीरम मारका हदपुरै हांमा ।।
परठै पावस मेरसा उण वेर अमांमा ।
रीमा षंड वीहंड कर किदा हद कांमा ।।
मोटा दुसमण मारीया नर मदु नांमा ।। ६२

मदु ऊपर माधडै वल मुछा वाळी ।
एकण घाव उतारीया त्रजडां त्रह ताळी ।।
मदु पोढे मारको रिण षेत बिचाळी ।
जेतल जसु मोठीया भड कुलवट भाळी ।।
अण भंग लूण उजालीयो चाल कल चाळी ।
परधांमैरी पागनै इण विध उजवाळी ।। ६३

वीरम अंग विहंडीया मुंछां बल घलै ।
देष इतै देपाल दिस कर क्रोध अचलै ।।
भीलपनै कु भाषीयो झट तरगस झलै ।
पाव हात सब कट पडे किधा चष ललै ।।

धानष सामा पाव सर दाता झलै ।

छुटा तीर अंचितका धड़ फुटा ढलै ।।
चुका वैंग पिलांणतैं उलटा कर चलै ।। ६४

धनंष चढाया पुनीयै षुरसांण चौहटी ।
तन फोडे तरगस गया ज्यूं बीज झपटी ।।
ढह पड़ीयो देपालदे धरलणी चोटी ।
परगट कीधी पनीये रजपूतां रोटी ।। ६५

राठोडां अरु जोइयां कलमा चकरारी ।
वीरम मदु पोढीया सझ षाग दुधारी ।।
च्यार सहस पड सुरमा भुज चिरदां भारी ।
साषां सारी सोह चढ साषो धर सारी ।। ६६

दूहा

अंग वीरमरैं ओपीया, घाव एक सो दोय ।
अंग मदुरै उपरा, गिणती चढै न कोय ।। १४६

नीसांणी

जोइया दोड़ा देसरा जुटा सो वारे ।
ऐ मालक नवकोटदा लाषां दळ लारैं ।।
वीरमसुं जुध बाजनैं मांनव कुण मारै ।
वीरम दाहक आयगा सो साहिब सारैं ।। ६७

दूहा

विड रहीया रिण षेत बिच, सहंस दोय समराथ ।
रहे उजागर चूंड रज, नव कोटी ....।। १४७

नीसांणी

पडीया वीरम पाषती संग इतरा सुरा ।
सोलंषी माधो सुभट पडषेत सनुंरां ::

पड़ीयो चायल सैंसमल षळ कर भष भूरा ।
भीम पडै रिण सांषलो तन कर चक चूरा ।। ९८

दोळो पड़ मोयल दुभ्रळ षत्रवट वट षाटे ।
हजूरी वनी पड़े दोयण दळ दाटे ।।
पडीयो आहेड़ी पनो भड़ीयो षग भाटे ।
सांएी पड़ पांएक सुभट कीर मर तन काटे ।। ९९

मांगलीयो मंगलौ पडै जग सारौ जाएौ ।
सहंस दोय पड सूरमा पाषर हय पांएौ ।।
वीरम संग वीठीया विहद तद ऊंची ताएौ ।
अछरां वर पोहता इता श्रग बैठ विमांएौ ।। १००

दूहा

सोडा हाड़ा सिसोदा, पड़भाळा अरु गोड़ ।
चावड़ा तुर चवांएा पड़, रिण पड़ीया राठोड़ १४८

नीसांणी

जसु रिएामें जूभीयो कर जोस हमला ।
मदु जैत रिण रहे भड तेगा भला ।।
घट फूटा देपालदा घुड़ले वर घला ।
दोय सहंस जोया दुभल हुरां संग हला ।।
चढ़ीया डोली च्यारसै गिरणे गलबला ।
सब आया साही बांणमै कर अला अला ।। १०१

दलो कहै मै वरजीया मानी नह काई ।
वीरमसुं जुध बाजनै सब सेन कटाई ।।
मारे वीरम रिण मुवा भड़ च्यारूं भाई ।
धूड़ बलोइण धाड़नै जो कीधी सो पाई ।।

दलै बिगड़ी देखने की जेज न काई ।
तेजल संग दे मेलीया चुंडो अरु बाई ।।
दोय दीहाड़ा पंथ बुही थळवटी आई ।
काका लाउ घर आलरै तेजल पोहचाई ।। १०२

टाबर चारै टोगड़ा जां साथे जावैं ।
वाला बांदे वाछड़ा तक घोड़ा लावे ।।
बाळक तोही न बीसरै घर रीत जणावै ।
बारट आलो बाछड़ा जोवण कज जावै ।। १०३

दूहा

सूतो चूंडो नींद सुष, सिर अहि कीधो छत्र ।
जद आले मन जाणीयौ, है कोई छत्रपत ।। १४९

अही फण कीधो उपरा, भुपत तप भारीह ।
आलैं मन जद जाणीयो, ओ कोई अवतारीह ।। १५०

निसांणी

आलो चूंडो ओळषै, मन हरष न मावै ।
चढ़ीया आलो चूंडरज, मिलवा कज जावै ।।
मालासुं चूंडो मिलै केई कोड करावै ।
मुरधर चूंडो महपती मालो फरमावै ।।
तोर बंधसी ताहरो चंडी वर पावै ।
अस तो चंडो आपसी मन चिन्ता मिटावै । १०४

दूहा

उगमसी नै आषीयो, मुषां ज लावण माल ।
चूडानै संग ले चढो, ढावो थे हुय ढाल ।। १५१

वीरमदेरा वेठरी, घड़े जंगो मन घात ।
नाहर भेला रै नहीं, बसुधा जाहर बात ।। १५२

नीसांणी

वर ले चूंडो माल सै उगम संग आवै ।
मिणधर सूताँ नींदमै चामंड फरमावै ।।
वाड़ो करवट जेवड़ा घर घोड़ा आवै ।
उगमसी इंदोतनैं पोती परणावै ।
मंडोवरमैं दी कर महर माता फरमावै ।। १०५

सूतां उठ चूंडेसधर वाड़ा छपवाया ।
उण दिन सगपण वासतै उगम फरमाया ।।
चांमंडरैं बरसुं करै अस ओझक आया ।
अस रंग बदल्यो ईसरी दूजा दरसाया ।।
तद चूंडे चामंडका परचा सच पाया ।
चंडी वर हुय चुंडकुं सामांन सजाया ।।
उगम घास मंगावणा मुगलां फरमाया ।
सज भड उगम पांचसैं संग चुंडा लाया ।।
छळ कींधा बळ दाषीया धर कारण धाया ।
हर बळ इदा रांण हुय गाड़ा गरणाया ।।
ऐम तळेठी आवीया चूंडे मन भाया ।
ऊभां सोबायत अटा निजरां गुजराया ।।
सो गाडा उगम सर बगड़ भितर लाया ।
चामंड चामंड मुष चवे जैकार जपाया ।।
उसरा थांणा उथपे थिर थांनक थाया ।
मुगला दोय हजारकुं घोरां घलवाया ।।
राज मंडोवर चूंडकुं चामंड बगसाया ।। १०६

दूहा

आसुर काटे अंबका, कियो कमध सिध काज़ ।
चांमंड दीधो चूंडनै, रिधु मंडोवर राज ।। १५३

नीसांणी

उगम चूंडे आगला रजवाट बणाई ।
मुरधर लीधी महैपती धर फेर दबाई ।।
कीलमां थांणा काटीया पाछी धर पाई ।
राएौं पोती रावनै पेषे परणाई ।।
दीध मंडोवर दायजे मिल सारां भाई ।
हरषस मन राजी हुये ऊगम फरमाई ।।
दुगर चौरासी गांव दे थिर राजस थाई ।
राव कहै सुण रांणनै कर चिंत न काई ।।
साषी सूरज चंद है आंपां बिच आई ।
रांण न बदलै राठवड जुग च्यारां तांई ।। १०७

दूहा

इदांजी म करजो अवर, पाधर मुगल पछाड़ ।
दीवी मंडोवर दायजे, चुंडो चंवरी चाड़ ।। १५४

सेत्रावैसु आत सब, मिलण चढ़े माहाराज ।
मंडोवर आया मरद, जसो गोगदेव राज ।। १५५

कायलाएौं राजस करै, धरै कनकी मन धीर ।
मंडोवररो भोमीयो, वल मांगै वरवीर ।। १५६

अगला भोम्या आंपएौं, मांगै की माहाराज ।
वळ देवणनै वीरवर, सजीयो गोग सकाज ।। १५७

नीसांणी

रमै सिकारां गोगरज कायलांणे डूंगर ।
उठीयो दैतज कालीयो एही गल उचर ।।
दुथणी जायो को नही मंसु जोड़ै कर ।
कर पकड़ै पाड्यो कमंद मैळो कीनो घर ।।

अबकै छोड़ै गोग रज मेळुं जाळ घर ।
बह नह मांगूं फेर वळ ऐ सच्चा आषर ।।
वीर मिलायो गोगरज निजनाथ जलंधर ।।
महर हुई सीर कर मया सिषराळ तणी धर ।
वप गोगै वळ वादीयो उणवेर उबंबर ।।
रीजै सम पीरळ तळी सिधराव जोगेसर ।
पीठ फुरे नह ताहरी जपीयो जाळंधर ।। १०८

दूहा

व्याव थपे जद धीररो, दलजी करै उछाह ।
एक धमळ गध एकरी, तो साषा नैं चाह ।। १५८

नीसांणी

बळ हाली कळ जाटसु वे नीत वधारी ।
जट कह वायक जोररा नह बात विचारी ।।
घघले घमळा जाटदा तद कीध तयारी ।
जांन चढंतां जोड्यां कर उछब भारी ।।
सुगन पलाऊ हुय सबै वळ वात विचारी ।
उठ दलो घर आवीयो हुवे होवणहारी ।।
उदल धीरै जांन संग पुगळ पाधारी ।। १०९

ओ जाट धीरीयो वीरदेजीरो छो सो सींहाणमैं परणीयो छो । पछै सिरदार तो मारीज गेया नै ओ उठै ही वस रेयो । धीररी जांनमैं इणरा उंठ १, बळद १, बिनां दीनां जबरीसु ले लीना । जद जाट मंडोर सेत्रावं जाय नै राठोडांनै हेरो दियो ।

जाट कटावण थाट सब सुध मारग धायो ।
मुरधर षट पोहरां मधे ओ हेंरो आयो ।।
चवै मिलंतां चूंडनै सब भेद सुणायो ।
दलो अकेलो घर रयो हूं देषर आयो ।।
पाग संभावो ठाकरां लो वैर सवायो ।। ११०

दूहा

चूंडो हेरु सुचवै, पाछौ वचन प्रीयोग ।
हुं मांमो मारुं नही, तुं संग लेजा गोग ।। १५९

धर चित जा तु धीरीयां, गोगे कने चलाय ।
वाटां जोवै वीरवर, करसी जेज न काय ।। १६०

धीरप दे मिल धीरसुं, समपे विडंग सधीर ।
सुगन लेर चढीयो सरस, वेर लेवण वरवीर ।। १६१

नीसांणी

तद सींचांणी त्यार कर साषत सजवाया ।
सज भड़ गोगै पांचसै चढ षुर चलाया ।।
गड गड त्रवंक गाजीया असमान गिराया ।
अस षडीया उबां बरै रज गैण ढकाया ।।
बैडा उजड वाटतै गिर भंगर छाया ।
जेण समे मिळ जोगणी वळ डाक बजाया ।।
भाला आभ ठहकीया सिर ग्रीधां छाया ।
उरस तणै मग उत्तरे इम गोगा आया ।।
काळा करहग्र ंकर भर नीर चलाया ।
सीहो सुगन न संभवै करसां मन चाया ।।
सुतां फोही सबद सुण दलजी उठ आया ।
सुगन भयानक समजकै मन थाह न थाया ।।
उठे षान अचींतका सीहरा जब लाया ।
अरदल दीसै आवता अत रोस अघाया ।।
अब गळ सीहो उचरै है नीर पराया ।। १११

अळगासुं अस षेड़ीया अर सीस असंगै ।
उठ बेदला जोईया सूतो कन जगे ।।
ऊभा गोगो राठवड पित वेर ज मगे ।। ११२

दूहा

निस आधी षल नेमीयो, वाजी हाक विकट ।
रोस न मावै रावतां, घण सिर फुटै घट ।। १६२

पांणां किरमर पकडे, रिदे जालंधर रट ।
रिण तती वारल तळी, लेवण वीजळ वट ।। १६३

गोगै वीरम वैर कज, पुंरा ही बल हट ।
ओध विगाडो वरत कट, ईसां पिलंग घरट ।। १६४

दुझल धन तो पित दलो, नव गढपत नरेस ।
उण अंगे तूं उपनो, देउ धिम उदेस ।। १६५

नीसांणी

देउ सषीयां साथ ले सज बारै आया ।
वधावे गोगे कमध गीतां गवराया ।।
वैर पितारो वालीयो भल कीधी भाया ।
तिलक कीयो इण कारणै लैसुं मन चाया ।। ११३

कहीयो जद गोगे कमध मांगो मुष बाई ।
सिर दु मारो काट कर विच थाल धराई ।।
ओ सिर धड रहजो अषी आसीस दराई ।
हैसु पमंग पड़ाहीयो माने दे भाई ।।
षबरां मेलुं धीरपै पुगल पोहोचाई ।
पूंगां धड सिर बांटजो भिड बेंनु भाई ।। ११४

दूहा

देऊ दलारी डीकरी, बेठां हुत सवाय ।

तिलक कर गोगा तणे, हेसु लियो बचाय ।। १६६

नीसांणी

हैसु रोवण हक नही संज होय सधीरा ।
तुं जाया दल राजदा नांषै चष नीरा ।।
पमंग चढ़ै पड़ाहीये पुगल जा वीरा ।
गोगा कुसल न जावसी धट ऊभा धीरा ।। ११५

दूहा

कर षुररो लगांम दे, पिठ ज मंडे पलांण ।
पुगल जाइये पड़ाईया, एकण पोहर उडांण ।। १६७

गोगै दलो मारीयो, जीतो मुरधर जाय ।
धाजे बाहर धीर दे, कीजै जेज न काय ।। १६८

राग मिटांणा रंगरली, सुणे अचींती ध्रांह ।
विध कह हैसुं वेढरी, दाषै धीर दुबाह ।। १६९

काहळीयो केहरकळी, कटकां उकट काट ।
धीर चढ़ै अर धूंसबा, वीडे गांउ जड़ वाट ।। १७०

नीसांणी

काह कटकां ध्राह सुण सजीयां भड़ सारा ।
धीर चढ़ै अरि धूंसबा लग गोगा लारा ।।
उडे रज असमानमैं इळ होय अंधारा ।
सेल चमंके बिच अणी निर्स काली तारा ।।
बेढंगी षडीया बीड़ंग पंथ आर न पारा ।। ११६

हेक मना हुय हालीया सज सेना सारी ।
असी कोस अफाळीया क्या लगै कारी ।।
वणीया दुलहा वाहरु बप वेर विचारी ।
एक मिले अन खितको रिण मांझ रेबारी ।।

गोग लछु सिर उतरै मुझ बकरा मारी ।
धीर सुणै अरि धुधड़ै लंग सषड़ लारी ।। ११७

जलम्या पेट जवादरै अस दोय आपांणी ।
चढ़ीया उदल धीर दे धरती धुजांणी ।।
हीराळो न पड़ाहीयो जंगम जग जाणी ।
ऊजो आयो धीर दे कर तेग उबांणी ।। ११८

आय लछुसर उतरा गहमें भरीयोड़ा ।
उरस तणै मग उतरै दल बादल दोड़ा ।।
दूर अचाणक देषीया चंचळ चर तोड़ा ।
अस पकड़े कर आपरा रिण बजे रोड़ा ।।
भुषा तिरसा आपरा वांधीजे सोड़ा ।
ढलीया हात न आवसी गोगादे घोड़ा ।। ११९

अस सह हांतां उतरे थहीया दळ पाळा ।
काळ ज्यूं ही करवा कलह उठे अळसाळा ।।
भूषा सिंह जिम भूटकै रोसै लरढाळा ।
कंपै छाती कायरां धुर्ब झाळो झाळा ।।
सुरा सिंघण थेह ज्यूं धुबिया पंषाळा ।। १२०

सांवत तेग संभायके सज सायर साया ।
लड़तां कांनो धीर ले तद होय तिसाया ।।
कुड़ा रांण कसुंस कर जादम जल पाया ।
अभंग लुणाणी उठिया बल दाष सवाया ।। १२१

दूहा

पांणी पीधां जोइयां, पोह धर मूछां पांण ।
दिस गोगारे मलफीया, डाकी भरता डांण ।। १७१

नीसांणी

रजवट जोइया राठवड़ जुटा षळ जके ।
सेल भचड़का युं सहै किरमाळ कड़के ।।
जरदाळा ग्ररं जोसमै कैमर खरळकै ।
धड़ पड़िया सिर धांफरै मुष मारस वकै ।।
तेग धड़ां भड़ बिछड़े पड़ लोथ दड़कै ।
भड़ घमसांण प्रमांण भल जमरांण जऊकै ।।
ग्रषाड़ै ग्रसमांनमै रथ भाण ठहकै ।
एसा गोगा धीर दे ग्रांण चढ़ीया चकै ।।
गुणीयण ऊभा बादमै बोहळा जस बकै ।
बरवा हुरां ग्रछरां बेहुं हकबकै ।।
दोनुं ग्रोड़ां षेग दे लोही धकधकै ।
जांणक भरीय पषालदा मुष षोल्या सिकै ।।
धरती पड़ीया धीरदे वायक मुष बकै ।
जांण न पावै जीवता नर गोगा जकै ।। १२२

धीर पोहडे षेत विच सिर विछडे धड़ ।
उदल हेसु ग्राहड़ै बड जोस बड़ बड़ ।।
कंवर भिड़वा कारणै ग्रसमान भुजा ग्रड़ ।
जोध बेहु रिण जुटीया षळ षाग षड़ा षड़ ।।
पड़ीया ग्रस भड़ पाषती रिणसु कैम छड़ ।
काळ तणी गत कोपिया भिडीयाळ महा भड़ ।।
पंषणीयां भष पूरीया रिण रैणा रतड़ ।
चड़ै विमांणां चालीया लंकाळ बेहुं लड़ ।।
उदल हैसु धीर दे रिण षेत विचा पड़ । १२३

चड़ वड़ धानंष चाढीया गुण किध भणंका ।

तीर छछोहा छुटगा नह सु जतनका ।।

केता बगतर तन कटा जुझा भड़ बंका ।
जोइया कमधज जुटीया अध जीत असंका ।।

झिलमां वीजळ वाड झड़ षग बाज षणंका ।
ऐसा गोगा धीरदे भिड़ीया भड़ वंका ।। १२४

गोग वहटा षेत विच रजवाट उजाळी ।
आयो जादम एतलै भूपत षग भाळी ।।

सगा रुक समाप दै कर रीझ बडाळी ।
रांणक वळतां गोगरज समसेर संभाळी ।।

बैंग वुही कर वीजळा जंगा दोय डाळी ।
कहीयो गोगै हास कर दे सगा ताळी ।। १२५

घणं तोड़ण जोइयां घड़ा जिते कर समर ।
कठीये पग गोगे कियो निज साद नरेसुर ।।

दरसण सिध आपै दियो माथै कर मैहर ।
पाव उलटा सांधीया ओलषाण तणीयर ।।

इळ अंबर गोगादतै तो काया अमर ।
हुय सिध दसमो हालीयो संग नाथ जलंधर ।। १२६

गीत चितइलोळ

ऐ वीरळ तळी आरांण उनी षळां तंडळ षाय ।
बीजला ज्युं बहै वाद्यै घड़ा एकण घाय ।।
तो घण घाय जी घण घाय धापी रळ तळी घण घाय । १

वैर वीरम तणै वाही निसंष जोध ।
नीडा रहात गोगादेव हुंता धपाई इत धार ।।

रत धार जी रतधार धापी रळ तळी रत धार । २

कटे उदल दलो कटियो धीर हैसु वैर वैर ।
वीरम तणो वाले बालजे इम बैर ।।
इम वैर जी इम वैर गोगे वालीयो इम बैर । ३
कट धर रहै सुता सला कर उभै बटका इस ।
छुटती घर जाय छुटी कीसे सवालै सिस ।।
धर सीस जी धर सीस जाती बाजवी धर सीस । ४
वीजड गमीयै अरांवाळ जोइयां जड़मूल ।
बाप कज वैरीया बेटो घडच भेला धूल ।
ए धूल जी ये धूलजी अरीया काटीया काटिया ऐ धूल । ५
भाज रांणक देव भाटी सबलडो अर साथ ।
कमंध गोगो अमर कीधो नमो जलंधर नाथ ।।
नवनाथजी नवनाथ नाथां ऊपरां नवनाथ । ६

दूहा

सात बीस नीसांणीया, ऊपर पांच सवाय ।
एक गीत इतरा दूहा, भणीया गुण सुभ भाय ।। १७२

नवगुण पूणा तीन सैं, वीरवांण जसवार ।
सुध वाचीजो सकवीयां, बाधर कही विचार ।। १७३

सवासे नींसाणीयां, दुहा पुण सत दोय ।
गीत एक इण ग्रंथमै, समजहु वाचक सोय ।। १७४

इण पोथीमे वीरमांण ग्रन्थरा दुहा पुणी दोयसे है । गीत एक चित-इळोल छै और नीसांणीया एकसो पचीस तो आंकां में छै और एक नीसांणीरो भूलसु आंक नहीं दरीजीयो[1] । और बादररै कैणैमै नीसांणीयां एक सौ पैंतालीस छै । सो उगणीस नीसाणीयां मिली नहीं । जैतमालजी मारीजीया जको समो इणमै नहीं छै । दुरजणसालजी डाभी और दलेरा धायभाई मारीजीया जका वारता नहीं । इण मुदैरी नीसांणीया मिलै नहीं । इसो जुध आकारीठ महाभारत

---

१ नीसाणी छंद-संख्या ११७ देकर आगे की छंद संख्याओं में सुधार कर दिया गया है ।
—संपादिका

माल सलषांणी, वीरम सलषांणी, जगमाल मालांणी, माधोसिघ सोलंषी, वा घड़सी भाटी, वा मदु, जसु, जेतल, देपाल, एं च्यारूं भाई लुणियांणी। जोया तथा गोगो वीरमांणी राठोड़ धीर मधु वाणी उदल हेंमुदलाणी। जोयाऐ अथवा इयांरा भाई रजपूत आदमी हीज करै। सुणीयांसुँ सूरमांरी भुजा असमान अड़ै। कायरांरा हीया पड़ै। दीठां तो सापरत वांवन वीर चोसठ जोगणी ताळी दे हंस हंस पड़ै। सांपर तहूर अफछरां रथ पाथा षड़ै। दलं जोयेंरो भरषीमापणो भेळप अवसांणीरी जाणतो केणहारो कठा तक कैवै। वै इदै उगमसींरो दायजो ही लाष सावासी लेवै।

इति

परिशिष्ट १

आढा पाड़षांनजीरो कीयोड़ो

रूपग गोगादेजीरो

।। श्री गणेशाय नमः । श्री सरस्वतीजी नमः

अथ रूपग गोगादेजीरो

आढा पाड़षानजीरो कीयोड़ो लिषंते ।

गाथा चोसर

अत मत कायव सुबल ऊकत्ती, सुप्रसन हुय दीजै सुरसत्ती ।
पोह राठोड़ अचल़ छत्रपत्ती, कहूं इम गोगो कीरत्ती ।। १

इल़ अजरांमर वात उबारण, चाय छाडां तीडा जल़ चाढण ।
वैर वैराह पितारो बाल़ण, दाषूं इम गोगादे डारण ।। २

दूहा

सुत छाडो सल़षो सकज, धुहड़ जगत साधार ।
घण जाणग सल़षा घरे, वीरमदे वडवार ।। ३

छंद मोतीदाम

वडवार उदार संसार वषांण, जोधार जुभार दातार सुजांण ।
दल़ां थंभ वीरम तेज दराज, साजै दिन राजै ऐ सूर समाज ।।

भड़ां दरगाह हलोहल, भाल, तबैलै ऐ बाज वड़ा तेजाल ।
सत्रां जड़ काढण सूर सधीर, नरेसुर चाढण बै पष नीर ।।
सधूवड़ वीरमदे सुभियांण, तणो सलषेस तपै तुड़ तांण ।
गाहे धर हैमर षेड़ गिरंद, नड़े भड़ अन्नड़ षाग नरींद ।।
दीयै लष सांसण कुंजर दान, सुषत्रिय चित सो ईन्द्र समान ।
करै थह बैठोय सूर सकाज, गोढो गुर सिंह ज्युही अग्राज ।।
षेडे चांऐ वंस उपावण षार, जोइयाऐ आयाय भीच जैवार ।
दलै धर गूजर लोड़ दुंगांम, महैवैय कीधोय आंण मुकांम ।।
दगो कर छोडेय साह इबार, चोरे लष कोड़ जमोर चियार ।
अमोलष ऊजल गात असाध, सालोतर घोड़ीऐ एक समाध ।।
इती मैहमंद तणी लेय आथ, रोदां सिर नीसरियो अधरात ।
प्रथीपत सांभल तांम पुकार, मनंछिय तेड़व राज मंझार ।।
दिसा जगमाल षत्री दइवांण, मंडे मिसलत लिषे फरमांण ।
वेगावैग मेलिय दोय वजीर, वेगड़ैह कोप कियो नरवीर ।।
दलारोय मेलैह सीस दुझाल, जांणूं जद मूझ हितू जगमाल ।
सुणै गल हाल जगा सुभियांण, जोइलारै डेरैय जोध जवांण ।।
विचत्रियै आदर दाष नमेष, आपे दोय तेग अने अस एक ।
इषै अस सुद्रब तेग अपाल, मालावत लोभ धरे जगमाल ।।
वड़ा परधांनांय बूजिय वात, घड़ी देयपाल दला सिर घात ।
प्रमेसुर अंक तणै परमांण, मंडे धर छाड़ांय वेध मंडांण ।।
वेसासैय दाषैय कोल वचन्न, मारु राव ध्रोह धरै विच मन्न ।
जगै द्रब लोड़ण जैत जियार, ताता षग बावाय कीध तयार ।।
आई नह आव तणै उपगार, जोंइयांय लाधोय चूक जैवार ।
इषै मन सोच अरोड़ अपार, हुवो लषवेरो ए कोस हजार ।।
आई तोय गत अलष अदेस, दोषी नजदीक दुरंतर देस ।
पुणै इम षान सबै परवार, हमैय कुण आंहै रषणहार ।।

विच त्रिय दाषै सोच वरांम, तठै इक रावत बोलियो ताम ।
उबारण रंकांए चित उदार, वसै ओय वीरम जूह विडार ॥
मारु सलषावत भायांय मोड़, ठावों अोय बैठोय ठाविय ठोड़ ।
रिमां पड़गोह षत्री रठ रांण, तपै भड़ वीरम ऊंचीय तांण ॥
उठै थां मेलुय जेथ अपाल, जठै नह गंज सकै जगमाल ।
विचत्रियसांभल वैण विचार, त्यारी करजीण षड़े तोवषार ॥
जोइयांय कूच किलो विण जांण, उतारोय कीध दरगह आंण ।
दलो मिल वीरम हूंत दुवाह, आपे कर जोड़ समांध अथाह ॥
हुवो जद धूहड़ जूह विडार, धजाय बंध सरणायां साधार ।
पुणै इम वीरमदेव पुंचाल, अठै थां षांन करै कुण आल ॥
जिते मो सीस षवां पर जांण, इतै कुंण गंज सकै तो आंण ।
प्रथीपत तेड़ वडा परधांन, सोलंषिय मोधोय पाथ समांन ॥
दुसासण डाभी दुरजणसाल, कांनां जगमाल सुणी किरणाल ।
धुंणे षग धूहड़ लाग धीलाग, उड़ै पड़ जांण षंडी वन आग ॥
त्रह त्रह वाहर वाज त्रमाल, पमंगां ए पीठ मंडे पषराल ।
ओपे सिव जेहा ए गात अथाह, सूरा भड़ भीड़ैय टोप सनाह ॥
भुजा डंड सावल तोलेये भूप, रकेबांय पाव दिया जम रूप ।
दला कर आरंभ भीच दुझाल, मालावतसाल लियो जगमाल ॥
षेड़ेचों ए छात षड़े कर षीज, भिड़ेवाय काकाय हूंत भतीज ।
मिले पंथ सालल षैंग मरद्द, गमागम उंमट घोर गरद्द ॥
निहंसेय राग सिंधू नीयसांण, वलोवल छायाय रंभ विवांण ।
पुगा अस षेड़ेय भिच वेभीत, जंगांथह वीरमरी जग जीत ॥ ४

दूहो वड़ो

कोपे कबर करूर, जलामल मेले जगो ।
आयो वीरम ऊपरै, जोइयां वेध जरूर ॥ ५

पोह मेले परधांन, काकैसु दाषै कतन ।
दो काढे बारै दलो, साहो जुध सांमांन ।। ६

वीरमदे जिण वार, परधांनां हूंता पुणै ।
दूं माथो नह दूं दलों, साहौ जावो सार ।। ७

सलषा तणो सवाल, कमंधां गुर वीरम कहै ।
जोड़े षग थारे जोडै, जुड़ी ज्यूं जगमाल ।। ८

काको जैत सकाज, तैं आगल सजियो तई ।
मालावत भूले मती, जिण भोले जगराज ।। ९

काकै तणो कंठीर, सबल भतीजेसू सुबद ।
हुवे मोहर हलकारिया, सक्कज भिड़ै सधीर ।। १०

त्रहके तूरत्रमाट, गीधण जोगण गहगहे ।
काको भात्रीजो कलह, मिलिया लोह मुराट ।। ११

छंद मोतीदाम

मिले जुध बेहुंये लोह मुराठ, प्रथीपत बेहुंये ओपम पाठ ।
कमंधज बेहुंय जोम कंठीर, वीरारस साललिया नर वीर ।।

जुड़े माय माहिय माह जोधार, अड़ीलय विहुंये चित्त उदार ।
अड़ीलाय बेंहुंय लाग ध्रियाग, रुड़ै दल दोउव सींधव राग ।।

बैहु भड़ कंदल मांड दुगांम, मिटे सनमन्न सगप्पण मांम ।
जरु अषड़ैत वैहुं जगजीत, सिधां हिंदवांण बेहुसुं प्रवीत ।।

षेड़े चोंयठात बैहु चित षोध, जुड़े रठ रांवण बेहुंय जोध ।
बेहु जरदैत बेहुं वीरदैत, बीठे धन वेध बैहुं बषलेत ।।

घटै रोवसैल बैहु घर थंभ, षेड़ेचाए षार बंधा गज षंभ ।
वहै वेयधार उराबांयवार, धजां सिर ग्रोध सरां धुवकार ।।

सजै रुडमाल सिंभू सिरताज, विचैदल़ सूर होलोलैह बाज ।
तई झ़ड़ झूल़ सत्रां तरवार, भड़ां घड़ डाडर घाव वंभार ॥

लड़ै रस लीधांय ग्रीध लंकाल़, कमंधज काहलिया किरणाल. ।
बरघल घाव थड़ां गज बांह, छुटै गुण धानंष तीर छछांह ॥

करां षग पोगर धूंण करुर, पटाझर आहड़िया मद पूर ।
हुवै जुध सूर भतीजोये हद्द, मुड़ै नह काकोय हेक मरद्द ॥

घड़ा मच धोम छके रिण धांम, जुझाउऐ वाज नंगारऐ जाम ।
तड़फ्फड़ हीजर साकुर तुंड, रड़व्वड़ कुंड गड़ा जिम रुंड ॥

हड़व्वड़ जोगण षेतल होय, सड़व्वड़ कायर पंथ सजोय ।
तड़व्वड़ सायक आत्र सताड़, बल़ बल़. कालां जांयाव बंबाल.॥

चड़वड़ जोगणि रुद्र जोचोस, जुड़े भड़ धूहड़ बाधेस जोस ।
भिड़े असताईऐ लोह भिड़ाल, गीलै रस ग्रीधण गुंद गीडाल. ॥

पाछा जगमाल धरै नह पाव, दीयै नह वोरम हींणोय दाव ।
नरां भायत्रीज मुड़ै वायनेम, काको जुध भाजैऐ दाषुंय केम ॥

तड़ोबड़ तोल षत्री तप तेज, मिलै सिरदार दोउं मुंह मेज ।
इतै बिच वालाऐ सूर अपाल, मीणंधर आयोय रावल. माल ॥

सपेषैय वातां वागाएसाय, जुदा दल बेहुंए कीधाय जाय ।
पुतारेय वालीए राड़ प्रवीत, जगानैय कुंजर ज्यूं जगजीत ॥

राठोड़ांऐ स्याम चड़ैय कुरंग, उभा सलषावत माल अभंग ।
संपेषेय साव वले सिरदार, धरो जोवधार करो षग धार ॥ १२

दुहा

दाढे माल दुझाल, राड़ वीरमनै राषी ।
उठी बात उबांबरे, मेटी नह जगमाल ॥ १३

ते वाजे रिण ताल, धड़ पड़ ग्रीधणियाँ धपे ।
वंहिदुइ उबां हां बरा, बाहड़िया बाहाल ॥ १४

अण भंग कर आरांण, कारज अणचींता कवर ।
जंगम चड़ पुगो जगो, तलवाडै तुड़तांण ॥ १५

आयो थह उजवाल, कंवरां गुर मिसलत करी ।
जद लिषियो कागद जगैं, वीरम दिस वेधाल ॥ १६

सज ओ न्याव संसार, वीरमदे सांभल वचन ।
पड़ै न एकण पड़दली, तोषी होय तरवार ॥ १७

ओ ओषांणो याद, जाणै छै सारी जगत ।
नविणै दाव निदांनरै, वीरम वासर वाद ॥ १८

कागद सुणे सकाज, दाषे वीरमदे दुझल ।
पण पाणी न पीणरो, मालारी धर मांझ ॥ १९

साझे भड़ां सधीर, धर जूनी हूँता धमल ।
नर चढियो षाटण नवी, वीरमदे नर वीर ॥ २०

डारघ षड़े दराज, सलषावत जोयां सहत ।
मारु थंभा मांडिया, सेत्रावे सिरताज ॥ २१

दल. बल. हल. दइवांण, केकांणां हूकल. कल.ल. ।
राजै वीरम राठवड़, इन्द्र तणै अहनांण ॥ २२

वीरम सेत्रा वास, सीमाड़ां मेले सरद ।
सुत सुपसां जांयां सहत, मारु रहे छ मास ॥ २३

उण समीयै उदार, कर जोडै लागो कदम ।
डारण भड मांगी दलै, जोइयां सीष जैवार ॥ २४

कर मिसलत किरणाल, सेत्रावै राषै सथर ।
देवराज जैसिंघदे, उदभै कवर उजवाल ॥ २५

वीरमदे तिण वार, कहिया निरभावण कथन ।
पीहचावण चढियो पहव, जोइयां जैत जुहार ।। २६

सलषावत सुप्रषाल, सुत सुपहां मेलां सहत ।
हिंदू देषण हालीयो, लषवेरै लंकाल ।। २७

उडै रज असमांण, आधो फर छायो अरक ।
षडिया अस वीरम षत्री, दिस उतर दइ वांण ।। २८

पंथ वहतां प्रवीत, कुंडल वीरमदे कमध ।
.................., परणीया चंदण पहव ।। २९

.................., ... ।
निजगोगादे नेमियो, वरदाइ जिणवार ।। ३०*

कुंडल सूं कुल भाण, पंथ आतुर षड़ै पमंग ।
पष एकण आयो पहव, जोइसां उतन जवांण ।। ३१

उछ रंग राग अपार, आंणै घर घर आरती ।
कमध जोइयांरै कुटम, वाधावै जिण वार ।। ३२

दलो अनै देपाल, भाषै इम सिषर भषर ।
आ वीरम थारी इला, सलषावत सु प्रषाल ।। ३३

उण दिनरो उपगार, देषै अनै दाषै दलो ।
धर लषवेरै तुं धणी वीरमदे वडवार ।। ३४

रिमां देयण षगरेस, सूरा भड लीयां सकज ।
वीरम तलडांणां वहै, दूसर ज्यु परदेस ।। ३५

आहेड़े उजवाल, सलषावत रमतां सकज ।
जंद गोगादे जनमियो, सुण वीरमसु प्रषाल ।। ३६

---

* नं० २९ और ३० दूहे मूल पुस्तक में चरण अस्तव्यस्त होने से नहीं बनते ।

घुरै नंगारां घाव, हुय उछब घर घर हरष ।
कुल दीपक जनमे कवर, गालरा ग्रदवा ग्राव ।। ३७

ऊच नषत उजवाल, वैर सनाहां वालवा ।
जद गोगादे जनमियो, कुल जोइयां षैगाल ।। ३८

संकै नहीं संधीर, दिन उगै पसरा दियै ।
वेढी गारो राठबड, वहै ग्ररोडां वीर ।। ३९

जोइयां हूंत जैवाण, वीरमदे वीजै वरस ।
मारु षेटा मांडिया, पोह ग्रंक वेह प्रमांण ।। ४०

सक भड चढे सिकार, सभै छलासंबुर सुवर ।
कमधज पीरांरी कबर, ध्रम षैरु दूधार ।। ४१

तागा करै तिवार, हीक धीक लेता हीयो ।
ग्राया फिरियादू ग्रसुर, दला तणै दरबार ।। ४२

सक षग षान संभाय, मकै हाल छोड़ा मुलक ।
वीरम सूर वीहंडिया, मैहजीतांरै माय ।। ४३

सूण फरियाद सकाज, उससिया जोइया ग्रवर ।
डारण चेह न दाषियो, दलियै जोम दराज ।। ४४

दूजै दिन दइवांण, दला पुत्रिन्नो वरदयो ।
लषवेरै वीरम लियो, डारण ग्राधो डांण ।। ४५

सारो कुटम स धीर, दाषै तो लाणत दला ।
सकुज वाही साहियो, वले ग्रग्राजै वीर ।। ४६

दलो चवै दइवाण, साच वाच भायां सुणो ।
वीरम सूं चूकं वचन, भो यण उगै न भाण ।। ४७

जग तप तेज जुहार, तलवाड़ै तूटो तरां ।
उण दिन वीरम उब्बारिया, वंस जोयां जिण वार ।। ४८

षिम्या करै जिम षान, बीरम तिम अंत्रलो वहै ।
जुड़सी षेत जवांन मैं, मांझी दिन दोय च्यार ।। ४९

छंद ज्ञात बे अषरी

दलै षिमती जिम जिम अत दाषै, राव कमध जिम जिम अंत राषै ।
परजा भाड़ंगनेर पजावै, ऊगै दिन फरियादां आवै ।।
अरि घर गंजै षाग उबांणी, समहर रो भूषो सलषांणी ।
लाष भिच तिल मातर लागै, एकण जोर आपरा आगै ।।
पर घर सत्रु दुछर जिम पालै, हींद आपस देणो हालै ।
धूहड़ एक समै छत्रधारी, आहेड़े चढ़ियो अवतारी ।।
सज पीरां दरगाह सवायो, इक फरहास निजर तद आयो ।
आप रहण रिण बात उबारण, उदर ऊपनी बात अकारण ।।
काट फरहास ढोल करीजै, सोलै कोसां सबद सुणीजै ।
पूछै तांम भड़ां पूचालां, डारण आप जिसां दूठालां ।।
कैहै सुपह फरहास कटावो, घणी सगोढो ढोल घड़ावो ।
षित ऐ वचन सुणै अत षारा, पांण जोड़ बोले पूजारा ।।
है फरवास षुदाय हमारे, थांन रांम जिम धूहड़ थारे ।
सुणै वचन धिक वीर सिघाल, जांणक जेठ साललि ज्वाल ।।
बाढ फरास वीर दरदाई, आप तणै सिरयात उपाई ।
जड़ षिण ठाहे वृछ जग जाहर, मारियो एक वलै मुंजावर ।।
तेथी नफर करै केइ तागा, भय पड़ केइ जीव ले भागा ।
करता कूक रुदर तन काया, दलै तणीं दरगा दरसाया ।।
सारां षारा वचन सुणाया, वीरमदे फरहास वडाया ।
सज देपाल कहै षग साहै, महजो दला जोइया माहै ।।५०

दूहा

करता कूक कुराल़, आया फरियादू असुर ।
वीर फरास बडाविया, सुणजो दला सिघाल़ ।। ५१

जोइयां मिल़ै जै वार, कथन दला हूंतां कहै ।
वेड़ीगारो राठवड़, मारै सै काय मार ।। ५२

मुड़ियां हीं नह मोस, मोस न वीरम मारियां ।
काम दलो कह मै कियां, दोजै किण नै दोस ।। ५३

बै परधांन बुलाय, दिस वीरम दाषै दलो ।
अमां रीस न उपजै, षित अंत वैर षुदाय ।। ५४

नाकी छिले निराट, दाषै कुल़ नायक दलो ।
नर तो नेंइ नियापरी, वीरम सू जीवाट ।। ५५

दलै कथन मुख दीन, कमधज हात कहाड़िया ।
आप वंट चोथां अमां, तूं लै वाटा तीन ।। ५६

जोइयां रूप जिवार, दाषै कुल़ नायक दलो ।
वीरम तांसूं वाजियां, है जीतां ही हार ।। ५७

वीरम सूं तिण वार, कहिया परधांनां कथन ।
आधी वांटे लेइ इल़, नर वकवाद निवार ।। ५८

सूरो कथन सुणेह, काहलियो केहर कल़ी ।
आयर जांण अग्राजियो, मयंद तणो सिर मेह ।। ५९

मन धारे अभमांण, आपे सांमो ओल़भा ।
दीसै तूं भूलो दला, उण दिन रो अवसांण ।। ६०

जगपत जोम जिहाज, कुल़ जोइयां कतलत करत ।
देषत तह मेलत दला, ए विसटाला आज ।। ६१

ऐ तोले औराक, बोलण घड़ उवाबरो ।
मेल़ वचन नह मानियो, वीरमदे वैंडाक ॥ ६२

पाछा आय प्रधान, कथन दला हूंतां कहै ।
मरसी का तोय मारसी, जालण हरो जवान ॥ ६३

कर झाले केवांण, नर वीरम सहजे नहीं ।
देषे नह जुड़सी दला, इण भव ओ अवसांण ॥ ६४

कीधा षून अनेक, ध्रूहड़ लषवेरै धणी ।
डारण मड़ षिमिया दलै, अन नर षिमे न एक ॥ ६५

कवित छप्पै

पोह जिह हीज प्रभात, पहल सिकार पधारे ।
हड़वड़ भड़ हैवरां, निंहस वाजते नंगारै ॥

डारण वीरम देहु, दुरंग वहतां तद दीठे ।
पेष सुरग पिंजरो, उरहि परजल़े अंगीठो ॥

षड़ आतुर तोषार, प्रगट नजदीक पधारे ।
गढपत कुण इण गांम, चितहि राठोड़ उचारे ॥

पूछ नकीब प्रसीध, स्यांम सूं अरज सुणाई ।
दला तणो दइवांण, वसै धावड़ वरदाई ॥

तण सल़षेस तिंवार, ध्रोह वीरम मम धारे ।
वसुधा राखण वात, वे हद बोलियो वकारै ॥

जयचंद हरो जयचंद जिम, हिंदू कंवर वजर हियो ।
सातहूँ पुत्र धावड़ हणे, कमधज किलो कायम कियो ॥ ६६

दूहा

वीरम षाग वजाय, कल़ चाल़े लीधो किलो ।
दोड़ी भाड़ंगनेर दिस, धाहां देती धाय ॥ ६७

ग्रोइ नीयाव ग्रघात, सोह भाई भड़ सांभल़ो ।
वीरम षाग विहंडिया, सक धावड़ सुत सात ॥ ६८

कूकी तणो कथन्न, दांणव सुणी देपाल़दे ।
जोइयो पण लीधो जरू, इण भव षाणो ग्रन्न ॥ ६९

हिंदू देषे हेत, पांच दिनां मै पामणा ।
सक धावड़ पंच साजिया, षल़ कीया रिण षेत ॥ ७०

दुजड़ां हत देपाल़, दाषै बल़ देपाल़ दे ।
दीसै तूं जायो दला, कुल़ जोयां पैगाल़ ॥ ७१

सीस न वाधै सूत, वाध दला तें वींटियो ।
ग्रवही रोस न उपजै, कायर फोट कपूत ॥ ७२

बोल कोल ग्ररु बाप, दोय न ग्रै देपाल़दे ।
जावां मै वेगा जुड़ां, वै वीरम वै ग्राप ॥ ७३

सूरै कथन सुणेह, दलै तणा देपाल़दे ।
ग्रंबर छिवंतो ऊठियो, केहर ज्यूं कणणेह ॥ ७४

पमंगां हुवा पिल़ांण, हूँकल़ दल़ तह मह हुऐ ।
ग्रंग भिड़े उब्रांबरो, जरदां कड़ी जैवांण ॥ ७५

रुड़ै दमांमा राग, हूर ग्रपछर मन हरषिया ।
जंग मैं चड़िया जोइया, धरे सीस धीयाग ॥ ७६

छंद मोतीदास

धरे जद रावत सीस ध्रियाग, विढे काहि ढोल वथोड़े वाग ।
षिमै फ.ल़ साबल़ ऊपंड़ षेह, छछोहांए पार लहै कुण छेह ॥
अड़ीसल वीरम हतहां आज, सव्याजाए लेसिय षूंन सकाज ।
धुड़बय षेहांय काठ ध्रियाग, नागां अस धूज रसातल़ नाग ॥
विढवाय हाल दलो धरवंद, उलंटांय जांण असाढूय इंद ।
नरां मुष वाधेय सूरांयनूर, हले दल़ साथेय जोगण हूर ॥
उमंगेय सांभल़ राड़ अगांम, तमासोये देषेत नारद तांम ।
आया चढ सांड उमांपत ईस, सजे वाय माल़ सूरां भड़ सीस ॥
उडे रज डंमर व्योम अथाह, मिले निस जाणक भादव माह ।
दल़ै कर वीरम हूंताय दाय, उगंतां सुर वितलीयोय आय ॥
धुबे पड़ रोस अरराका धाक, हुबोहुब होय चहूं बल़ हाक ।
ढमंकैय वाहर वाहर ढोल, षैंगां जड़ जीण दुबागाय षोल ॥
कोपे अड़ अंबर जोस करूर, सुणा वित लीधाय वीरम सूर ।
सजे वट सूथण जांमियसार, जड़े छकड़ाल़ कड़ी जोय धार ॥
ओपे सिर गूघर टोप अथाह, विणै दस–तांनांय हाथ जवाह ।
जोड़यांय साजण जैत जुहार, सुरा भड़ भीड़ छतीसुंयसार ॥
दुबाहांय भीचक तेड़ दुभ.ल्ल, अमरोगेय गालेय नेस अमल्ल ।
अमलांय वाधेय जोस उगम्म, हुवो भड़ सारांये जीण हुकम्म ॥
अमोलख उजल़ गात असाध, सजे हव साषत वैग समाध ।
अल़वल्ल लेतिय झंप अपार, तांणे तंग हाजर कीध तयार ॥
चढंतांय वीरम देवड चिंत, पला गुह आप रांणी सुप्रवीत ।
तवैगल मांगलियांणिऐ त्रास, उभै कर जोड करी अरदास ॥
रचो कोई दाव षत्री रढ राण, दल़ै वित आज लियो दइवाण ।
किजे नह आज चढे किरणाल़, सत्रां चाय चींतविय सुप्रषाल़ ॥

इसा थेय पून कियाय अनेक, आवे जद षूंन कियो इण एक ।
मैकुबिय आज करो महाराज, सवारैय यलीजोय वैर सकाज ॥

तवैगल रांणिल पहूंताय तांम, दलां थंभ वीरम कोप दुगांम ।
जावै वित उभांय मूझ जरूर, सनंसेय सेस न उगैय सूर ॥

गजां षल. आज नद्‌ं पल. ग्रास, दषै मुष हूंत अला़ दरवास ।
ओजो हुंय आज चुकूं अवसांण, वकै नह वेद मुषां ब्रहमांण ॥

जावै वित मूझ उभां जैय वार, धरा नह छोल़ दियै इदूधार ।
खला़ सिर आज न वाउंय षाग, जलो़ जल. सायर लाग जला़ग ॥

तइ हवता कुंये ओलोयतन्न, करै दत देवण उत्तर क्रन ।
तोड़ूं नह सिंग सत्रां तरवार, सूरां कुण साष भरै संनसार ॥

आंणूं तिल मातर जीव अंदेस, सनंसय मूझ पिता सल. षेस ।
आउं नह आज नवंनांय ईस, दिवाकर उगैय पिछम दिस ॥

ढहूँ नह आज गयंदांय ढाल, महेवैय लाजैय बंदव माल ।
राषुं नह आज षत्री ध्रम रीत, सतो सत छोडेये कुंताय सीत ॥

वदोवद ध्रूहड़ दाष वचन्न, मेले नह चाल. राणी वड़ मन्न ।
दाषै तद वीरम कोप दपट, हमै सुण राणिय छोडोय हट ॥

उछटैय चाल छत्री उजवाल., चवै गल पंडव सूंकल चाल. ।
ओपै तन साज झला़हल. आब, सजो तंम आंण समाध सताब ॥

अलो़बल. लेतिय झंफ अडोल, मुणै चितरांम समद्ध अमोल ।
रकेबांयें पाव दिया रढ रांण, हुवो असवार सिधा हिंदवाण ॥

ताली़ मिल षेचर भूचर तांम, अपच्छर हूर धरै आयराम ।
क्रहकेय वीर वैताल. करूर, त्रहकेय राग सिंध्रू रिणतूर ॥
बभकैय सार धधकेय वाय, गैहकेय ग्रीध चहकैय माय ।
ठहकेय ध्रीह त्रमागल. ठोर, अपच्छर रथ्थ हकै चहूं ओर ॥

षल.कैय षाग हल.केय षाप, उचकेए छकेय साकूर आप ।
डहकेय डायरण वाय वैडाक, बहकेय रंक हुवा हक बाक ॥

चहकेय चील पंषी कल.चाल, कहकेय रंभ गलै चंप माल. ।
रैवंतांय वाजेय पोड़ रड़क्क, धरा पुड़ धूजय गोम धड़क्क ॥

वरणे मनु दांमरण दीह वीचाल., मिले निंस भाद्रव मेघाय माल. ।
घमंकेय गूघर पाषर घोर, इल.ा विच भंग पड़ै चहूं ओर ॥

सत्रां दिस वीरमदे सुभियांरण, कमंधज ढीलविया केयकारण ।
धाड़ायत बाहरवां रिरण ठांरण, दलां मुह मेज हुवो दइ वांरण ॥

अड़े सिर व्योम सजोम अरोड़, रिमासुंय आपड़ियो रायठोड़ ।
मांडो पग धीर धरो मन माय, जोइयांय आज सको नह जाय ॥

षिमै फल. साबल. नागिय षाग, रुड़ै दल. कावल. सिंधव राग ।
चवै हक ग्रीध वीरांवांचेल., मिले. दल. दोय इरणी मुहमेल. ॥

गमागम आवट रुक गरीठ, रिमां पड़ साबल. सेलांय रीठ ।
सत्रां दिस वीरम वाहेय सार, आजुरणोय काल. तरणो उरिणयार ॥

धको कोइ साज सकै नहीं धींग, तइ मुष दाखेय दाद त्रसींग ।
चोड़ै षल. धुहड़ लाषइ चाक, वीरोलैय लाष षलां वैयडाक ॥

षत्री गुर वीरम धुरणैए षाग, विछुटोय जांरणक सांकल. वाघ ।
चांपे नर कोरण वियो जुग चाल., करै कुरण देषत टालोय काल. ॥

छाडाहर जाहर वाधैय छोह, लाषां सुंऐ आवरण जायोय लोह ।
कठै केइ सूराय आवैय कांम, तके केइ कायर ओलाय तांम ॥

पड़ंतांय देषेय भीचकचार, जोइयांय दाव कीयो जिरणवार ।
ताली मुष दाख होकारिय तांम, घुरे जद कावल. गेहर घांम ॥

सुरणे जद गोहर ढोल समाध, आइ जद माथेय धुंन असाध ।
असल्लिय ताजरण गोत उडांरण, जची छिब नाच अपच्छर जांरण ॥

राणां बल. चांपिय धुहड़ राव, घाले जद वीरम चावक घाव ।
झलतिय उभिय षांधोय झाड़, रही पग रोप विचाल.य राड़ ॥

छाडाहर साभ.ण हिंदुय छात, धणा दल. नीठ दरसिय घात।
संभाइये पांणव नागाय सार, हुवा हुव दोलाय आठ हजार॥

वागा जम रूपी षत्री बैबाह, दलो भड़ वीरम हूंत दुबाह।
जारेय सैंतीस सत्रां जम जाल., पाड़े रिण वीरमदेव पु ंचाल.॥

जीते जुध जाहर पारथ जेम, उभो देयपाल अग्राजैय एम।
प्रफुलत देष षड़ो देयपाल., लोहां छक वीरम बोल ल ंकाल.॥

षड़ो कोही मूझ तणो रिण षेत, साजे ओय आसुर पुत्र समेत।
धणी राय सांभल. वैण सधीर, आली कोय बोलेय तांम अधीर॥

भषू देयपाल. देऊं पल. भ ंष, धणी कुण आपैय मूज धनंक।
सोलंषिय माधोय ओपम साष, पना दिस नांष दीसंन्यो पैयदाक॥

सांमा पग धाणष रोप सधीर, तणै दंत हूंत हिलोलैय तोर।
घात देयपाल. तणै तन घात, आहैड़ीय कीध प्रथी अषियात॥

पनीयैय कीध पराक्रभ पात, हुवो निरलंग ऊभै कर हाथ।
उजाले.य लू.ण धणी रोय आप, आहेड़िय पुगोय थांन उद्याप॥
मारे रिण तांल. देपाल. अमीर, बरे रंभ सुग्ग पोहतोय वीर॥ ७७

दूहा

साजे षला सधीर, पाटो घर वीरम पड़े।
रहे उजागर चू ंडरज, निज वंस चाढण नीर॥ ७८

सूग पितु गेयो सकाज, वरस वीस काढे विषों।
लोहा छैल. चू ंडे लियो, रिधु मंडोवर राज॥ ७९

धजवड़ हता सधीर, देवराज जैसींगदे।
सेत्रावं राजेस सधर, विजै सहत नर वीर॥ ८०

छाडा तीडा छात, बेपष सुध उबांबरा ।
वरदाई दिन दिन वधै, गोगादेवड गात ॥ ८१

जाहर पारथ जोम, बाळ धमळ छिलसै बरै ।
भड़ गोगो थोगै भुजां, वडहत डिगतो व्योम ॥ ८२

अस भड़ भूळ असंष, सलषाहर मेळे सकज ।
वीरमदे रै वैररी, धरी गोगादे घंष ॥ ८३

अन जळ पान अहोड़, लीधो अंग लागै नहीं ।
बाप वैर किम वीसरै, गोगादे राठौड़ ॥ ८४

परणंतै परजाव, इळ सिर षाटण अमर पद ।
दरसण गोगा नै दियो, अगठ जळधर पाव ॥ ८५

पूरी दाषे प्रीत, दणव रचावणनै दलो ।
रीझ समापी रळतळी, सिध मोटे सुप्रवोत ॥ ८६

अंग बळ धरे अरोड़, साच वाच मांगे सकज ।
अंबर छिबंता आवियो, गोगादे राठौड़ ॥ ८७

गोगादे गज गाह, नर नाहर चित नेमियो ।
भड़ उण समै भतीजरो, मांडे दले विवाह ॥ ८८

जदम चोक जेवांण, सम्पण विस षाटण सुजस ।
जोयां ओपम जांनरा, साजे दलै सैमांन ॥ ८९

सोह जांनी सिरदार, इद ज्युंदो सजिया अलल ।
पड़ी गरज इक पुरणरी, तोसाषांने त्यार ॥ ९०

विध चित दाषवमेष, आय सेवग कीनी अरज ।
दीठो मैंटयरै दला, एक धमळ गघ एक ॥ ९१

श्रीमुष दलै सतोल, कहिया जद हूंता कथैन ।
आप धमळ थारो अमां, मुष मांग्यो लै मोल ।। ९२

वचन सुणे तिण वार, ते धोरी मांगण तणो ।
झाटक कांधो जाटड़ै, नर कीधो नाकार ।। ९३

आन रहण आरांण, केवियां रा चीत्या करण ।
दुझल धमळ लीधो दलै, जोरीवारै जवांण ।। ९४

त्रहके त्र त्रमाळ, धोरा सिंधुरा धुबै ।
जांन दलो चढियो जरां, पौह छावण पूंचाळ ।। ९५

वहतां पंथ विचाळ, सज तीतर दीधा सबद ।
जड़ काढण षिण जोइयां, गोगादे अरगाल ।। ९६

तीतर तणा तिवार, दाणव सुण वायक दलै ।
सीष करे सोह जानसैं, वळियो जूह विडार ।। ९७

दलो समज दइवांण, घण जांणग आयो घरे ।
चूंडा दिस भट चालियो, आंटै धमळ उडांण ।। ९८

मरद बेपारां माय, असी कोस काटे इला ।
आयो जाट उबांबरो, चूंडै पास चलाय ।। ९९

दलो सकज दइवांण, पिता वैर मारै पहुत्र ।
वेर मकरमो ळार वौ, कस चूंडा केकांण ।। १००

सुत वीरम समराथ, उत्तर चूंडे आखियो ।
दीठा वायक दाखिया, हेरू पटके हात ।। १०१

रे चूंडा सुण राव, कर सांजत चढ काछियां ।
जीवसी ज्यां जुड़सी नहीं, पोह इसड़ो परजांव ।। १०२

अंग कर रोस अघात, चूंडे सुं हेरूं चवै।
वप मो घमळ न वीसरै, नूं किम भूलो तात ॥ १०३

नर कमंधां चो नाथ, चूंडो हेरू सूचवै।
दाणव संघारे दळो, पोहो गोगो पाराथ ॥ १०४

सांभळ वचन सधीर, सारां राव चूंडै तणा।
क्रमियो गोणादे कनै, धिषतै षार सधीर ॥ १०५

पंथ काटे अण पार, मिलतांही दाषै मरंद।
दांणव संघारे दली, साहे गोगा सार ॥ १०६

सांभळ वचन सधीर, हेरू सूं राजो हुवो।
करै मैहर समपै कड़ा, वीरम रै नर वीर ॥ १०७

पोह धर मूंछां पाण, पूतारे परगह पहव।
सक गोगो मांगे समण, जाळण षळां जवांण ॥ १०८

करण कमंध सिध काज, जड़ काढण षिण जोइयां।
दिल चिंत मीया सोदिया, समणैं वैणस काज ॥ १०९

सूरा कथन सुणेह, सांमण रा साचा सबद।
केवा काढण कोपियो, डारण गोगा देह ॥ ११०

छंद त्रोटक

भड़ केवाय काढण ब्रद भलै, दइवांण जुभाउऐ मेळ दळै।
घण बोल घैसाहर जोस घणो, तैंहूंय हगांमोय कूच तणो ॥
हक होय हिंसारष साद हुबै, धूंसा छक कावळ वैर धूबै।
कर सिलह गोगाय वैर कजै, सिव जांण सिधांतर भेष सजै ॥
जमजाळ कड़ी जरदाळ जड़ै, उतबंग भुजा जाम वोम अड़ै।
दसतांन सरवत बंद दिया, ओयणे दोय मोजाय ओपविया ॥

जमदढ्ढ बांमै अंग भीड़ जड़ी, सज पेटिय ऊपर सांबरड़ी ।
घण वज्जर काळ लुहार घड़ी, गुण भार अठार कबांण गहै ।।

नर नाहर साज तंडी वन है, अत वाढ अणी छड़ ओपवियो ।
लंयकाळ कर ळसेलाळ लियो, तति अत्तिय जेरव होंय त्तिसी ।।

करवतिय ततिय जांण कसी, लड़वा सुत वीरम भेद लहै ।
दीय रूक अचूक रकेब डहै, तेयथेट असलिय षेत तणो ।।

वपवाह अली बंध ढाल विणी, मोहरां दस तीन उभै मुररो ।
तैय ऊपरं सीस तठै तुररी, भड़चाळ चषां सैयचोळ भड़ ।।

जमरूपिंय सार छतीस जड़ै, बौला जड़ काढण उबबरो ।
कैकोंणीय पंडव जीण करो, सुज वायक पंडव संभळिया ।।

वप वाधेय जीस विलकुलिया, कंध थापल रषत दूर कियो ।
दाषे मुष ब्रद लगांम दियो, षेह भटक पीठ कियो षुररो ।।

सक गात कियो सुध साकुर रो, ध्रत गूगळ अग्गर षेव घजो ।
तन भोड़ियो साज जड़ाव तणो, पेसूज वणिय हद गात परी ।।

केयकांणि सिचाणि नैप त्यार करी, षोयले जद पंडव लेरषली ।
करती इम तंडव मोर कली, चत्रसाल अचप्पळ तेज चषां ।।

रस लैण लगांण उडांण रुषां, वध तेज समांण विमांण वहै ।
गुण वांण कवांण जीवाण व्है, अंगराग वीणीयोये गात इसौ ।।

तथथये करंतीय रंभ त्तिसी, गहपूर त्रमाळ सिंधू गडड्डे ।
चक्रवत्त सिचणिय पीठ चड़ै, असं षेड़ेय धूहड़ उंतवळो ।।

ते कोय चणै चौळ चाढे त्रसळो, चक्र च्यारु'य देस चळ चलिया ।
सोयं पांच इसा भड़ सालळिया, सुत वीरम गोग प्रवीत सहां ।।

दिपैय मुखं सूरज चंद दहां, जोइयां जड़ काढण काळ जिसा ।
दळ हूलेय भाड़ सामेर दिसा, गैग ढाळ जटाळ वेताळ गजे ।।

विकराळ बंबाळ त्रमाळ बजै, दुवठाळ षड़ै धमचाळ दलै ।
मुजवां सिर घोर अंधार मिलै, अोपेय असवार तोषार इसा ॥

जुग जेठिय बुड़ैय पाल जिसा, कळ चाळ षळां सिर चूक कीयो ।
उरसां हुँत जांणक उतरियो, घण ध्राह दिरावण सत्रु घरे ॥

कमधज्ज षड़े अस वेग करे, मांभिय दळ दोउं कटे मरसी ।
हद आज चकाबोय राड़ हुसी, धुप ऊढ धरस तुंरा धमसां ॥

दुषताय दहलांय देश दसां, मिल सालळ गोगोय सूध मुणां ।
तेय काढण आंटोय बाप तणां, धजराज नगां धरती धममै ॥

भालाय सिर ओधण भूळ भमै, सकवें रपु ग्राहण सालळियो ।
अंध घोर षेह रिव अंबरियो, डहके पंथवा सिर डंबरियूं ॥

कर कोड वैताळ क्रह क्रहिया, रुद्र जोगण भूत छके रहियां ।
केइ षेचर भूचर संग कियै, दोलिय फिर साद चुडेल दियै ॥

पटेय गीर भार अठार पड़े षुसियाल हुई रथ रंभ षड़ै ।
डाकिय भड़ धूहड़ बोम डहै, वैडाय अस उजड़ वाढ वहै ॥

रिव धूंधळ मंडळ पूर रजी, वंसरी जिम नास ब्रहास वजी ।
पंथ सालळ जुथ दलां फबळै, मिट तेज भासंकर घार मिळे ॥

जड़ आवध जोस मै पाथ जिसा, दळ षेड़ षत्री उतराद दिसा ।
ग्रह पूर त्रमाळ सिंधु गड़ड़ै, पंड़ ताळ तुरै ग्रह भार पड़ै ॥

डमरु घण डाकण डाक डहै, तेतालिय ताळिय वैताळ त्रहै ।
लागोय सिर अंबर रीस बधै, षड़िया अस गोगेय षार षधे ॥

इम साथ सबै भड़ अोपवियो, देषैय छित्र ठाळोय काळ दियै ।
हद सुर मांभी सलखेस हरो, आयोय अस षेड़ैय उबंबरो ॥

समणी तद सालऐ सीव विया, करहा भर नीर अग्रय किया ।
कमधज षड़े अलंगार कियां, लषवेरे रो साह बमिद लियां ॥

दोय साद फोहो विपरीत दिया, सुतैय सुत लूणक सांभळिया।
सुण साद भयंकर सांवणरो, जाग्यो दळ नायक जांमणरो ॥

दइवांण जुझाउय ढोल दियो, सुगनो अब तेड़ हुँ वेंग सियो।
दाषै इम सीआय हूँत दलो, भण आज सुनग्ग भूंडो क भलो ॥

लड़ काढण वैर परत लियो, कमधज घरां सूंय कुच कीयो।
कर जोड़ सीयो अरदास करै, पण गोग अजु तीहै नीर परै ॥

सुगनीराय वैण दलै सभळै, किरणाळ सुतो सुष नींद करै।
अस षेड़ कमंध जराइ इतै, आयोय भड़ काळजे उकळतै ॥

वैरीय जड़ काढ षत्री विषमो, सुप्रवीत धुबे अधरात समे।
सुंपै अस जेळय भड़ां सघरां, केवांणिय षापांय छेक करां ॥

रिम सीस आसो चित धार रळी, कमधापत भूषेय बाव कळी।
चित देस दिसा नह चेतवियो, कमधज दळै सिर लोहकियो ॥

कट ओध अरि त्रीय इस कढी, घणहैं सुष थाळ कटी घरटी।
प्रिसणां घर ध्राह देवाड़ पड़े, चक्रवत महेवय नीर चड़ै ॥

कर जैत सवैर कढै कलियों, वेह सात्रव गोग घरां वलियो।

दूहा

रिण गेगि कर रीस, दल्ला सिर झोकी दुझल।
घरटी एकण घाव सुं, वड हुय वटका वीस ॥ ११२

तैं गोगा रिण ताळ, रिम सिर झाड़ी रळ तली।
कट ओघण-अरि त्रिय इसकट, साठ सोना रा थाळ ॥ ११३

जै दिन दोयण जीत, वळियो काढण वैर नै।
दाणव चढियोजेण दिस, पाय इयो सुप्रवीत ॥ ११४

दुझल पिता धिन वेस नव गढ हां, छात नरेस ।
दुझल पित धिन दलो उण, देव धिनो उदेस ॥ ११५

कर षुररो लगामदे, पींठज मांड पिलांण ।
पुगळ जाइ पड़ाइय्म, एकज पोहर उडांण ॥ ११६

मसतक बाधो मोड़, फेर दियलेतां फजर ।
दाणव सुणिया धीरदे, पनरा कोसां पोड़ ॥ ११७

अण भंग वांह उभोय, मदु तणो दाषे मरद ।
अस पोड़ां धुजे धरा, काकै कुसळन कोय ॥ ११८

पोहर पुल़ पैंतीस, कुकाउ जोयाँ कनै ।
पोहतो चड़े पड़ाहियै, हैसु कोस छबीस ॥ ११९

विधहै सुकहवात, सोह जानी मांडी सुणो ।
दुजड़ां मुह षामो दलो, घात रिमां अरघात ॥ १२०

रिण काको अणरेह, वहियो सुण चंवरी विचा ।
धीर धरके उठियो, छोडे दुलहण छेह ॥ १२१

दाषे धीर दुवाह, काहळियो केहर कळी ।
बलवंत सुसरो बोलियो, रांणकदे रिम राह ॥ १२२

जोइया रुप जैवार, पूरा ले फेरा पहत्र ।
करवा गोगेसूं कळह, जंग मिळ मांडो जांव ॥ १२३

परणे भड़ पूंचाळ, सुषले निमक संसार रो ।
दाणव चढियो धीरदे, वेध करण वेधाळ ॥ १२४

धर अंबर धड़ड़ेह, हुर अछर सिव हड़हड़ं ।
अस षडिया उबांबरे, जोइया जरद जड़े ॥ १२५

ऊपड़ रज अणपार, गिधिण जोगण गह गहै ।
हळ हले गो गादिसी, सजे छतीसु मार ॥ १२६

छंद त्रीठक

वप तेज हळाहळ वाद वहै, सक सूर छतींसु ये सार सहै ।
पैलां पत लैण बळी समथ, हूब होयक हूकळ वीर हथा ॥

ते बेठक भूषाय बाघ तिसा, डाढाळ कठठय गोग दिसा ।
बोहाळ षड़ य अस मोड़ वंधो, कवली भड़ धीरोए नाह्व कंधो ॥

वप वाहर नाहर, जोम धके, जुध मांहि भिड़े नर जोध जके ।
दल पायल थाठ हलै दुभलै, हुब जाणक सांमद सात हले ॥

डाकिय भुज अंबर धीर डहै, वह पूर विमाण कबां ग्रहै ।
भुरा मण तीन पुलाब बषै, चढिया षल षावण चोल चषै ॥

प्रथमी दस देसांय भंग पड़ै, ते भार दलां अहिधुह अतड़ै ।
घण घोर आडंमर षेह घणी, ओपेय जिम नषत्र सेल कणी ॥

काको जुध मांगण गोग कना, मिलाय हुय मारग हेक मना ।
षिध लागेय बाज घण षड़िया, अरजीत गेया नही आपड़िया ॥

वप सोच वले तज मांण वहै, रायठोड़ अगे अध कोस रहै ।
दल नाथ हलै पंथ देस दिसी, असधीर अफालिया कोस असी ॥

वकवाव वधारण वेद भळे, वह पंथ विचारियांम मिलै ।
पुछैय मिल जैनुय वात यहां, सिघ गोग तणो सक साद सहां ॥

सुणतांय मराइके गलही, कर जोड़ हकीकत साच कही ।
भड़ षोस छला मद गैभरियों, ओ गोगल छुसिर उतरियो ॥

सूत्रणे अर नेड़ोय संभलियो, गल चाळण धीर षिळकुळियो ।
भुज पोरस मूंछ मुहार मिळी, पेये चड़ आतुर बाग्र षड़े ॥

सज राग सिंधुय नीसांण सहां, त्रबळी तद तूर त्रंबाळ तहां ।
घण वेढक गोग दिसी भिधि रिया, पिंड सांमत पूण्य पाखरिया ।।

किरवांण विमाण ग्रह ग्रहिया, रिवा ढांण मसांण छके रहिया ।
गत घोर अरगज है गहरै, अग षग अमूजैय मांय मरै ।।

अळगांसुय देषेय थाट अरी, तैयधीर हियै विच घकंधरी ।
पैय काढण वैर षत्री प्रगटा, घण सालळ सांवण मेघ घटा ।।

षड़ बाज नजीक आया षड़ता, तीषाय भड़ काळजै ऊकळता ।
लंकाळ आयोय घमचाळ लियां, छळ चाळ धीरो जमरूप कियां ।।

सुताय दळ गोग तणा सधरा, अस आंण अचांणक लीधै डरा ।
सुण देष षळां भड़ गोग सही, जागे रिण सुताय काळ जुही ।।

विषड़ी रिण चांमंड तेम विणी, तिण वारसी बीभड़ गोग तणीं ।
विढवा कज वीरम ओपम वीरम रो, जोइयां दळ सीस जांणै जमरो।।

षळ फोज कमंधज देष षड़ी, चवळापत जांणक पंष चढी ।
बळ नाहर गोगाये देव वरै, कव षांन किसुंय बाषान करै ।।

कस आवध साज बंधे कड़ियूं, धुब सालळ सांमोय धूहड़ियूं ।
केवियां सिर गोगे कोप कियो, इळ मांयण बावन उससियो ।।

चष्ष चोळ मुंछां भुंयहार भिड़ै, ऊतबंग भुजा ब्रहमंड अड़ै ।
हुब रोस चढो सोह राव हणो, तेय नीर सजे दरियाव तणो ।।

विध तीर गुणांय धुंकार बजै, ग्रह जाण त्रषा रुत मेघ घुरंजै ।
संक कुरम सेस सळसळिया, ग्रत वेध दहूँ दळ ग्राफळिया ॥

उवलां भुज यूं षग व्योम ग्रडै पैयलां सिर मार ग्रपार पडै ।
जोइयां जद भारथ वाज जुवो, हक होय त्रषावंत साथ हुवो ॥

झिलियां मुंह घावांय हुंत झत्रै, पिंड वेदल व्याकुल नीर पत्रै ।
लडतां जद कानोय धीर लियो, कूड़ जद रांणक दाव कियो ॥

उर दादर घायक ग्रोळवियो, कल मेलण गोग कनै क्रमियो ।
भड़ रांणक गोगाय हूंत भणी, तैयवात हळाहळ मेळ तणी ॥

बध वीरम षाग दलो वहियो, सोइ भिंच दलो तंइ संग्रहियो ।
घर दोय मिलो कर हेत घणो, तिल सोच रैयो नहीं वैर तणो ॥

कर जोड़ उभै कुरनस करै, धुबवा फिर धीरदे हूँस धरै ।
हक होयकदादर फूट हियो, पोह नीर जीते जोइयों जुपियो ॥

सोषेय जळ सायर रो सधरो, बळ दाष विरोवर उबंबरो ।
क्रमियो जद रांणक कूड़ करै, धुबवा फिर धीरोय हूँस धरै ॥

जपियो जद रोदांय घात जुवो, हुवा सुर गोगो हुसियार हुवो ।
हुसियार संसार साधार जुवो, दायतार जूझार सलष दुवो ॥

सत्रु चुर करुरह गोग सही, गह पुर करां समसेर सही ।
सह जीत पूवीस दळां सबळां, दोउ वेध दरसिय दोय दळां ॥

रिष नारद जोगण रंभ रळै, बैयवार अड़ी सल लोह मिळै ।
गज सार अपार तोषार गुडै, रणकार अपार नंगार रूड़ै ॥

बैयवार उरां तरवार वहै, कोयवार चंडी जैयकार कहै ।
भय आयर कायर षेत भजै, सजहार गळै जटधार सजै ॥

वैयवार जुझार गजां मुरड़ै, जिण वार गोगोय जोयार जूड़ै ।
भुज धार बंभार दुरार भड़ां, छणकार षगां रणकार छड़ां ॥

रिण रार सुरां अयगार रूड़ै, भुंय भार उतारण काज भिड़ै ।
षग धार गजां असवार षपै, जैकार जट धार जैकार जपै ॥

घुब ताळ धुवाळ कराळ धुबै, बैताळ धुंवाळ पंषाळ वजै ।
सेयलाळ धड़ाळ भड़ाळ सिलै, हद षाळ नदी लोहाळ हलै ॥

जरदांळ घंटाळ दंताळ जई, भुरजाळ घड़ी विकराळ भई ।
वैयमाळ कंगाळ धराळ वहै, षैंगाळ दटाळ· भोपाळ षैहै ॥

प्रळै काळ सेलाळ धड़ाळ पडै, कड़ियाळ चुनाळ तइ कड़ड़ै ।
बंबाळ वियो रायपाळ बरैं, षिमनाळ षुराळ है नाळ षुरी ॥

धम चाळ अचाळ त्रमाळ घुरी, ध्रूवहाळ मराळ दंताळ धुषै ।
भोयपाळ पंखाय गूदाळ भषै, चोटीयाळ लिया अत वोम चड़ै ॥

परनाळ घड़ा लोहाळ पड़ै, घड़ियाळ वजै क्रिंरमाळ घड़ी ।
षेतपाळ रजै वैयताळ षड़ी, घर व्योम पताळ धड़हड़िया ॥

उर दोनुंय माजिय आहड़िया, जोइया अरु धूहड़राव जुवो ।
हर हूर रथां उदमाद हुवी, भूखीय थट ग्रीधण मांस भषै ॥

पड़ सूर धधकैय सीस पषै, गज थट्ट गरट्ट ऊछट्ट गूहां ।
अण थट्ट भिड़े उंमंगे असहां, षगझट विकट्ट कुवट्ट षिरै ॥

चट पट्ट आंमंषये ग्रीध चरै, तद रत विकट्ट उपट्ट तरै ।
घण मट्ट फुटै पर रिट्ट धिरै, घम चक्क भभक्क थर थरक्क धुंवो ॥

हुब ठक्क अरक्क थरक्क हुवो, कंधड़क्क बड़क्क बड़क्क कड़ी ।
सजड़क्क जड़क्क वैहै सजड़ी, सबड़क्क बड़क्क भषै संवळा ॥

गुडळक्क गळक्क गीघांण गाळ, रही ढक्क विठक्क धधक्कर जी ।
विरहक्क कटक्क ललक्क वजी, फिफरक्क फरक्क फरक्क फुरै ॥

घण डक्क त्रबंक्क त्रबंक्क घुरै, वप श्रोण धधक्क धधक्क वहै ।
रथ रंभ अरक्क थरक्क रहै, जग टोप कड़ी जडळक्क जड़ै ॥

पिड लोथ दड़क्क दड़क्क पड़ै, हुय हक्क अछक्क कढ़क्क हुबै ।
ग्रिधणक्क गहकां चंडीं गुरबै, घड़ दोय अकारण होय ॥

घड़ी षित सूर वरै रंभ हूरषड़ी, इम जोस दोउं दळ आफलियूं ।
तंटीय इळ अंत रळतळियुं, षित सूरज राह निवाज षड़े ॥

लषवेरो अनै नवकोट लड़ै, बेयभीठ अरीठ गरीठ भिड़ै ।
पांड़ोसांय रोठ रोठीस पड़ै, साळ सीस वळिठ्ठ सठीठ्ठ कियै ॥

दोउं वांम भकोयन पीठ दियै, झिलमां सिर वीजळ वाढ़ जड़ै ।
घण जांण कांसी ठठियार घड़ै, पड़ैय छक लोहांये सीस पषै ।।

थुड़वै विटीया रिणताळ धकै, धारै सिर अंबर धुहड़ियूं ।
अरियां सुंए गोगोय आहड़ियूं, रिण जंग तुरंग सुरंग रुळे ।।

पड़ कायर भंग विभंग पुळै, षुल डाडर चंग सुचंग षगां ।
उतवंग बरंग बरंग अंगां, धजरंग षतंग निढंग घड़ां ।।

भुज लाग उमंग निहंग भंड़ा, गुण बांण कबांण जुवांण ग्रहौ ।
वप ढांण वेधाण संधांण वहै, अत सांण वाषांण आरांण अषै ।।

पड़ सुर धधकैय सेस संषै, धुब घांण मथांण मसांण धरा ।
गिर बांण विमांण षड़ै गैहरा, किरबांण जिवांण केकांण कटै ।।

जमरांण गोगो अवसांण जुटै, असमांण सुं आंण विमांण अड़ै ।
जमरांण जुं आण आरांण जुड़ै, केयवांण वहै तनत्राण कटै ।।

जमरांण दोहुँ अवसाण जुटै, धुषवेध दळां निय सांण धुबै ।
हिंदवाण अनै तुरकांण हुबै, पैय जोगण सुरांय श्रोण पियै ।।

दंषैय छिब लुहर रंभ दियै, विडतां सुत वीरम देव वकै ।
शत्रु कोय धको नह साज सकै, भड़ धीर सधीरह ब्रंद भळे ।।

मुह मेज कमंधज हूंत मिळे, गज ढल्ल अचल्ल हमल्ल ग्रहां ।
ग्रहबल्ल सिंधू बबरे मल ग्रहां, बरघल्ल कगल्ल कड़ी बड़ड़ै ।।

जुध्धमल बेहुँ अड़ियल्ल जुड़ै, भड़ठल्ल अचल्ल वहै झटकां ।
हुय हल्ल उथल्ल पथल्ल हकां, कसमस्स कगस्स तुरस्स कटैं ।।

छड़ अंतस आतस तीर छंटै, धसमस्स धमस्स तुरस्स धरा ।
बैहु आफल सगंस ऊबंबरा, घज घायक वायक पूर गहूं ।।

दळ नाथ पठाइक भींच दहूँ, गुण सायक दायक सोर गजै ।
रिष रंभ विनायक सूर रजै, षळ खायक दायक कूंत षगे ।।

वरदायक गोगोय धीर वगै, सज धूहड़ धूहड़ राव सहीं ।
वध धीर तणी तरवार वही, अर सानण मारुय उस सीयों ।।

ते तोडिय पांण रलतलियो, पडिया, पग गोगौये काप पहां ।
दह धीर अनै सत्र दोय दहां, बैठोय सत्र जारैय उबंबरां ।।

हुय लोह छको सलषेस हरो, ढिय चाल, षत्री दल दोय दहै ।
रिण रांणक एक निलोह रहै, धिकतो रिण दीठोय षेड़ धणी ।।

तिह चाह हुई तरवार तणी कथ गा राणक गोगाय हूँत कही ।
सज आय अमां समसेर सही, जोइयो कोइ लेसीये आय जरे ।।

क्यूंय रीझ सगा नेह मूझ करे, सुण देष, कमंधज तेण समै ।
आवे लोय राणक रूक हमै, नर धुहड़ तो मन ध्रोह नहीं ।।

सज ओड़व मो दिस मूंठ सही, चित काहळ मूंछ ब्रूहां अड़िये ।
धरं मूंठ अरी दिस धूहड़िय, सामी जद राणक सालळियो ।।

वप गोगइ तैंमै विलकुवियो, सत्र साजण रूक षत्री समरी ।
कल जाणक नट्ट कुलट्ट करी, धेषे कर वेग गोगैय धरियूं ॥

तद राणक भागोयो देषयूं, वियमोह हुतां षंग वैग वुही ।
हद जंध उभै निरलंग हुई, ऊभी, रह कम भाजै मुझि अग्ग ॥

सज तालिय तालिय आव सगा, कहरांणक तालिय हास किसो ।
जुग की धोय गोगैय आप जिसो,चक च्यारुंय नामीय चंदवडौ ॥

पाड़ेय षल धूहड़ षेत पड़े, घर सूंघट गोगाय काप घणो ।
तेहां जांप जप्यो नव नाथ तणो, कटिये पग सेवग साद किये ॥

दरसाव इतै सिद्ध राव दियो, सुभरीभ जलंधर पाव सही ।
जग कीधोय अम्मर आप ज्युंहीं, हुय सिद्ध गोगो हुय आप मतैं ॥

इल अंबर सूरज चंद इतैं, सज षाग षलां सलषेस दुवो ।
हद सूर दसमो नाथ हुवो, सुध वायक पाहड़ षान् सही ॥

कव क्रित उकत पर माणकही, लष कोड़ करी अस पुत्र लहै ।
रिध सिध सदा अणषुट्ट रहै, मोमुज सात्रव दालद रोग मिटे ॥

पिंड आणद जोस कलाय गटैं, कर धूप प्रभातेय पाठ करैं ।
हुय जैत षगां सत्र दोष हरैं, धिन धिन गोंगा कनवज्ज धणी ॥

तैय पुरिय आस कविद तणी, कव प्रीत हुंता तव क्रीत कहै ।
रिव चंद जितै तोय नांम रहै,, सिषैय गुण भाषंय क्रीत सुणैं ॥

तन वाधेय दोलत तास तणँ, भव मत्त सारू कवि षांन भणी ।
तेय कीरत गोगैय राय तणी, घण सज्जन मात पित्र भ्रात घरैं ।।

करड़ँ दुष भ्राप सिहाय करैं ।।

संपूरण रूपग गोगादेजी रो ।
आठा पाड़ षानजी रो वणायोड़ो ।।

———

परिशिष्ट १

अथ वीरमदे सलषाव्रतरी वार्ता लिखीयै छै ।

राव सलषाजीरो बेटो वीरमदे वडो रजपूत । परभोम पचायण । वडो आषाड़सिध रजपूत । महेवै टीकै रावल मलीनाथजी तपै । सो वीरमदे निपट श्रोनाड़ । मलीनाथजीरा कथनमै नही । सो वीरमदे आठ पोहर अधूला रहै । अढंगा दांन दीजै । तिको वीरमदेजीरो जस सारा रजपूत बोलै । तिको वात जगमाल मालावतनै सुहावै नही । इतरामें सुहांणा गढसु देपाल जोईयौ किण हेक आंटै नगर महेवै आयौ । वास कीयो । घणो माल वित लेनै घणा अमोलक घोड़ा लेनै महेवै आयौ । देपालजीरै नै वीरमदेजीरै जीवां चैन घणो बंध्यो । देपाल नै वीरमदेजी भेला रहै । वरस २ तथा ३ वीता । इतरामै मलीनाथजी नै जगमाल देपालरै घणो माल वित देष नै मारणो तेवड़यौ । धावड़या विदा कीया । तरै आ वात वीरमदे सांभली । तरै वीरमदेजी देपाल जोईयासु आंण भेला हुवा । वीरमदेजी देपालजी बैठा वात करै छै । इतरामै धावड़या आया । आगै देषै तो वीरमदेजी बैठा छै । तरै काई सूझी नही । तरै पाछा वलि गया । जाय नै रावल मलीनाथजी नै जगमालजीनै कह्यौ । आगै वीरमदेजी बैठा छा । तरै काई सझि नाई । मालोजी जगमालजी, वीरमदेजी सुं घणा रीसाया कह्यो । वीरमदे घणी करडी तांणै छै । इतरामै वीरमदेजी मनमै विचारियो । देपालजीरै नै मांहरै हेत मालोजी करै । मारणो तेवड़यो तो देपालनै कुसले काढां । तो रजपूती पणो रहै । तरै देपालजीनै कह्यौ । देपालजी अबै महेवाधु परा नीकलौ । थां उपरै मालैजी नै जगमाल चूक तेवड़यो छै तरे देपाल आपरो माल-वित, घोडा, रथन-बषत लेनै नीकल्यौ । तरै राठोड़ वीरमदे सलखावत देपाल जोईयारै साथे होय कितरक दूर पुहँचाय आया । तरै वलतां नै वीरमदेजी नै देपाल जोईयै समाधि बछेरी दी । तिका ले नै पाछा महवे आया । तरै मालैजी वात सांभली । वीरमदे समाधि बछेरी ले आयौ । तरै मालै रावल

घणेरो बुरो मांन्यौ । तिण समीयारी साष —

नीसांणी

षबर हुई है वीरमै मन धीर वंधाई ।।
जायै सब ही लूणीयांण ाषे सरणाई ।
कुसली वर नो डाईयां संग जाय सिषाई ।।
समाधि आंण सलषीयांण तै असमाधि उपाई ।।१

वार्त्ता

अबै मालैजी नै वीरमजी सासती चित षांति पडती जाय । मलीनाथजी धरतीरा धणी तिको वीरमदेजीनै क्युं ही दे नही । वीरमदे दातार–भूझार । संसार उपरं वहै सासता धाड़ा आंणै । तिको इण भांति काम चलावै । गरीबरी प्रतपालणा करे । तिकौ स कोई चारण–भाट स कोई जस भेट ल्यावै । भलां बोलै तिको मालाजीनै सुहावै नही । आपरा रजपूतांनै वरजै । वीरमदे कनै मती जावौ । वैसो मती । धाडा साथे मति जावौ ।

सो एकरसुं वीरमदे सलषावत एक आप असवार नै एक साथे पालौ लेनै तठीनै मोहिलांरा गांव वठै बीकानेर परानै तटी हेरो घोडीयांरो कराय नै उठीनै चढीया । वरसालारा दिन था । सो उठै मोहिलांरो देस बापरावटी कहीजै छै । तठै घोडीयां निपट घणी छै । अमोलक हुवै छै । तिके छूटी मोकला तालर माहे चरै छै । सो उठै माछर डांस घणा छै । उठै वीरमदे जाय नै धूंईं कीनी । घोड़ीयां सगली माछरांरी संताई धूंई उपरि आई । तिको वीरमदे पांडवां नै मारिनै घोडीयां ले नीसर्यौ । तद मेहिलारी वडी वार वहै छै । सो सात वीसी कवर पाषती तलाव भूलता था । घोडा असवारीरा कायजै कीया उभा था । तठै किणहेक जाय नै बाहर घाली । तरै कह्यो सांहण रावलो लीयां जाय छै ! तरै कवरां कह्यो साथ पैलो कितरोयक छै । तरै उण कह्यो एक असवार नै एक पालौ लीयां जाय छै । तरै सगलां मोहिलारां कवरां वात मांनी नहीं । इसड़ो कुण छे ? इण ठोड़सुं एकल असवार एक पालो रावलो सांहण ल्यै । युं कहनै वाहर चढीया । आगै घोड़ी लीयां जाय छै । दिन घणो चढीयो छै । वीरमदेजी अमल घणो षाधौ थौ । तिणरी गरमी घणी हुई छै । तितरै मारग विचै एक गूजरांरो वाड़ो आयौ । तरै वीरमदेजी माहे गया । आगै गूजर वडो षष आवर ? छै । आगै गूजरी गरढी पीढी माथै बैठ्री उन करै छै । केयक माटा दहीरा भरीया छै । केयक माटा दूधरा भरीया छै । केइक माटा चाछरा भरीया छै । तठै वीरमदेजी नैड़ा आय नै कह्यों मात। डोकरी थोडी सी तो चाछ पाय.। तरै डोकरी वीरमदेजीनै कह्यौ बेटा दूध दही तो परमेश्वरजी घणो ही दीयो छै । तोनै भावै जिक्युं हेठो उतारि नै पी । तरै

वीरमदेजी घोड़ासूं हेठा उतरीया नै कटोरदांन काढीयौ । माटा उवरा आय नै माटो १ तो दहीरो पी गया । माटो १ दूध रो पी गया । उभा थका होज हाथ पोंत्यासुं लुग्रा । कुरजा विण कीधां चढि नै आघा हीज षडीया । नै लारासुं सातवीसी कवर वाहर दोडीया छै । तिको उण गूजरी रै वाडै षोजांरा षोजां आया । गूजरी नैं कह्यो माता गोरस पाय । तरै डोकरी माता कह्यौ ऐ माटा दही दूधरा भरीया छै । मोकलो चाछ माटा भरीया छैं । थांरी दाय आवै सो पीवौ । तरै कंवरांरो साथ घोड़ासूं उतरि नै हाथ पग धोवण लागा । आंष्यां छांटण लागा । चाकरांनै कह्यो पांणी पीवणरा वाटका काढि ल्यावौ । तरै पइसा ५ भरत छाछ भरी छोटी वाटकी ल्याया । सो सातवीसी कवरां वाटक्यां करि नै माटो १ दहीरो पीयो । तरै उण गुजरी कवरांनै पूछीयौ—बेटा थे सिध जावो छो । तरै कंवरां कह्यो माता डोकरी एक असवार नै एक पालो मांहरी घोड़्यां लीयां जाय छै । तिणरी वाहर आया छा । तै दीठो होय तो वताय । तरै गुजरी कह्यो में दीठो । अठै आयो थो । घोड़ासूं उतरिनै माटा २ दहीरा पी नै गयो छै । तिको वीरा थे अवै उण वांसै मती जावो । तरै कंवरां कह्यो माता डोकरी थूं म्हांनै किसै वास्तै वरजै छै । तरै डोकरी कह्यो बेटां उणरी इसड़ी फुरत दीठी छै । थांहरी पिण दीठी छै । थे मत जावो । तरै कंवरां कह्यो वाई थूं इण वातमैं समझै नही । कांई हुवो किण ही घणो षाधो तो । षाधां तो वल हुवै नही । तरै डोकरीरा तो वरजीया कंवर लागा नही । कंवरा घोड़ा आगा षडीया कोस ७ तथा ८ गया । वीरमदेजी नै कंवरांरै साथ निजर देठालो हुवो । तरै वीरमदेजी चाकर नै कह्यो । थूं घोड़ी लेनै हालतो होय । वीरमदेजी वाड़यांरो सांकडो सेरयो थो तठै उभा रह्या । सो उठै मोहिलांरा कंवर उतावला आया । तिको वीरमदेजी वडा तीरंदाज छै । तिको कवांण झाली । सो कवांण दीनी । तिको कंवर ५ तथा ७ तीरांसुं मारि लीया । जिणरै तीर लागै तिणरै दुवासु नीकल जाय । युं करतां पांच सात सिरदार काजु मारीया । तरै मोहिलांरो साथ भागो । तरै वीरमदेजी वांसै घातीया । घोडानै षुरी कराय नै उपरैं नावै । पाषतीसु तीरांसु मारै । वीरमदेजी हाथरो तीर पांवडा ५०० पांच सै उपरै जातो पडै । तरै मोहिलांरां कंवरां दीठो । नाठांही छूटां नही । तरै कंवरां उतरिनै दांतां तिणा लीया नै कह्यो मांने जीवता जांण द्यो । तरै वीरमदेजी कह्यौ हथीयार परा नांषो । तरै उणां हथीयार परा नांषीया । तरै वीरमदेजी सगलांरा हथीयार भेला कराय नै भारा बंधाया । भारा कवंरांरै माथै देनै मुंहडा आगै करि लीया । उणांरा घोडा था तिणांरी डोर उणांरैं हीज हाथे दीनी नै मुंहडा आगै करिनै मोहिलांरा कंवरांनै महेवै ले आया । सो इण वातरो सगलांहीनै इचरज हुवो नै वीरमदेजीरै अंतवर मांगलीयांणीजी थी । सो निपट समझवार छै । तिण वीरमदेजीनै कह्यो आपनै इसड़ी वात कीनी न जोईजै । एक तो आप इणांरो वित लीयौ । फेर इणांरी गत गमाई ईजत गमाई । तिको इण भांति श्री परमेश्वरजी अति सांसवै न छै । तरै वीरमदेजी मांगलीयांणीजीनै कह्यौ । अवै मांगलीयांणीजी थे कहो ज्युं करां । तरै मांगलीयांणीजी कह्यौ जिके गांव माहे च्यार सिरदार हुवै तिणांरी बेटी, थांहरै भाई बंधांरी बेटी इणांनै परणावो । इणांरा हाथीयार परा दिरावौ । इणांरा घोड़ा वित ल्याया तिको दन डायजामै परो दिरावौ । तरै वीरमदेजी भाई बंधांरी बेटी, रुडां रजपूतांरी बेटी परणाय दत डायजो सेझवाला देनै सीष दीवी । तिके आपरै ठिकांणै गया । तठा पछै

कितरेक दिने वीरमदेजी थटारै पैडै पातिसाही घोड़ांरी सोबत आंवती थी तिका वीरमदेजी मारि लीधी । घोडा लेनै महेवै आया ।

इतरामै घोड़ांरी पुकार पातिसाहजीरी हजूरि गई । तरै मलीनाथजी वीरमदेजीनै तेड़िनै कह्यौ । वीरमदे मांहरी कितरेक ठकुराई छै । जे पातसाही सोवत मारै तिणनै म्हे राषां । सवारै पातिसाही फोजां आवती तरै म्हा वतै थांरो उपर कोई होसी नही । थे थांहरो सूल देषनै रहो । तरै वीरमदेजी रीसायनै कह्यौ । मांहरो फाञ्यो म्हे हीज सीवसां । इतरामै वीरमदेजी उपरै पातिसाही फोजां बिदा हुई । तिका महेवा नजीक आई । तरै पातिसाही फोजांरा प्रधान मलीनाथजी कनै आयां । कह्यो । थांहरै भाई वीरमदे पातिसाही सोबत मारी तिको किसै वासतै ? कैतो थे घोड़ांरो मन मनावो । नही तर म्हे थांहरो देस षराब करसां । तरै मलीनाथजी उकील प्रधांनांने कह्यौ । म्हे तो पातिसाहरा हुकमी छां । ओ वीरमदे नै ऐ थे । थांहरी दाय आवै ज्युं करो । इणरा गांव पिण जुदा छै । मांहरा कथनमै औ न छै । थांहरी गता गम आवै ज्युं करो । तितरै पातिसाही फोजां महेवासुं निपट नजीक आई । मालैजी उतर दीयो तिणरी षबरि वीरमदेजीनै हुई । तरै आपरा साथरां रजपूतांनै कह्यौ । आपे पातिसाही फोजासुं वेढि कीयां पड़प नावां । मालैजी नै जगमालजी तो पोत काढि दिषाल्यौ । आपरी वसीरो लोक हतो तिणनै थलीनै विदा कीयो । वडो बेटो देवराज लोकरै साथे दीयौ तिको वसी लोकनै लेनै थलवट माहे गयौ । आप असवार २०० साथे लेनै सेभवालो १ मांगलीयांणीजीरो साथे लेनै टालो दे गया । तिको जांगलुनै षडीया । वांसै पातिसाही फोजा हुई । आगै वीरमदे नै पाछै पातिसाही फोजां । अत्रै वीरमदे सलषावत नै बाहादर ढाढी नीसाणी कहै ।

नीसांणी

मोहर वीरम वांसै षंधार जांगिरु आया ॥
वीसल मोकल भारमल बड़ हठ रचाया ॥
जिगटै हथ कटार मल पुत्र मुंजै जाया ।
वीरम कारण सांपलै सिर कीया पराया ॥२*

वार्त्ता

अत्रै वीरमदेजी पातिसाही फोजां लीयां जांगल आया । जठै उदो मूजावत सांषलो ठाकुर राज करै । सो जांगलुंसु कोस १ नैड़ा आया । तरै आदमी २ मातबर वीरमदेजीमेलनै

* यह नीसांणी वीरवांण की नीसांणी सं० ३८ का परिवर्तित रूप है ।

सांषला उदा मूजावतनै कहाड़ीयौ जे मांहरै वांसै पातिसाही फोजां छै। सो था वतै मांनु राषीया जाय तो म्हे माहे आंवां। तरै उदै मुंजावत उठिनै आपरी मांनै पूछीयौ। माजी साहिब जो जांगलुंरै ओलै आज महेवो आवै तो आंणीजै कै न आंणीजै। तरै मां कह्यो बेटा उदा आ देही कारमी छै। रजपूतरी वट छै। किणहेक आंठै आवसी जिकुं होणहार छै सो होसी। ओ ओसर आय वण्यौ छै तो चूकज्यौ मती।

तरै उदो मुंजावत सांमो जायनै वीरमदेसु मुजरो कीयौ। घणौ आदर भाव मनुहारि करिनै वीरमदेजीनै कोट माहे आंणीया। इतरामै प्रभाते ही लांरा लगी पातिसाही फोजां आई। तिणसु उदो मूजावत जायनै सांमो मिलीयो। तरै पातिसाही फोजां माहे जिके रुड़ा मांणस उमराव था त्यां कह्यो। म्हे इतरी दूर वीरमदेनै मुढा आगै कीयां आया छां सो वीरमदे थांहरा कोट माहे छै। तिको वीरमदेने उरो सूंपो। तरै उदै मुजावत सांषलै ठाकुर कह्यौ। जे क्युं सूंरज छाबडै ढकीयो रहै नहीं। तिको वीरमदे मारा घरमै समावै नही। आप डेरो करावो। सवारै म्हे समझनैं जाब देसां। तरै पातिसाही फोज डेरो कीयो। घास पांणीरो जाबतो करायौ। तुरक पिण ठंढा पडीया। मन माहे जांणीयो सवारै मांनै वीरमदेनै सूपसी।

उदो मूजावत कल़विकल़ करिनै कोट माहे आयो। वीरमदेजीनै कह्यो जे पातिसाही फोजां निपट सबली आई। जे जांगलुरा कोटसुं धको सहणी आवै नही। उदै मूजावत वीरमदेजीनै कह्यो जे आप हुकम करो तो राजरा मुंढा आगै लडिनै कांम आवां। जे राजरी दाय आवै तो घोड़ा ऊंट'र रजपूत लेनै आवां तरै वीरमदेजी मनमै विचार्‌यौ। जांगलुरा कोटमै तो रह सका नहीं। तरै वीरमदेजी घोडा ऊंट बलद परची उदाजी कनासुं लेनै देपाल़ जोईयारा देसनै रातूं रात षडीया।

वीरमदेजी तो देपाल जोईया कनै गया। तुरकरी फोज उठै हीज रही। तरै प्रभाते ही निबाब फोजरै नायब उदा मूजावतनै बुलायौ। तरै उदै आयनै मुजरो कीयो। उदैजी आपरा साथनै कोटरो जाबतो दे आया था। कोटरी पोल़ सैठी जड़ मेलज्यो। इतरो जाबतो करि नै उदोजी तुरकां कनै आया। तरै तुरकां कह्यौ उदाजी वीरमदेनै उरो ल्याव। तरै उदै मूजावत कह्यो। वीरमदे मारा घरमै समावै नहीं। थे थांहरी षबरि करल्यौ। कोट जोयल्यौ। वीरमदे तौ देपाल़ जोईयारै देस गढ सुहांणानु षडीया। तरै मुगलां उदा मुजावत नै पकडीयौ। तिको उदारी पग सूं षाल पाडणी मांडी। तरै उदारी मा जांगलुरा कोट उपरा चढनै जोवती थी। सो उदारी षाल पाडतां दीठी। तरै उदारी मा मुगलांनै कह्यौ हेलो

पाडिनै । वीरमदे तो उदारी थोपरीमै छै । पगांरी षाल माहे न छै । सो थे उदारी षोपरी पाडौ । ज्युं वीरमदे नीकलै । तरै तुरकां कह्यो आ कुण छै । तरै किण हेक कह्यौ आ डोकरी उदा मूजावतरी मां छै । तरै तुरकां डोकरीरो वचन सुणनै उदानै परो छोड़ीयौ । तिको उदो जांगलुरा कोटमै आयो । वीरमदे तो सुहांणा नै गयो । आगै जोयांरो मांमलो करारो दीठो । तरै पातिसाही फोज अठासुं पाछी वली ।

वीरमदेजी जोईयांरै देस देपाल कनै गया । आगै जोईयौ देपाल बीजाई जोईया सिरदार दांण उगरै थो तठै दांणी चोतरै आया था । तिण दिन वीरमदे सोंहांणारै तलाव आंणि उतरीया था । सषरी छांह देषनै देपाल जोईयो दांणी चोतरै बैठो थो । वीरमदेजीरो साथ देपालरी निजर आयौ । तरै आपरा भाई वंधांनै देपाल कह्यो । जिसड़ो राठोडांरो साथ हुवै जिसडा दीसै छै । तरै देपाल आपरा बेटा जैतसीनै कह्यौ तु षबरि ले आव । ओ साथ कठारो छै ? तरै जैतसी आपरै घोड़ै चढिनै षबरि करणनै आयौ ।

आगै वीरमदेजी बैठा था । उठै जैतसी आय जुहार कीयौ । वीरमदेजी पूछीयो आपो कुण ठाकुर छो । तरै जैतसी कह्यौ । हुं देपाल जोईयारो बेटो छु । तरै वीरमदेजी जैतसीनै आघो बुलायो । मिलीया । मिझमांनी कीनी । आपरा माथारी पाघ जैतसीरै माथै मेली । जैतसीरी पाघ वीरमदेजी मेलीनै कह्यो । जैताजी देपालजीनै वीरमदे सलषावतरो जुहार कहज्यौ । वीरमदेजी पाघ जैतारै माथै मेली ।

तरै सांवणी कनै उभो थो नै ढाढी बहादर हजूरि उभो थो । तरै सांवणी माथ धुणीयो नै कह्यो । जे वीरमदेरो माथौ इण धरतीरै आंटै जासी । इतरै जैतसी सीघ्र करि देपालजी नै षबरि दीनी । जूहार कह्यो छै । वीरमदे सलषावत छै । महेवासुं आया छै ।

तरै देपालजी उण सायत आपरो साथ लेनै वीरमदेजी कनै आया । बांह पसाव करिनै मिलीया । वीरमदेजीरो घणो आदर भाव कीयौ नै सुहांणागढ माहे वीरमदेजांनै ले आया साथ सांमांन सूधा । वीरमदेजी रै प्रधांन दोलो गहलोत छै । सषरी जायगा डेरो दिरायौ । घास पांणी घोडांनै दांणारो जाबतो करायो । भली भांति महमांनी करि नै वल कराई । घणा जतन कीया ।

इतरामै वीरमदेजी दोला गहलोतनै देपालजी कनै मेलिनै बात कराई । मांहरो च्यार महीना पड़पाव करो तो म्हे अठै रहां । तरै देपालजी मनमै विचार करिनै दोला गहलोतनै कह्यौ । म्हे महेवै आया जदि वीरमदेजी मांसु बडो उपगार कीयो छै । अठै घोड़ा रजपूत

गांव गोठ छै सो वीरमदेजीरा छै। दस भाई म्हे लूणा जोईयारै डीकरा करेछै। त्यांरा गढ सुहांणा माहे दस हेसा छै। त्युं इग्यारमो हेसौ वीरमदेजीरो छं। वसीरा लोकनै घर बताया इग्यारमो हेसो दांणमै करि दीयो। तिको रोजीना दांम ढाल भरीया आवै। आपरी रहवासनै वसीरा लोकनै गांव बडेरणो बतायौ। जठै वीरमदेजी जाय रहवास कीयौ।

वसीरां लोकां पिण जाय वास कीयौ। वीरमदे वडो रजपूत हुवो। पाकतीरा गांवांरा रजपूत आय नै वीरमदेजीरै वासि गांव बडेरणै वसीया। दिन २ ठकुराई वधती जाय। दांणरा नईसा निपट घणा आवै। तिके रुपीया ढालां भरिनै वहचीजै। वीरमदेजीरी ठकुराई निपट जोरै चढी। तरै देपालजीनै वले कहाड़ीयौ। इतरामै तो पड पाव न हुवै। तरै देपालजी टालिमा बीस पचीस गांव दिराया। वीरमदेजीनै वीरमदे घणां रजपूतमै जडांणो सात सै असवारांरी जमीत हुई। ठकुराई जोरै चढी। तिण समीयारी नीसांणी।

नीसांणी

ऐहज वीर मराठ वड सलषाणै जाया।
कढि कटकां लंघीया देपाल ठंभाया॥
वीर मनतुं सारै आंपणै घर मांहि पराया।
झलर पषरीया वतां वीरमदे आया॥
नेष थीयां अनिपाईयां पेषि पावत्र बदे।
चीहल मोहला साषले निव कढन बदे॥
लऐ मरोटह पटणु नित धरम वंहदे।
देस सम पेरांणीया सहवीर वंसदें॥
बडे दें पन धलीया परिहस षवंदे।
बहादर उचभि दांणीयां बडे रायसल षहंदे॥

वार्ता

वले वीरमदेजी दोला गहलोत साथे देपालजी नै कहाड़ीयौ। इणा रोजगारां उपरा-इणां गांवां उपरा म्हांरो पड पाव नही। अठै परदेसरो मांमलो। घोड़ा रजपूत राषीया जोईजै। चारण भाट आवै तिणनै च्यार टका विदारा दीया जोईजै। षटदरसण नै सेर आटो दीयो चाहीजै। आया गया रजपूतनै रोटी खवाडी जोईजै। सो थे क्युं दांण माहे इधको है सो कराय द्यो।

तरै देपालजी सुणिनै आपरा भायांनै कह्यो। वीरमदे वडो रजपूत छै। आपांसु बड़ो उपगार कीयौ छै। आपां कनै वीरमदे कठा पिण वायरी मारी कोयल आवै ज्युं आयो छै। सो थे इणांनु दांण माहे हेसो पांचमो कर द्यौ। तरै देपालजीरां भायां भतीजां कह्यौ। आप

वडेग छौ। आपरो कीयो कछू लायक छै। तरै वीरमदेजीनै हैसो पांचमौ कर दीयौ। तरै वीरमदेजी वड़ेरणै राजस्थांन घणा रजपूतांसु सुखै राज करै छै। वडेरणो गांव मुहांणासुं सातां कोसां उपरा छै।

अबै कितराइक दिन वितीत हुवा। तरै वीरमदेजीरा लोक रजपूत जोयांरी धरतीरो विगाड घणो करै। तरै देपाल नै सगला कहण लागा। आ थे किसी उपाधि घाटी। वीरमदेजीरा लोक दीठै दावधर। तीरो विगाड निपट घणो करै। तरै देपाल जोईयो गाडी जोतरि नै गांव वडेरणै वीरमदेजीनै ओलभो देणनै आया। आगै वीरमदेजी मांचै बैठा दाड़ी संवराता था। सो देपालजी आयनै जुहार कीयौ। सो वीरमदेजी मांचै बैठां हीज जुहार कीयो। सांमो मांचो पडीयो थो। तठै देपालजीनै कह्यो थे बैसो। सो देपालजी मन मांहि अटक लीयो। जे धरती मांहरी मांहि रहै नै मो आयां उठि उभो न हुवै। तरै देपाल बोलीयो। वीरमदेजी म्हेतो थांसुं काई भुंडी न कीधी छै सो थे मांहरी धरतीरो विगाड करावो। तिणरी साख।

नीसांणी

वीरम असी तो साभ्भि कै किते गुनह जाय खवंदे।
मुणे सलष वनीडं कीया हुरतांण फुरंदे॥
हैकण थेक न मावही दुय खग लोहंदे।
हेकण भ्फल न मावही दुहुँ सीह मुकंदे॥
जोईयां भाल पहडीयै कांम चालै मंदे।
दुय घर डायण परहरै गांवै विढहंदे॥

वार्त्ता

देपाल वीरमदेजीनै कह्यौ। थे मांहरी धरती माहे रहिनै मांहरा हीज देसरो विगाड करावौ छो। सो भली वात। एक घर तो डाकणि हुंवै जिका ई परहरै छै। तरै वीरमदे कह्यो देपालजी थे कहो तिका वात साची। जो डाकणि भूखी हुवै बाहिरलो न मिलै तरै घररा नै षायक न षाय। तो बीजारी किसी वात। नीसांणी तिण समीयारी।

नीसांणी

वडा दलै देपालदे हर पाल सरोवै।
मदो लूणै हंदीयै सबल जांधोवै॥
मुह अषै वीर मराठ वडए नलहन रोवै।
डायण किण हीन परहरै जो भूषी होवै॥*

---

* यह नीसांणी 'वीरवांण' में प्रकाशित नीसाणी सं० ४३ और ४४ परिवर्तित रूप है।

वार्त्ता

तरै वीरमदेजी देपाल नै नाहर रो जबाव दीयो । जे थांहरा देसरो नाहर मांहरी वसीरा द्राव सगला मारीया सो थे मरवाया । तरै देपाल वीरमदेजी नै कह्यो । बड़ा ठाकुर इसड़ी वात अनाकरी कांई करै । नाहर किणहीरा भरमाया लागै । थांहरै जो किण ही वात दिसा उपाव करणो हुवै तो थे जांणो । तिण समीयारी ।

नीसांणी

दला कु लाजै तसी लो झार जूवारा ।
चोहिल सांजि अपणां वीर चडै सवारा ॥
तु लेषो लषिवाईयै रेवंत सतारा ।
वीरम देस दिषावीया सिर देवण हारा ॥
वीरम न्याव न भाव ही अनीयाव पीयारा ।
सेई रोजे भिस्त जाय त्यां न्याव पीयारा ॥

वार्त्ता

देपालजी वीरमदेजी नै कह्यो थांहरै नै मांहरै वात विगाडी छै । अत्रै लौकनै वरजजो विगाड़ करण देज्यो मती । विगाड़ कीयो तो अत्रै विगड़ैली । तिण समीयारी ।

नीसांणी

राठोडां नै जोईयां कालिआई न कंपै ।
अजकल्ह क आध्रमण पग वहि सेजंपै ॥
नैंडो घेह न लब्भही वीरमां मन दषे ।
सरणागति तुम आवीया जल नावक नषे ॥
सै नर वीरम दिठीयां किरणालां कंपे ।
मीजां सिसिरं छत्रालीयां देवंगां चषे ॥
सचा धरिया वीर नांम जिण पुत्र सलषे ।
वीरम जांण अजांण होइ भै देवण सपे ॥

वार्त्ता

देपालजी तो वीरमदेजी नै ओलभो देनै घरे आयो । तिण समै भाटी बूकण वैर सीयांण नाले आयौ । तरै देपालजी बूकण भाटी रै परणीयौ । तरै दोलै गहलौत रांव वीरमदेजी नै

कह्यौ । रावजी जोईया तो आगै ही चोवीस हजार घोड़ांरा धणी छै । ठठा भखर रो पातीसाह मृगतमायची जिणरै परधांन बूकण भाटी छै । तिणरै देपाल परणीयौ । अबै आपणै हाथ आंवणसु रह्या ।

तरै वीरमदेजी बूकण भाटीनै मारणरो उपाव मांडीयौ । भाटी बूकणनै नालेर मेलीयौ । सात बेटी छै । तिको आपनै वलेथांहरां भाई भतीजांनै परणावसां । नालोर झेलज्यो नै राज परणीजण पधारज्यो । सो उण वीरमदेजीरी वात सांभली थी । सो भाटी बूकण नालेर झालै नहीं । भाटी बूकण कह्यौ पहला वीरमदेजी मांहरै परणीजै तो पछै म्हे थांहरै परणीजसां । तरै भाटीयांरो नालेर वीरमदेजीनु ल्याया । सो वीरमदेजी नालेर झेलीयौ । मन माहे चूक तेवड़ नै । आ वात जसै लूणीयांण देपालजीरै भाई सांभली । वीरमदेजी भाटीयांरो नालेर झालीयौ । तिको चूकरो मतो दीसै छै । तरै जसै लूणीथांण देपालजीनै कह्यौ । वीरमदेजी चूकरो नालेर झालीयो । तिको भाटीयांनु मारसी । तरै देपालजी कह्यौ जसा भाई आ वात हुवां नही लाहोरसु सात कोस तलवडी छै । मारि सकै नही । धरती उभी छै । अबै वीरमदेजी नालेर झेलनै भाटीयांनै कह्यौ म्हांरै वैर घणी जायगा छै ! थे जाहर करो मती । असवार पचास साठिसु छांनो सिकाररै मिस आउं छु । थे कठै ही जणावजो मती ।

इतरो कहिनै भाटीयांरा आदमीयांनै सीख दीनी । पाछै वीरमदेजी सातसै पखरैत असवारांसु चढीया सो मजलां मजलांरा वीरमदेजी भाटीयांरी तलवड़ी गया । जायनै एक आदमी वधाईदार तलवड़ी मेलीयौ । जाय नै गोरवै उतरीया । आदमी जाय नै वधाई दीनी । तरै सातेई कवर भाटीयांरा सामा आया । आंणनै जुहार कीयौ नै ऊपरै तरवारि पडी । कंवरां नै मारि लीया नै वागां उपड़ी । आगै सांमेलो आंवतो थौ । सो बूकण भाटीनै सांमेला माहे मार लीयौ । गांव मारि लूटि रोस करि नै वीरमदेजी पाछा आया । लारै देपाल जोईया कनै भाटीयांरी फिरयाद आई । तलवड़ी मारी । तरै जसै लूणीयांण देपालजी नै कह्यौ । थांनै म्हे पहला हीज कह्यौ न थौ तिणरी साबरी ।

नीसांणी

देपालै कसमीर दे गल भणै न रोई ।
वीरम हइस तोलींया सलखाणै सोई ॥
कूटी पीटी तलवड़ी विवाह न होई ।
जसे जेही जाप दी तेवी ही होई ॥

वार्त्ता

वीरमदेजी पाछा आया तरै दोलै गहलोत कह्यौ । अबै अठै आपां नै रह्यां भलाई नही । सवारै आपां उपरै जोईया आवसी । तरै वीरमदेजी गांव वडेरणो छांडि नै रातो राति गाडां भार घालि [illegible] छै तठै आय नै

वीरमदेजी भाग फाटती समा गाडा छोडीया। तरै वीरमदेजी दोला गहलोतनै कह्यौ। जोईयांनै मारणरो उपाय करो। इसो विचार करि नै वीरमदेजी कागासरनै कवलासर रहै छै। इतरामै कासमीरदे भटीयांणी देपालजीनै कह्यौ मांहरा पीहररो वीरमदे नास कीयो। आ उपाधि थे क्युं राखी थी तिणरो फल आ देषौ वले देषसौ। कालंदार सरपनै घर मै घाल्यौ तिको आप घणी दुष पावसौ। तरै देपाल मनमै विचार्यौ हुं जाय नै मोहिलांनै तेड ल्यावुं छुं। मोहिलांरै नै वीरमदेरै आगै ही वैर छै। उणांरी घोडी आंणी थी। उणांरा सात आठ बेटा मारीया छै तिको उठीसुं तो मोहि आवै अठीसुं म्हे जावां तो विचै भिरडामै देनै वीरमदे नै मारि लेसां। इसो विचार करि नै देपालजी वहल १ जोतराय नै माहे बैस नै आदमी पांच तथा साथे लेनै रातो राति मोहिलांरा देसनै षडीयां जाय छै। सो कागासरनै कवलासररै गौरवे आय नीकल्या। सो देपालजी न जांणै आगै वीरमदेजी रा गाडा छै सो अजांण थका आया।

आगै वीरमदे समाधि वछेरी कुदावै छै। होकारा करै छै। तिके देपालजी साथीयांनु कह्यौ थें मोनै कठी ल्याया। आगै तो वीरमदे होकार करै छै। साथरां कह्यौ वडा ठाकुरां बीयौ मती। अठै वीरमदे कठासु। तितरै वीरमदेजी नैड़ा आयनै होकार कीया। तरै देपालजी अडायरो ओढि मांदरो मिस करि नै सुय रह्यौ। तितरै वीरमदेजी घोडी दोड़ाय नै वहल कनै आया। तरै वीरमदेजी देपालनै दीठो। तरै कह्यौ आज युं से कठीनै। तरै देपालजी सूतां हीज रांम रांम कीयौ नै कह्यौ मौसु भायां चूक तेवड़ीयौ यु कहै छै। देपालनै वीरमदेजी एक हुवा सोहुं आप कनै आयो छु। तै मोहिलांनै तेड़णनै जाउ छु सो आये भेला होय नै भायां नै मारसां। आपांरै धरती आधो आध छै।

तरै वीरमदेजी देपालजीनै घरे ल्याया। कुमाररै घरे डेरो दिरायो। वीरमदेजी मांगलीयांणीजीनै कह्यौ। म्हे आज एकलौ देपालजीनै तेड़ ल्याया छां नै दोला गहलोतनै बुलायो छै। तिको घर बैठां ही सिकार आई छै। तरै मांगलीयांणीजी वीरमदेजी नै कह्यौ। देपालजी तो थांरु काई बुरी न कीधी। भला थोक जिके देपालजीरा कीया छै। थे इसी विचारो। तिण समीयारी

नीसांणी

मांगलीयांणी वीरमा इक सीष सुणीयैं।
हेकण हथै जोईयां तो सांम ठंभीयै॥ ।२।
कालें रुंप न कटीयै जो छांह अजीयै।
मधी षधी नां मरै परमल काजीयै॥
जो मोहलांणी तांण होय तो अंग रोस जरीयै।

वार्त्ता

मांगलीयांणीजी देपाल कनै आया। वीरमदेजी तो अमलां मै चाक हुआ पोढ्या छै। दोलो गहलोत पिण आयो न छै। मांगलीयांणीजी देपालजीनै कह्यौं। देपालजी इसड़ी

वेला पडै तिण वेला थे पिण मां सु उपगार करज्यौ। ओ वचन याद राखज्यौ। थे परा उठो। वहल जोतरो। थे नीकलौ। रावजी सूता छै। दोलो गहलोत आयां थां उपरै तरवारि वाजसी। तरै देपाल वहल जोति नै रातो राति नीकल्यौ। इतरै दोलो गहलोत आयो। वीरमदेजी कह्यौ दोला वधाई देज्यौ। देपाल एकलों आंपारै हाथ आयो छै। तरै दोलै गहलोत कह्यो मारीयो कना नही। वीरमदेजी कह्यो अबै मारिल्यौ। तरै दोलो घावड्या साथे लेजाय कुमाररै घरै खबरि कीनी। आगै देखै तो देपाल नही। कुमारनै पूछीयो। देपाल कठी गयौ। तरै कुमार कह्यौ अठासु तो पोहर १ रात रो वहल जोतिनै नीकल्यौ। तिको खबरि काई नही। कठी ही गयौ। कोस ५ तथा ७ दोड्या पिण देपाल तो जातो रह्यो। दोडनै पाछा उरा आया। देपाल तो कुसले घरै पुहतो।

अठै वीरमदेजीनै दोलै गहलोत पिछतावो घणो कीयो जे देपाल घरै आयो कुसले जाय। तरै मांगलीयांणीजी कह्यो रावजी देपाल आपां सु तो खबरी कीनी थी नै आप उणांरो रजिक खायनै उणांनै हीज मारण तेवडो छौ तिको नारायणजी सांसवै न छै। पछै तो आप जांणौ। पिण वीरमदेजी रै मन मांनै नही। मन मै मारणरो डाव घणो ही करै छै। हर भांति करिनै जोईया मारिनै धरती खाबीजै। इसी वीरमदेजीरा मन मै वरतै छै।

इतरै होली आई नै गेहर वाजण लागी। सुहांणै गढ गेहर वाजै तिको ढोल निपट सरवो वाजै छै। तरै वीरमदेजी कह्यो जो यां ठाकुरांरो ढोल बोहत सरवो वाजै छै। तरै चाकरां कह्यो महाराज जोयांरै ढोल आंबारो छै। आंपणै ढोल लोहरो छै। तिको मधुरो वाजै छै। सोहांणै नै कागासर कोस १२ रो आंतरो छै। ठंढी रातरो ढोल निपट नैड़ो सुणीजै। तरै वीरमदेजी कह्यो आंपणै पिण ढोल आंबांरो करावां तो आछौ।

तरै कारीगरानै बुलाय नै वीरमदेजी कह्यो कठैक आंबो वढाय नै ढोल करावो। तरै कारीगरां अरज कीवी महाराज थलवट मै आंब नै फरास कठकै लाभे। तरै दोलै गहलोत कह्यौ जोईयां नै मारणरो उपाय करो छो तो आंपा हालिनै वीर धवल नांमा फरास वाढां नै ढोल करावां नै फरास जोयांरै पूजनीक छै। तिण उपरा जोईया आपांसु वेढ करसी तरै आंपे देपालनै मारि लेसां।

तरै दोलो गतलोत फरास वाढण नै गयौ। तरै वीरमदेजीरै वहु मांगलीयांणीजी छै तिका निपट समझणी छै। तिकण सुणीयो दोला गहलोतनै वीरमदेजी जोयांरो वीर धवल नांमा फरास वाढणनै मेलीयो छै। तरै मांगलीयांणीजी वीरमदेजीनै कहै।

नीसांणी

उहीज आवै रतडी सिर लाखै लोवै।
धोबी धोवै कपड़े मोटीयारां धोवे॥
चिरोज चवै सार बेष बहंदी होवै।
मांगलीयांणीनै सांषली एकायज रोवै॥
जे फरासन वढीयै तो कलिकेवी होवै।

वार्त्ता

वीर धवल नामां फरास वढाय नै ढोल करायो। तरै दोलै गहलोत कह्यो। अवै हुसीयार होज्यौ। सवारै आपां उपरि जोईया आवसी। इतरै फरास वाढीयांरी खबर गई। तरै सारां ही जोईयां मिल नै देपाल आगै पाघडी पटकी। कह्यो देपालजी घरमै पिसादि घालि नै जोयांरो माथो झुकायो पाघडीयां मै धूल पड़ी। जोयांरै पूजनीक फरास वाढ़ीयो तिको वीरमदे अबै पेट मै क्युं कर समावै।

तरै सगला जोईया भेला होय नै घोड़ो हजार २४ सुं चढीया। तिण माहे दलो देपालांणी मोहर वधीयौ। आपरा साथ सुं वधनै वीरमदेजीरी गायां लीधी नै गोहर आंणिनै वाहर घाणी। तरै वीरमदेजी चढण लागा। तरै मांगलीयांणी वरज्या। वडा रजपूत थे इणांरा इतरा खून कीया छै तो एक खून इणांनै ही बगसौ। पिण वीरमदेजी तो मांनै नही। तिण समीयारी।

नीसांणी

जो फारस न वढही तो कलिकेथी चलै।
मांगलीयांणी वीरमा धाय लगी पलै॥
किणहेक पड पण आंपणै धण लीया दलै।
हाकां सुणि वीरम ची जोईया दहलै॥
अठ वीस पुडअ कंपीया तिके उथल पथलै।
गह भरि वीरम गरजीया अरि तिही सलै॥
कलि अकथ कीधी सलष सुत जोईया मिल किलै।
छाडावत छिल तेम छर केहरि गज पिलै॥
वरी अपछर वीर वर मांखिण महलै।
कविता ढाढी वीर कहि जोईया पर जलै॥

वार्त्ता

मांगलीयांणीजी तो घणा ही पाल्या पिण वीरमदेजी न मांनी। सातसै साथ पखरैत असवारांसु चढीया। तिण समैरी।

नीसांणी

वीरमदे पीडाईयांता जिण पचवांणी।
समाधि नचै पिड पखरी चंगा केकांणी॥

वीरम पहरै कपड़े धोए सारक तांणी ।
राग रंगावलि अंग जिरह झमझपस आंणी ।।
वीरम चढीयां सब चढै सबें सलपांणी ।
मांणिक हरीया दोलीया वड थट फरांणी ।।
पाऊं थहै लूझणा जसदी करवांणी ।
वीरमनु केहा कहै कहै मांगलीयांणी ।।
जोतु वीरम सलषीयांण आगै लूणीयांणी ।
धीरे धीरे जोईयां आया सलषांणी ।।
मदो आय विलंब सी बगजे ही पांणी ।

वार्त्ता

वीरमदेजी तो वाहर चढीया । सगला साथसु जोईयांसु जाय नैदे ठालै हुवा ।

नीसांणी

वीरमस माधि कुदाईयां जेहा मालाला ।
झापे झापे आत्रीयो मोहिल मूछाला ।।
पाहु थट सलूझणा झाला लूबाला ।
सा ज्या तोनै जोईयां सलषांण रढाला ।।
एकै कांनी दोलीयौ के वीरम छत्राला ।
मदो तेजा उथक्या दल दो छै हीरा ।।
ओचक ढाहे दाढीयां तोह उपर बीरा ।
बहादर मदो बधीयाद्रि मायं गहीरा ।।

वार्त्ता

वीरमदेजी घोड़ी षमसाय नै आपड़ीया । मदो सगला कटक आगै छै । तरै मदानै वीरमदेजी दीठो । तरै मदा उपरि वीरमदेजी नांषीया नै आय नै मदानै तरवारि वाही । सोतरवारि तूटि गई । तिणरी साख ।

नीसांणी

चाबष लाया सलषीयांण छिडता जिण धुटी ।
थे कुलई यां न मिसरी घरसांण चिहूटी ।।

मदो दे सिरवालीया न सीस वींच चिमुढी ।
टेपे एकती फीयुं जांण चांच वहुटी ॥
तुटे होवै मिसरी वाच वहादर षूटी ।
भमदे तेग सलषीयांण किरवांणी तुटी ॥
तर मेषे लास लषोयांण छेड तुरंग उगांही ।
वीरम दुही मिसरी सारमांतांही ॥
तुटी होय मिसरी बहादर सरांही ।
वाहण हारा क्या करै जब फवै नांही ॥

वार्त्ता

वीरमदे तरवारि वाहिनै आपरा साथमै पाछो जाय उभो रह्यौ । वीरमदेजी पिछतावो करै छै । जे मांहरी वाही मदो जीवतो रहै तिको आज दीसै छै । यां रै हाथ षेत आवसी । जैतसी देपालांणी कह्यो दीठो जिका कर गयो छै । आज आपां सगलांनै मारसी । तरै जोईयां विचार दीठो समाधि वछेरी जैता थे फेरी छै । सो तोनै इणरी कीमत छै । तिको तु इगताली डाकै ढोल वजाय । ज्युं समाधि वछेरी नाचै तो वीरम देपालो हुवै । तो आंपे भेला होय नै वीरमदे नै मारां ।

इतरै वीरमदेजी वाग उठाई । वीरमदे नै आंवतो देष जैतसी इगताली ढोल वजायौ नै होकार कीया । तरै समाधि तो नाचण लागी ज्युं ढोल वाजै ज्युं घोडी नाचै । आघो पग नचातरै । तरै दोलै गहलोत कह्यो । वडा ठाकुर उरो आव । अबै परो मरावै छै । तरै वीरमदे घोड़ी पाछी वाली । तरै जैतसो पाछै आयनै घोडीरा पाछलां पगा रैं भटका री दीधी नै घोड़ी तो हेठी पडी । तरै वीरमदेजी लारानै उतरीया । तिणरी साषरी ।

नीसांणी

आंबदीया हीघ तीय न छोह छोही दगी सै ।
जैतल भाडी कराचली आष केही वगी ॥
समाधि दीयै क्युंनां रही त्रिगनालि विलगीं ।
उभकै देता जिण करैं त्रिहु होय पगी ॥
वीरम समाधि कूद ही होकारै देई ।
धाई धाई अखीयै ढोल वजैधाई जैतलघुई ॥
मिसरी सो वन जडाई उतरीया कमंध जै पगत्रडाई ।
वीरम समाधि गुभाय कै असमाधि उपाई ॥

वार्त्ता

अठै मदोनै वीरमदे दोनु लथो बथी हुवा। माहो मांहि कटार्‍यां वही। वीरमदेजी कटारी वाहै तिकौ मदो टाल जाय छै। वीरमदेजीरै कटारी लागी मरमरी मदो वीरमदेजीरी चोट फवणदे नही। तरै वीरमदेजी दांतां सु कटारी झाली मदानै बाथांमै झालि वीरमदे दांतां सु कटारी चलाई। सो मदोनै वीरमदे दोनु रिण षेत रह्या। तिणरी साख।

नीसांणी

मदो नै वीरमदे दल मझ समेत।
उ जोयो उ राठवड़ राजै छत्र पते॥
दुहु घती गलबथीयां दुहु अहथ घते।
जांणै छाजां वजीयां किरमाल उलते॥
मदो नै वीरमदे रिण रो है फबै।
उ जोयो उ राठवड़ मन दुहुँ गरबै॥
बहादर लूणै सलषीयांण वहिगए सलछै।
सझे हथ कटारीयां मतवालै षछै॥

वार्त्ता

वीरमदेवज कांम आया। तरै दोलै गहलोत पागड़ौ छाडीयौ। तरै सगलै साथ पागड़ो छाड्यौ नै आंमो सांमा तरवारयां भिल्या। तिणरीसाष।

नीसांणी

राठोडां नै जोईयां तेरी धुहकारा।
मांणिक हरीया दोलीया यड़ थाट करारा॥
रायाहु थटां लूझणा खांडा दो धारा।
वीरम पासै दोलीयै भलकीया उतारा॥

वार्त्ता

दोलै गहिलोत मांणिकदेनै कह्यो। मांणिकदे मदांणी मदाजीरै प्रवाडै तो वीरमदे। वीरमदेजीरै प्रवाडैमदो। वड़ा रजपूत सांमै मुहडै आव। तरै मांणिकदे मदांणी दोलो गहिलोत दोनु लथोबथी हुवा तरवार वाहि नै वेहु रिण खेत रहया। तिणरी सापरी।

नीसांणी

राठोडां नै जोईयां वाजी निकरारी ।
दोलै ध्रीहि मिसरी पुरसांख पलारी ।।
मांणिकदे बल छंडीयौ वडनरी करारी ।
मांणिक लड़ीया दोलीया हुँ ईम्द्र हारी ।।

वार्त्ता

मांणिकदे ने दोलो दोनु लड़ि नै कांम आया ! कलौ मोहिल नै जसो लूणीयांण दोनु लडिनै कांम आया । तिणरी साख ।

नीसांणी

आपे आपे आवीया मोहिल उदंडा ।
खवै खैडा चित्रकोट भरल भोरंदा ।।
बहादर ढाढी अखीया नीसांणी छंदा ।
चाकहि जांण उतारीया सिर जे सोहंदा ।।

वार्त्ता

अठै वेढ नीवडी । देपाल पाछौ जाय उतरीयो । बगतर उतारि नै देपाल जोईयौ अपूठो रिण जोवण नै आवै छै । निसंक थको पुनड़ा आहेडीरा हाथ पडि गया छै । पिण सावचेत छै । तरै पुनडै आहेडी देपाल नै आवंतो देख नै दोला गहिलोत नै कह्यौ । दोलाजी देपाल नै आंवतो देखौ छौ । थांहरो हाथ साबता छै नै मारै डांगडै तीर चढायज्यो तो देपाल नै पाडि राखु । तरै दोलै गहलोत विसनै डांगड़ो चढाय दयौ । पुनडै आहेड़ी पगांसु डांगडो झाल नै तीर दांतांसु झालिनै देपाल रै बगल मै झाटकी । तिको तीर दुवासु फूटि बगवल मै जाय लागो । देपालजी तो रिण खेत रह्या । जो यां रो माझी मारि राख्यौ । तिणरी साख ।

नीसांणी

धण हय भूती पुनडै जे पट पलोटी ।
चुण तरग सहुँ कढीया बे भरी क पोटी ।।
देपालै तन लाईयां वात करी न खोटी ।
चोगुणी कीनी पुनडै रावतां दी रोटी ।।

वार्त्ता

राठोड़ वीरमदेजी रो साथ सगलो कांम आयौ । जो यांरो साथ साढी तीन हजार लोक कांम आयो । देपाल जो यांसु मांगलीयांणीजी उपगार कीयो थो तिण सुं गांव वसी लूटी गई । तरै मांगलीयांणीजी नै से झवालै छै सांण नै आदमी ४ सायेदेनै मारवाडि नै पुहचता कीया ।

माल वित तो लूटि मै गयौ सो थलवट माहे चारणांरो काला उगांव छै तठै मांगलीयांणीजी आर छांनों रह्या । चूडोजी नांना वरस ५ तथा ७ मै छै । संवत १४४० वीरमदे जी कांम आया । काती वदि ५ राठोड वीरमदे कांम आयो । तिण समीया रो गीत हर सूँ बारट कहै—

गीत

वटाऊ वात कहो वीर मांयण, जोषम दीह तणौ जडीया ।
पोरस आयस कोई पूछै, पैला केता रिण पडीया ॥
विढण वारवांण कहो वटाउ, ऐता क्युं मैं आवडीया ।
सैहथ आप महेवा सांमी, पाडे माझी रिण पडीया ॥
वीरमसु देपाल विढंतै, अणी चढे नह उवरीया ।
राव जोयां अनै कमधज राव, राववहु भेला रहीया ॥
रावधूरा भई वीसलदे, करे काट अष साथ कीया ।
अंतेवरां न मु क्या, एकल पण पर भुंय साभ्रण हार पीया ॥

वार्त्ता

वीरमदे पुत्र रांव चूडो १, देवराज २, गोगादे ३, जेसिंग ४, विजो ५, देवराज वीरमोत वडो बेटो तिण नै वीरमजी महेवासु नीसरीया । तरै महाजन लोक वसी सगली दे नै थली माहे मेलीया था । सो लोक लेनै देवराज थली नु गयौ । तिको देवराजजी कालाउ सोम सिर विचै पूगलीयो को हर छै । तठै राज थांन मांडि नै रह्या । जेठांणीयां कनै तठै रहे छै । पमारांरी ठकुराई तद सहूज मै भागी थी सो थलवट माहे गांव हुरडावै आसाय चांके इक फुटकर रजपूत रहता । तिण कालाउ गांव माहे देवराज आय रह्यो थौ । सो ओ रजपूत दिन २ गलता गया ऐं धरतीग धणी होता गया । देवराजरी ठकुराई वंधी तिके देवराजो तउठारा उठै हीज रह्या । देवराज पुत्र राव्रतराजो १, दुरजन सल २, महिराज ३, पूनो ४, चाहडदे ५, गोगो ६, रांणो ७, खीमकरण ८ । इति राठोड़ वीरमदे सलखावतरी वार्त्ता ।

अथ गोगादे वीर मोतरी वार्त्ता--

गोगादे वीरमोत वडो रजपूत । सेवालै राजथांन वडो आषाडसिध । गोगादेनु मांणकी तरवारि जलंधरी नाथ दीधी । वडेरणै रैहता वीरमदेजी थकां एकै दिन रावल मालाजीत नु जगमालजी नु दसरावा उपर गोगादे मुजरो करण नै महेवै आया था । सो रावलजी उठै ही राषीयौ थो ।

एक दिन जगमालजी गोगादेजी कना भैसा नै झटकौ बुहाडीयौ सो गोगादेरा झटका सु भैसा रो माथो अलगो जाय पडयौ । तरै सगलै साथ झटकौ वषांणीयौ । तिको गोगा देरा वषांण जगमाल नै सुहावै नहीं । तरै जगमाल ओकर वचन बोलीयौ । भैसानै आगै पाछै

बांधिनै माथो चाटै तिणरा किसा बखांण । रजपूती पणौ गोगादेजीरो जद जांणा दला जोईयारो माथो इण भांति पाडैं तो बापरो वैर लेतो । इसो वचन जगमाल गोगादेनै सुणाय नै कह्यो । तिको गोगादेरा मनमै हुसार वही ।

गोगादे वरस ३५ री उमर छै । इतरै गोगादेजी जासूस मेलीया । तिकां जासूमी पजोय दला जोईयारी निगै लेनैं गोगादेजीनै आंण कह्यो । दलो जोईयो ढांणीयां रहै छै । आंमो सांमा गाडा उभा करिनै हेटै ढोलीयो विछायनै धणी धणीयांणी सुवै छै । फलांणा थल हेटै दला जोईयारा गाडा छै । इतरी षबरि जासूसां आंण दीधी ।

इतरा मै धीरदे जोईयो दला जोईयारो भतीज जिण जेसलमेर परणीजण जातां का कीनै कह्यो थौ जे आज कालिह सांवण आकरा बोलै छै । तिको अण चीतीया वैरीयां सुध को होय तिण सुं मो आयां पहली मोसर देषो तो वेगी षबरि मेलजौ । इसो कहिनै जांन चढो ।

अठै गोगादेजी ३०० रजपूतांसुं चढीया । तिको राती वाहो दीधो । दलोनै दलारी बहु रथांरा ओधणां हेठैं सूता छै । तठै आय नै गोगादेजी मांणकीनां मा तरवारि मेली । तिको दोय रथांरा ओधण नीचै धणी धणीयांणी सीरष पथरणो दोवड मांचो नीचै धरती एकण झटकासुं इतरा वाढीया । तिण समैरा ।

दुहा

सझि गोगादे साट, वाही वैरां वालवा ।
ओघट घरट निराट, दोय रथ ओधण वरभीया ॥१॥
गोगै वीरम वैर छल, ए वाही कुलवट्ट ।
दोय रथ ओधण वरत्रीया, सीरपइ सघट्ट ॥२॥
गोगै वीरम वैर छल, भली ज वाली रीस ।
मार्‍या दला जोईया, बटका कीया बतीस ॥३॥

वार्त्ता

इतरामै वितले नै पाछा वलीया । दला जोईया रो घोड़ो असवारी रो नांम पावटो तिको भूहरामांहि बाधो छै । तिणनैं मदा जोईयारी बहु कह्यौ । थारा असवारनै मारयो लूण रीता सीर वहो तो आ वेला छै । जेसलमेर जायनै धीर देनै वाहर घालि घोडानै छोडीयो । तिको जेसलमेररो मारग लीयौ । तिको जेसलमेररै गोरिवै जांती हीस कीधी । तिका धीर दे कानां सुणी ।

तरै तीजो फेरो लेता थां । तरै घोडै वले हीस कीनी । तरै धीरदे जोयो हथलेवो छुडाय नै चोथो फेरो विण लीधां चढीयौ । साथे रांणंगदे भाटी हुवौ । सातसै असवारांसु

इणां पिण पाधरा श्रो सांटीया गोगादेजी रा साथसुं देठालो हुंवौ । तरै गोगादेजीरै साथ तलाव रोकीयौ । बेहु साथ तरवारयां वागी । तिण समै जोईयां भाटीयांरा साथनै तिस लागी । तरै रांणंगदे भाटी गोगादेजी नै कह्यौ तु मारवडिरो छत्र मांहरो साथ त्रिसी यो पांणी विण पीधा मरसी तौ श्रगत जासी । तिणसुं मानै तलाव पांणी पावौ । म्हे पांणी पीनै तलाव थांनै पाछौ सूपदेसां थां विचै मां विचै कटारी उपरा हाथ दे कह्यौ श्रा छै । किण ही वातरो श्रपसोस जांणज्यो मती । रांणंगदे भाटी राम नमै धगो तिको कटारीरी पडदडी मांहि तीतर राखीयां छै । तरै गोगादे साच मांन श्रापरा साथसु श्रलगा जाय उभा रह्या । जोईयां भाटीयां पांणी पीनै फेर तलाव उपरा वेढ कीधी । गोगादेजी रो साथ सारो कांम श्रायो नै गोगादेजी लोहांसुं धापनै पडीया । गोगादेजी रा हाथ रो खडग विजैनांमा नव हाथ वधै । तिको रांणंगदे नै कह्यौ । वडा सगा श्रो मांहरो खडग विजैनांमा थांहरा हाथमै राषौ । तरै रांणंगदे बोल्यो । थे राठोड भाई छौ । थांहरो वेसास किसो । तरै गोगादेजी श्राप दिसी श्रणी कीधी । मूठि रांणंगदे भाटी दिसा करिनै हाथ पसारयौ । तरै भाटी षांडो लेण नै सलवौ श्रायो दीठै । तिण समै गोगादेजी छुरीसु उछाल मूठ हाथमै भाल रांणंगदे नै वाही । तिको जांणे सावलमै तांत वही । गोडां उपरा पडी । तिको रांणंगदे पूदां हुवांणा पटदे धरती पड्यौ ।

तरै गोगादेजी हसीया । दांत चोकारा मोटा छा । तिको देषनै भाटी रांणंगदे कह्यो । वल्या दांतांरो घोस । तद गोगादेजी कह्यो मांहरो कोई केडायत होय । तिको पांचे पचासे दिने वैर ले । तिको भाटी ठाकुरां कना लेज्यौ । तठासु गोगादेरो वैर भाटीयां रै माथै टाहरीयौ । संवत् १४४७ रा जेठ वदि १३ भुणीयारडा गांवरी पाषती तलाव उपरा कांम श्राया ।

कवित्त

चुडो चरुं सु गाल राव गुरु राव भणीजै,
त्रिजो वीर वीराधि लाप मै एक गिणी जै ।
गोगा देगिर मेर जिको नरपति नारायण,
जेसिघ दे जगपति श्रहित घण दांन परायण ।
देव राज दांनइ लउ परै,
सरणाई सुहडां जणा ।
कहीया प्रगट महि मंडले,
सात पुत्र वीरम तणा ॥१॥

वार्त्ता

सात सिरदार जोईयांरा कांम श्राया । गोगादेजीरा तीन सिरदार कांम श्राया । गोगादे पुत्र करमसी १. सहसमहल २. केला ३. सैसा ४. उदैकरण ५. सहसमलरां बेटां पोतरांनै टीबरी गांव पटै छै । केलारां बेटा पोतरांनै षिरज गांव पटै छै । उदैकरण गोगादेजी साथे

कांम आयौ। जेसिंघ पुत्र सूरो १, अल्हो २, नरो ३, तेजो ४, वैरो ५, इणैरा बेटा पोत्रा निनेउ गांव छै।

इतिगोगादे वीरमोत्तरी वार्त्ता।

भाटी रांणगदे गोगादेजी रै हाथ कांम आयौ। तिणरो बेटो तिण अरडकमल चुडावतनै मारयौ। तिणरो वैर राव चुडैजी काढीयो। पछै तिण आंटै केलण भाटी मुलतांनरी फोज ल्यायनै नागोर मराई। पछै तिण आंटै राव रिडमलजी आसणी कोट जाय नै भाटी देवराज सातलोत मारीयो। पछै वैर भागो।

तरै राव रिडमल रो बेटा सहु हुता पिण एक ना थो। रिडमलजी रो बेटो वैर भांजणरी वेका न थो। तरै सारां राठोडां कह्यों भाटी ठाकुरां नाथो नहीं आयो छै। तरै केलण भाटी कह्यां राठोड ठाकुरां मांहरै ही इसडा नथड भथड घणाही छै। तरै सारां राठोडां कह्यो ठाकुरां नाथो रिडमलौत बारै छै। तरै सगलां भाटी ठाकुरां कह्यो इण वातरो किसो सोच छै। नथड भथड केई छै। इण वचनरा आंटा उपरि नाथै अको केलणोत मारीयो। पछै नाथूरां बेटां केलण भाटीरां बेटां यणा दिनतांई वैर धषीयो। पछै राजा रायसिंघ बीकानेररो धणी जेसलमेर परणीयो तरै राजा रायसिंघ रावल भीमनै नाथूरां बेटां पोतरांनै अका केलणौतरां बेटा पोतरांनै भैला बैसांणीया। तद पूरां वैर भागौ।

रांठोड वीरमदेजी गढ सोहांणै जोयांरै मामलै कांम आया तरै मांगलीयाणीजी चुंडानै लेनै मारिवाडि माहे आया छां। नाथ काथलवट माहे कालाउ गांव छै चारणांरो तठै रह्या। आपो प्रकासीयो नहीं। मोल मजुरी करिनै पेट भरै नै चुडोजी वरस ७ तथा ८ मै छै। तिको गांवरा टोगडा चरावै। एक दिन चुंडो टोगडा चरावतो षेजडी हेठै सूतो छै। इतरामै एक कालंदार सरप चुडारा माथा उपरि फण करिनै बैठो छै। तिण समै आल्हो चारण जाति रोहडीयौ षेत देषण नै आंवतो थौ। आगै देखै तो चुडो मारगमै षेजडी हेठै सूतो छै। उणरी निजरि आयौ वासिग राजा। तरै चारण मनमै विचारियौ वात उल्याडी नहीं। इतरा दिनांमै इणडा वडारी ठीक न पडी। किणरो बेटो। किणरो पोतरो। जाति किसी। तरै सोच विचारिनै राजा वासिग नै कह्यौ गोग धरमी वडा चहुवांण श्रीं ताकि हुवः तो भली वात। तरै गोग धरमी तौ पयाल दाषल हुवो। तरै चुडा नै जगायने पूछीयौ बाबा तु कुण छै। साच कहि। घणो हठ करिनै पूछीयौ। तरै चुडैजी कह्यो हुं वीरमदे सलषावतरो बेटो छु। तरै चारण मन मै जांण्यौ आवात जुगत छै। अठै चारण सुभराज दीयो। कह्यो बाबा तुं मांहरो धणी छै। थारै माथै छत्र बेगो मंडसी। तुं धरतीरो धणी हुसी। तरै तुं मांनै कांहु देसी। तरै चुडै कह्यो बारटजी राज हुं धरतीरो धणी हुवौ तो राज मांगसो तिकुं देसुं।

तरै चुडानै लेनै चारण मांगलीयांणीजी कनै आयो। मांगलीयांणीजी नै ओलभो दीयो। मांत लिछमी राज मांहरा धणी इतरा दिन वात पल मै राषी। तरै चारण मा बेटां नै कपड़ा कराय दीया नै कह्यो रावल मालाजी रै नाई भीवो प्रधांन छै। तठै चालौ तो राजरी जमीत टहरावां।

तरै चारण मांगलीयांणीजीनै चुडानै साथे लेनै महेवै छांना आया। मांगलीयांणीजी तो गांव मैं छांना ओ ताकि राखीया। चुडानै लेनै भीवा प्रवास कनै गया। रांम २ कीयौ। हेठा बैठा। तरै भीवै प्रवास पूछीयो। बारटजी राज ओ मोटीयार कुण छै? तरै बारटजी भीवारा कांन मैं वात कही। वीरमदेजीरो बेटो चुडौ छै। मांगलीयांणीजी गांव माहे फलांणी जायगा छै। भीवाजी राज चुडो आपरै पोलै छै। बरदासत करावज्यौ। इतरी भलावणि देनै बारटजी सीख कीनी। पछै भीवो प्रवास मांगलीयांणीजी रै पगां लागा नै परची दिराई। कितराएक दिन तो इण तरै गुदरांन कीयौ। चुडोजी भीवा प्रवास कनै रहै सादो रजपूत रहै जिण तरै।

एक दिन मालोजी दरबार बैठा था। भीवो प्रवास चुडानै लेनै दरबार गयौ। मुजरो करि नै हेठा बैठा। इतरामै रावलजी नाडाछोड करण नै उठीया। तरै चुडै उठिनै जोडी आघी कीनी। तरै रावलजी सांमी निजरि देनै जोयौ। नाडा छोड करिनै पाछा पधारया। तरै भीवानै पूछीयो। भीवा! ओ मोटीयार तो कनै कुण छै। तरै भीवै हाथ जोड नै अरज कीनी प्रथीनाथ तकसीर माफ हुवै तो रावलजी मुं मालिम करु। तरै रावलजी कह्यौ हुवै तिका परो कहो। थांरो कह्यो कोई लोपां नहीं। तरै भीवै कह्यौ महाराजरो थांना जाद छै रु छै। वीरमदेजीरो बेटो चुडो छै। तरै रावलजी वतै भीवानै क्यु कहणीआयो नहीं। तरै भीवारा कह्यासु सालोडी गांवरै थांणै मेलीयौ। तिको चुडो रोजिनार पावै।

अबै चुंडारो दिन वलीयौ। जिका ते वडै तिको पाधरी पडै। चुडारी ठकुराई बधी। चुडोवज वजीयौ। साथ सांमांन राखण लागौ। सो मालै रावल सुणीयो। तरै भीवा प्रवास नै ओलंभो दीधौ। भीवा तै आ किसी उपाधि पाटी। वीरम विरावीरा छोरु वधारया। तरै भीवै कह्यौ। रावलजी सिलामत आप आगै जिगा टाकुर कही छै तिको परीज हु सी। पिण मै तो घणो बधीयो क्युही दीटो नही। यु कहि नै भीवे वात टलाय दीनी। पछै तीण दिन सुं चुडै भुजाई मांडी। लोकां माहे घणो जस हुवौ। तिको रावलजी घणो दुख पावै। तरै रावलजी सालवडी जांणरो विचार कीयौ। तरै भीवै चुडानै कवाडि मेलीयौ जे रावल मालोजी साल वडी पधारसी। थे सादै सैलवेस माहे रहज्यौ। तितरै मालोजी पिण सालवडी आया। तरै चुडारो लवेस सादो सजै दीटो। तरै रावलजी कह्यौ। मा आगै जिणां ठाकुरां कह्यो तिणां रै मुंहडै धूंन पडसी। सरै रावलजी पाछा महेवै आया। वांसै चुडो इण हीज भांति वध वजीयौ।

इतरामै चुडानै माता नागणेची। तूठी प्रतक्ष होय नै चुडासु वातां करै। जठै चुडो जठै चांमंड। सो एक दिन चांमंड आधी रातिरी आय नै कहण लागी। चुडा जागै छै? तरै चुडै कह्यौ माताजी जागु छु। तरै माताजी कह्यो। सवारै जालोर दिसलै मारग व्यापारीयांरा पोठ्या ४ लुणसुं भरीया छै। माहे सोनारी ईंट छै। उपरा लूण छै। तु सोनो उरोलै। तरै चुडो पांच सात आदमी मातबर लेनै जालोररा मारगमै जाय बैठो। प्रभाते ही पोठीया लीयां व्यापारी आय नीसरी या। चुडो व्यापारीयांनै पकडि नै पोठीया ले आयो। मांहसु सोनो काढिनै परखी कीनी। बाकीरो सोनो गांवरी सीव मै धरती मै गाडि दीयौ। पोठीया पाछा लूण सु भरिनै महेवै पुहचता कीया। पछै व्यापारीयां नै छोड दीया। तिके रावल

मलीनाथजी कनै पाधरा फिरादु गया। तरै रावलजी चुडानैं बुलाय नै हकीगति बूजी। इणांरो माल क्युं लुटांणो। तरै चुडैजी अरज कीवी महाराज राह्जीरी दांण मांगतां बोलाचाली हुई। तर यां व्योपारयां दरबाररां चाकरां नै गोता दीया। तिण उपरा दिन १ तथा २ रोक बसांणीया। ऐ समाचार छै। तरै रावलजी वात सांची मांनने चुडा नै सीषदीनी। व्यापारीयांनै परा धुरकार दीया। झगमारो छौ। कुडी फिरीयाद क्युं करणी पडै। तरै व्योपारी फीटा पडिनै परा गया। रावलजी दीठो लूण मै माल कुण घालसी। कूडो तोफांन करै छै। अबै चुडाजीरै हाथ माल आयौ। खरचीरी बोहताज हुई। तिण समै मंडोवररी धरतीमैं तुरकांणी हुंती। धरती माहे फुटकर सा रजपूत हुंता नै कोटे चाईदा मांगलीया। सिध लइणांरी चोरारी हुंती नै मंडोवर तुरकांरो थांणो रहतो। तिको टेचा आसायच मांगलीया संधलां कना घासरी घरहरी मंगाई सो इणां सगलां ही आंणी। तरै मुगलां ईदांनै कहाडीयौ घासरी घर हरी थे पिण ल्यावज्यौ। तरै ईदां मनमै विचारि दीटौ। धरतीरै लोक कोई न छै नै आ वात भली न लागै। सवारै वले म्हांनै हीज वेगार पकड़सी। तरै ईदां माहे वडेरो हर धवल गोडावत उदो गोडावत ए दोनु भाई वडा रजपूत छै। सो इणां मुगलांसु जबाब कीयौ। म्हे घरहरी आंणसां। घरांनै सीष कीवी।

आंथमणरा भाई बंध बुलाय नैं आलोच कीयौ जे मुगल तो जोरै चढीया। आपे इण भांति पडप सकसां नही। जे थे क्युं बल बांधो तो आपे मुगलांनै मारां। तरै सगलां ही भाई बंधां कह्यौ मांहरै थे बडेरा टाकुर छौ। जिका थे करसो तिण वात माहे सगला टाकुर छां।

तरै ईदां गाडा घडरा एक सौ १०० घाससुभरीया। गाडां माहे पांच २ जणा कट रजपूत बेसांणीया नै गाड्यां जोतर नै मंडोवर गढरी तलहटी जाय उतरीया। हर धवल गोडा डे तउ दो गोडा उत गढ उपर गया। वडेरा मुगल हुंता तिणांनै कह्यौ म्हे घडरा गाडा आंणीया छै। तरै मुगल पांच सात सिरदार हुंता तिके पवास पासवांन लेनै गाडा जोवण नै तलहटी आया। मुगल घात माहे आया दीटा। तरै एकण समचै गाडांरा बध षोलीया नै लोह उडायो। मुगलांनै तो मारि लीया। मुगलांरा आदमी २०० मरण गया। इणांरा पिण आदमी पांच सात कांम आया। तुरकांरा माफी मरण गया। मादलीयो मारयौ नै फीटी गोट गढ मंडोवर ईदां उरोलीयौ। गढ लेनै ईदे हरधवल उदै मनमैं विचारीयौ। भाई बंधा नै कह्यो। गढ आंपणै पांचे पचासे दिने पछै ही रहसी नही। तिणसु गांव सालवडी रावल माला रो भतीज वीरमदेजीरो बेटो चुडो छै। तिणनै गढ दीजै। तरै सारां ही ईदां मिलनै कह्यौ। राज मांहरै वडेरा छौ। रावलीदाय आवै ज्युं करो।

तरे ईदो रायधवल सालवडी आयौ। आयनै चुडाजीनै कह्यो म्हे मंडोवरगढ लीनो छै। राज गढ पधारिनै टीको कढावो। तरै चुडौजी आ वात मांनै नही। जे गढ लेनै मांनै कुण देसी। तरै राय धवल ईदै आपरी बेटीरो नालेर दीयौ। तरै राव चुडो ईदांरै परणीयो। टीको काढिनै गढ मंडोवर हथलेवा मांहि दीयौ। राव चुडो मंडोवररो धणी हुवो। ईदा रजपूत हुवा सो आगै धरती माहे सीधलकै कोटेचा मांगलीया रजपूत हुंता। तिणांनै राव चुंडै काढीया नही। धरती माहे आपरा थका रजपूत राषीया। मांगलीयांणीजी आपरी मा राव चुडैजी महेवासु बुलायं लीया। मंडोवर ठकुराई चुडाजीरी वधती गई।

दुहो

इंदांरो उपगार, कदेय भूलो कमधजां ।
सहु जांणै संसार, मडोवर हथलेवै दीवी ॥१॥

तठा पछै राव चुंडौ नागोर उपरां गयौ । तरै नागोर मांसु तुरक नाठा । नागोर राव चुडै लीधी । पछै राव चुंडो नागोर हीज रह्यो । ठकुराई निपट जोरै चढी । राव चुडारा पवाडा घणा छै । इतरामै आलो रोहडीयो कालाउ गांवसु चुडानै धरतीरो धणी हुवो सुणीयौ तरै नागोर राव चुडा कनै आयौ । दिन पाच सात रह्यो । पिण ओलषै नही । तरै चारण समभावणी कीनी ।

दुहो

ऊकाला उकाह, तोनै चीत न आवै चुडरा ।
फाटो फुटो जाह, डीडवांणो डंडीया पछै ॥१॥

इतरा मै राव चुडै दुहो सुणनै तुरत ओलष्यौ । रावजी उभा होयनै मिलीया । घणौ आदर सनमांन दीयो । मास छ मास रावनै चारणनै लाष पसाव दीयौ । षिरज गांव सांसणमै दीयौ । चारटजी सीष कीनी । तिण समीयारी ।

नीसांणी

राव चुडाजड राव न रांणा, डगर उठीया वीरांणा ।
वहै मंडोवर कीया धींगाणा, लीया पाटनै डीडवांणा ॥
ढाढी वाचै कागद पत्र, चुडै राव उठाया छत्र ।

पछै राव चुडै मोहिलांरी धरतीसु निपट जोर पुहचायो । तरै राव चुडानै मोहिलां लाडणुरै धणी धुणपुरै धणी आपरी बेटी परणाई । सो राव चुडो मोहलांणीरै वसि हुवो ।

जगतमै राव चुडो प्रसिध हुवौ । वडो दातार षट दरसणरो आधार हुवो । रजपूतांरा भूलरा कनै रहै । हर हमेस माज रोज दीजै । भुजाई निपट घणी हुई । रोजीनो घ्रित १२ मण लागै । इण माफक बीजोई सराजांम हुवै । तरै भुजाई मोहिलांणीरै हवालै हुई । आप दारु पीनै मतवाला थका रहै । मोहिलांणी भुजाई दिन २ घटांवती गई । चुडाजीरै षरची भुजाईमै निपट सांकडी आंणी । तरै रजपूत था सो तो परा गया । घ्रत सेर अढ़ाई मै भुजाई आंण राषी । मोहलांणी एक दिन राव चुडाजीनै कह्यौ । रावजी म्हे थांहरै किसडेक सवार कीधी छै । बारै मण घ्रत लागतो तिको अढाईमै आंणीयो छै । तरै राव चुडै कह्यौ । रजपूतांणी तै तो वात विगाडी । माथा उपरि दुसमण घणा छै । तरै राव चुडै बारै आय नै दीठौ । देषै तो रजपूतांरो साथ कोई नही ।

सो चुडे पहला सगलांसु दुसमणीगीरी कीनी थी। तितरै केल्हण भाटी मुलतांन मुं सालमखाँननु ले आयो। सांपलो देवराजमुलतांन जायनै फोज ले आयो। फोजरा मुषी होयनै राव चुडा उपरि आया। तरै चुडानै आपरां रजपूतां कह्यो। रावजी सिलांमति साथ थोड़ो छै। आप नीसरो तो भलो कांम करो। तरै रावजी कह्यो। वडा रजपूतां नीसरिनै जावां कठी। तरै आप चुडोजी मरण रुपी होय छै टा नै कवरांनै काढणरो मतो कीयो तरै कवर रिडमलनै बुलायनै चुडैजी कह्यौ। म्हे तो अठै मरण रुपी हुवा छां पिण मांहरो मन टोड न छै। तरै कवर रिडमलजी कह्यो रावजी सिलांमति राजरा मन मांहि हुवै सो फुरमावै। आप फुरमावसो तिक्युं म्हे करिसां। तरै राव चुडै रिडमलजीनै कह्यो मांहरो जीव मरतां छोरो जो नीसरै जो मोहिलांणीरा बेटा कांनानै टीको द्यो तो।

तरै रिडमलजी कह्यो राजरो जीव सो हरो करो। म्हे कांनानै टीको देसां। जटासुघो कांनो धरतीरो धणी रहसी तटा सूधो ऊं कांनारी धरतीमै उभो रहिनै पांणी न पीयां। कहिनै कवरां इतरो सो साथ नीसरीयो नै राव चुडोजी १२ आसांमीयांसु वाजिनै नागोर कांम आया लारै सतीयां नागोर हुई सवत् १४६५ रा वैसाख वदि १४। राव चुडा पुत्र रिडमल १, भीम २, रिणधीर ३, अरडकमाल ४, पचांयण ५, सतो ६, कांनो ७, रांमो ८, पूनो, ९, सिवराज १०, लुभो ११, विजो १२, भोपत १३, राजिग १४।

कवित्त

रिडमल राजिगराव सतोहर चंद पटंतर,
रावत गुरु रिणधीर भुजां वल भींम समंगल।
कांनो अरडकमाल पुनो पोहवी अरिगंजण,
सहसमाल अर विजो लषे दल लुढो भंजण।
सिव राज रांमदे गोपाल कहि भोपति सेना सवला,
चवदै ही राव चुडा तणा हेक हेकसु अगला।

वार्त्ता

संवत् १४३२ राव रिडमलजीरो जनम संवत् १४६१। राव रिडमलजी चुडाजी टीकै बैठा। मुगल सेलमषांन मुलतांनरो। सोवायत राव चुडा नै मारिनै अजमेर रै पीररी जात आयौ। सो जात करिनै पाछो वल्यौ। तरै राव रिडमलजी साथ भेलो करिनै राव चुडारा वैरमै सेलमषांननै कुट मारयौ।

इति राव चुडारी वार्त्ता

सम्पादकीय टिप्पणी

परिशिष्ट संख्या २ के रूप में वीरवांएा सम्बन्धी तीन राजस्थानी वार्तायें दी गई हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

१ वीरमदे सलखावतरी वार्ता।

२ गोगादे वीरमोतरी वार्ता।

३ राव चूण्डारी वार्ता।

वीरवांएा का विषय इतिहास की दृष्टि से बहुत उलझा हुआ है। अब तक हमारे इतिहासकारों ने हजारों की संख्या में प्राप्त होने वाली ऐसी वार्त्ताओं को कपोलकल्पित मान कर इनको महत्व नहीं दिया है। वास्तव में ऐसी वार्ताओं का ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्व हैं।

"वीरवांएा" काव्य के अनेक अंश भी इन वार्ताओं में मिलते हैं, जिनसे काव्य की लोकप्रियता और सम्बन्धित विषय का ऐतिहासिक महत्व प्रकट होता है। साथ ही प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थों से भी इन वार्ताओं की पुष्टि होती है।

परिशिष्ट ३

पाठान्तर

				पृष्ठ	पंक्ति
१.	तूझ महर परताप	दूहा	१	१	२
२.	गाउं हूँ सलखाणियां	,,	२	,,	२
३.	सुणी जिती सारी कहूँ लहूँ न झूठ लगार	,,	३	,,	१
४.	वीरम जुद्ध विचार	,,	३	,,	२
५.	सोभ जैत समियांण	,,	४	,,	१
६.	कुल में किरणाला	नीसाणी	१	२	१
७.	वरवीर बडाना	,,	,,	,,	२
८.	साथलियां दल सामठा विरदां रुखवाला	नीसांणी	१	२	३
९.	दल पारथ वाला	,,	,,	,,	४
१०.	देश दसूं दिस दाखिया कीधा धकचाला	,,	,,	,,	५
११.	केवी धस गिर कंदरा	,,	,,	,,	६
१२.	जैत चढ़े गुजरात कूं	,,	२	,,	१
१३.	चड सूर चलाया	,,	,,	,,	२
१४.	चित उजल चोगान मैं तंबू तणवाया	,,	,,	,,	४
१५.	अखैनंदे मीलाणका	,,	,,	,,	५
१६.	देस दिसाया जैत कूं	नीसाणी	३	,,	२
१७.	गोयल षेड गमाड़िया डंणहूँत सवाई	,,	,,	,,	३

			पृष्ठ	पंक्ति
७५.	मूंछ धरै कर मालदे	नीसाणी ८	८	४
७६.	किलम अराथ त्यार कर	,, ,,	८	११
७७.	भुरजां भुरजां भिरड़गड़ बड़ नाल गड़क्की	,, ९	,,	१
७८.	सोर धुंवा रिग घार सूं धर अंबर ढंकी	,, ,,	,,	२
७९.	असमान कड़क्की	,, ,,	,,	३
८०.	भूप तुराटां भेलिया जुध कारण जक्की	,, ,,	,,	४
८१.	आलम आलम अधियो धज नेज फरक्की	,, ,,	,,	५
८२.	जूटा घल जक्की	,, ,,	,,	६
८३.	म्लेछ तड़फड़ें मारका गीधाण गहक्की	,, ,,	,,	७
८४.	वीरांण वभक्की	,, ,,	,,	८
८५.	आसीस अछक्की	,, ,,	,,	९
८६.	हूरां वर तक्की	,, ,,	,,	१०
८७.	यण घावां छक्की	,, ,,	,,	११
८८.	सेना देहुं संक्की	,, ,,	,,	१२
	हींस हुवै ऐराकियां	नीसाणी १०	९	३
	चढिया धूंसे वाजतां जंग भिड़िया जांणी	,, ,,	,,	४
	सादूलो किस सांसवैं	,, ,,	,,	६
	असमर लेकर उठिया	,, ,,	,,	७
	आप दरगह आविया	,, ,,	,,	८
	बिहंगां चढिया वीरवर	,, ,,	,,	९
	मीर छडालां मारिया लग बाग खिराणी	,, ,,	,,	१०
	कैतां अरियण कटिया	,, ,,	,,	११
	तेरै तुंगा भांजिया	,, ,,	,,	१२
	मीर गजां घड़ मारियां	,, ,,	,,	१४
	माले मिणियर देस में	,, ,,	,,	१५
	माल न भागा मुगलां	,, ,,	,,	१६
	साह दोऊं मन संकिया	दूहा ३५	९	१

		पृष्ठ	पंक्ति
कर मूंडै काले	नीसाणी ४७	३२	१३
झड़पे बूकण लेवसी	दूहा १२६	,,	१
तो सिर भूंड तमाम	,, ,,	,,	२
बूकणरो घर बूडसी	,, १२७	,,	,,
वेहीज मारण उठिया	,, १२८	,,	,,
सींहांनै सलषांणियां	,, १२९	,,	१
आदू अपती ओधरो	,, ,,	,,	२
मेले जादम मोद सूं	,, १३१	,,	१
वीरम दे चढियो बिडंग	,, १३२	,,	२
बूकणदे घर व्यावदां	नीसाणी ४८	,,	१
मन कूतां बहु मालरा	,, ,,	,,	३
जादुम चूक न जाणियो	,, ४९	३३	३
कपर करै कसमीर दे	,, ,,	,,	४
भाटी षागा भाजिया	,, ५०	,,	२
व्याव न कीधो वीरमै	,, ,,	,,	३
बूकण बेटां त्रेलिया	,, ,,	,,	४
चारण चारण कूकतां आराण जगांण।	नीसाणी ५१	,,	१
बामण भूगी वांसतां	,, ,,	,,	२
भागा मूडां भाठदां	,, ,,	,,	३
डोफा भागा डूमड़ा	,, ,,	,,	४
गहणा गायणियां तणां लूटे लिवराणां	,, ,,	,,	६
बूकण का घर षोदके	,, ,,	,,	१२
बूकण सहतां त्रेलियां	,, ,,	,,	१३
भठियांणी दै भागका	,, ,,	,,	१४
कह भाटी कसमीर कूं	,, ,,	,,	१५
सभ्रवां षागां साझिया घणो उतारे घांण	दूहा १३३	,,	१
अग भग रच आराण	,, ,,	,,	२
आयो पूगल सूं अठै बादै षडियां ऊंट	दूहा १३४	३४	१
देपालक कसमीरदे	नीसाणी ५२	,,	,,

		पृष्ठ	पंक्ति
वीरम सूं जुध बाजवा चित चेत न चल्लै	नीसाणी ६२	३८	७
जांरो सरणो ताकियो धणियाप धराईं	,, ६३	,,	२
वेहिज मारण ऊठिया सोहीज सहाईं	,, ,,	,,	३
मांगलियांणी मोटको	,, ,,	,,	४
आंपां कुसले काढिया	,, ,,	,,	५
मदु वै वै दिन मारकां	,, ,,	,,	६
कुछ वीरम कूं नह कैया	,, ६४	३६	१
बारै गांव ब बगसिया	,, ,,	,,	२
सात हजारां सांढिया दिन हेक दगाइ	,, ,,	,,	३
मोटल सिरषा मारिया जिण सकड जवाई	,, ,,	,,	४
षाधा षोसे षाजरू	,, ,,	,,	५
मधू अष्षे मारको संच	,, ,,	,,	७
गुना अनेकां जारिया दल्लै लुणियाणी	,, ६५	,,	१
सो फरहास कटाविया	,, ,,	,,	३
षाफर माल कुरांण कूं	,, ,,	,,	४
दुभ्भल मदु देपालदे	,, ,,	,,	५
अपरा बांधर आपणी केदेहां पाणी	,, ,,	,,	७
जावे घरसूं जोईया कै खूटै सलषाणी	,, ,,	,,	८
हरषत मन सूरा हुवा	,, ६६	,,	३
कहिया भड़ भायां दलै	दूहा १४३	,,	१
वीरम सूं जासो विढण	,, ,,	,,	२
लषवेरै जाजो मती	,,१४४	,,	२
साकुर अरपा पांडवनै	नीसांण ६७	४०	१
मदू सेर जवाद पर	,, ,,	,,	३
बगतर कुठा बीड़िया	,, ,,	,,	५
सार छुतीसूं साभ सब इम मदुवे आया	,, ,,	,,	६
जैतलसूं देपालदै सभ	,, ,,	,,	८

		पृष्ठ	पंक्ति
मिलिया अव सारा मरद	नीसाणी ६७	४०	६
चढीया सामंत सूरमा			
मुछां बल घल्लै	,, ६८	,,	१
हाथां खग झल्लै	,, ,,	,,	२
कर षवरां किल्लै	,, ,,	,,	३
घर राख्या दल्लै	,, ,,	,,	४
आप गवाला आषियो	,, ६९	,,	१
अण भंग कोपे ऊठियो	,, ,,	,,	२
ढोल वधाई वागिया	,, ,,	,,	३
मांगलियांणी सांभली			
धण उभी पल्लै	,, ७०	४१	१
रहजा नार वरजियो			
सुण मेरी गल्लै	,, ,,	,,	२
आज पडप्पण आपरै			
धन लीधो दल्लै	,, ,,	,,	३
कलंकी थूहल्लै	,, ,,	,,	४
फिर वीरम कूं आषियो			
कही माँगलियाणी	,, ७१	,,	१
जे तूं ठाकर सलषियांण			
ए भी लुणियांणी	,, ,,	,,	२
दल्लो अवगुण दाटवै			
गुण आदू जांणी	,, ,,	,,	३
कहियो कमधज रीसकर	,, ,,	,,	५
सांणी कूं कहियो सरस है	,, ७२	,,	४
आफू ले उमंदा	,, ,,	,,	५
बोहतवथीटे बेंलियां	,, ,,	,,	६
विध विधकर मन वेठियो			
षिम षून किताई	,, ,,	,,	७
मांगलियांणी पालवा	,, ,,	,,	६
गुना अनेका वारिया			
दल्लै सिपवाई	,, ,,	,,	१०
मूझ तणी कंथ मानकै	,, ,,	,,	१२
लषवेरै लाई	,, ,,	,,	१४
हूं पण कागद मोकलूं	,, ,,	,,	१५

			पृष्ठ	पंक्ति
मांगलियांणी माहरी	नीसाणी	७३	४२	१
हू ग्रलस बैठसूं	,,	,,	,,	४
ग्ररक पिछम दिस ऊगवै	,,	,,	,,	६
वेग घटै वीहंगेसको	,,	,,	,,	७
गोरष भूले ग्यानकूं	,,	,,	,,	८
धणिया धाडेता तणीं	,,	,,	,,	१०
हूं सुख कर बेठूं घरै	,,	,,	,,	११
उठिया ग्रवतारी	,,	७४	,,	१
हड़ हड़ नारद हसियो	,,	,,	,,	२
मांगलियांणी स्यामनै धूड़ बलो इण ढोल रे	,,	,,	,,	३
लष घोवां लारी	,,	,,	,,	४
रांणी पाणी रालियो	,,	,,	,,	८
सुणिये गल मारी	,,	,,	,,	१०
सांणी करी समांधकूं	,,	,,	,,	१२
दोय सहंस चढिया दुझल	,,	७५	,,	१
भाये भाये ग्राविया	,,	,,	४३	४
मांगलियां ग्ररू सांषला माणक हरियो दोलियो	,,	,,	,,	५
बड थाट बरवांणी	,,	७६	,,	१
त्रिहूं हजूरी तेण दिन	,,	,,	,,	२
लेवण झांक लगूंर ज्यूं	,,	,,	,,	३
दस सहंसुं चढिया	,,	७७	,,	१
हुऐ वर तक्की	,,	,,	,,	३
बोले बकबक्की	,,	,,	,,	४
पड पाधर पिंडे सीहस पेखै कुंजरां	नीसाणी	७८	,,	२
बन घेर विहंडे	,,	,,	,,	३
कर पोरस जड्डे	,,	,,	,,	४
उललिये गड्डै	,,	,,	,,	५
वरबा सूरां सांवतां	,,	७९	,,	१
गीधण ग्रामष गिलणकूं	,,	,,	,,	२
षेचर भूचर षलकिया	,,	,,	,,	३
जोइयो षडै जवाद कूं	,,	,,	,,	५

		पृष्ठ	पंक्ति
चूंडो हेरूसूं चवै पाछो वचन प्रियोग	दूहा १५९	५५	१
हूँ मामो मारू नहीं	,, ,,	,,	२
घर चित जा तूं धीरियां	दूहा १६०	,,	१
धीरप दे मिल धीरमूं	दूहा १६१	,,	१
सुगन लेट चढियो सरंस वेर लेण वरवीर	,, ,,	,,	२
चढ घूर चलाया	नीसाणी १११	,,	२
गड गड चबंक गाजिया	,, ,,	,,	३
असं षडिया उवां वैरे	,, ,,	,,	४
वैडा ऊजड बाटतै	,, ,,	,,	५
भाला आब ठहकिया	,, ,,	,,	७
सूतां फोही सबद सुण	,, ,,	,,	११
अव गल सीहो ऊचरै	,, ,,	,,	१५
अलगासूं अस षेड़िया	नीसाणी ११२	,,	१
ऊठ वेदला जोइया सूतो कन जंगे	,, ,,	,,	२
निस आधी षल नेमियो	दूहा १६२	५६	१
घण सिर फूटै घट	,, ,,	,,	२
पांगां फिरमर पाकड़े रिदे जालधर रट्ट	दूहा १६३	,,	१
लेवण वीजल वट्ट	,, ,,	,,	२
पूरां ही बल हट्ट	दूहा १६४	,,	१
ईसां पिंलंग घरट्ट	,, ,,	,,	२
नवगढ पत्त नरेस	दूहा १६५	,,	१
देउ सत्रियां साथ ले	नीसांणी ११३	,,	१
वाधावे गोगे कमध	,, ,,	,,	२
वैर पितारो वालियो	,, ,,	,,	३
तिलक कियो इण कारणै	,, ,,	,,	४
कहियो जद गोगे कमध	नीसाणी ११४	,,	१
सिर दूं मारो काटकर	,, ,,	,,	२
हैसु पमंग पड़ाहियो	,, ,,	,,	४
षवरां मेलूं धीरपै	,, ,,	,,	५
भिड बैनू भाई	,, ,,	,,	६

		पृष्ठ	पंक्ति
सूरा सिंघण थेह ज्यूं	नीसाणी १२०	५८	५
कूड़ा रांण कसुंस कर	,, १२१	,,	३
अभंग लुणाणी ऊठिया	,, ,,	,,	४
पोह धर मूछां पांण	दूहा १७१	,,	१
दिस गोगारे मलफिया	,, ,,	,,	२
जूटा षल जक्के	नीसाणी १२२	५९	१
सेल भचडका यूं सहे किरमाल कडक्के	,, ,,	,,	२
कैमर खरलक्कै	,, ,,	,,	३
मुष मारस बक्कै	,, ,,	,,	४
तेग धड़ां भड़ बीछड़े पड़ लोथ दड़क्कै	,, ,,	,,	५
भल जमरांणा जऊक्कै	,, ,,	,,	६
रथ भाण ठहक्कै	,, ,,	,,	७
आंण चढिया चक्कै	,, ,,	,,	८
गुणियण ऊभा बादमै बोहला जस बक्कै	,, ,,	,,	९
बरवा हूरां अच्छरा बेहूं हकबक्कै	,, ,,	,,	१०
दोनूं ओड़ां षेग दे लोही धकधक्कै	,, ,,	,,	११
जांणक भरिय पषालदा मुष षोल्या थिक्कै	,, ,,	,,	१२
धरती पड़िया धीरदे वायक मुष बक्कै	,, ,,	,,	१३
नर गोगा जक्कै	,, ,,	,,	१४
उदल हेसूं आहड़ै	नीसाणी १२३	,,	२
कंवर भीड़वा कारणै	,, ,,	,,	३
जोध बेहु रिणं जुटिया	,, ,,	,,	४
पड़िया अस भाड़ पाषती	,, ,,	,,	५
भिड़ियाल महा भड़	,, ,,	,,	६
पंषणियां भष पूरिया रिण रैणा रत्तड़	,, ,,	,,	७

———

सम्पादकीय टिप्पणी

वीरवांण का कर्त्ता ढाढी बादर विशेष शिक्षित नहीं ज्ञात होता। साथ ही एक ढाढी की कृति होने से इसको काव्य शास्त्र की दृष्टि से शुद्ध करने और प्रतियाँ लिखने के प्रयत्न भी बहुत कम हुए। मूल पाठ में किसी तरह का परिवर्तन करना हमने वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक नहीं समझा है। परिशिष्ट ३ के अन्तर्गत हमने देवगढ़ प्रति के पाठान्तर दिये हैं जिनसे अर्थ समझने में सुविधा रहती है।

वीरवांण में काव्य-शास्त्र की दृष्टि से अनेक भूलें दिखाई देती हैं किन्तु इस काव्य की पूरी शुद्ध प्रतियाँ नहीं उपलब्ध हो जाती तब तक मूल पाठ में फेर-बदल करना उचित नहीं ज्ञात होता।

परिशिष्ट ४

मुहणोत नैणसी का वक्तव्य

"बीरम महेवे के पास गुढ़ा बांधकर रहता था। महेवे में खून कर कोई अपराधी बीरमदेव के गूढ़े में आ शरण ले लेता तो वह उसे रख लेता और कोई उसको पकड़ने न पाता। एक समय जोइया दल्ला भाईयों से लड़कर गुजरात में चाकरी करने चला गया; बहुत दिनों तक वहां रहा और विवाह भी कर लिया। अब उसकी इच्छा हुई कि स्वदेश में जाना चाहिये, अपनी स्त्री को लेकर चला, मार्ग में महेवे पहुँचकर एक कुम्हारी के घर डेरा किया। कुम्हारी से कहा कि बाल बनाने के वास्ते किसी नाई को बुला दे। वह नाई को ले आई, बाल बनवाये। नाई की जात चकोर होती है, चारों ओर निगाह फैलाई, अच्छी घोड़ी, सुन्दर स्त्री देखी और यह भी भांप लिया कि द्रव्य भी बहुत है, तुरन्त जाकर राव जगमाल से कहा कि आज कोई एक धाड़ेती यहां आकर अमुक कुम्हार के घर उतरा है, उसके पास एक अच्छी घोड़ी है और स्त्री भी उसकी निपट सुन्दर मानों पद्मनी ही है। जगमाल ने अपने आदमी भेजे कि जाकर खबर लावो कि वह कौन है। गुप्तचर कुम्हार के घर आकर सब देख-भाल कर गये। तब कुम्हारी ने दल्ला को कहा कि ठाकुर! तुम्हारे पर चूक होगा। दल्ला उसका अभिप्राय न समझा, पूछा क्या होगा? बोली, बाबा तुम्हें मारकर तुम्हारी घोड़ी और गृहिणी को छीन लेंगे।

दल्ला—कौन ?

कुम्हारी—इस गांव का ठाकुर।

दल्ला—किसी तरह बचाव भी हो सकता है ?

कुम्हारी—यदि बीरमजी के पास चले जाओ, तो बच जाओ।

उसने चट घोड़ी पर पलाण रखा और स्त्री को लेकर चल दिया, वीरम के गुढ़े में जा पहुँचा। जगमाल के आदमी आये, परन्तु उसको वहां न पाकर लौट गये और कह दिया

कि वह तो गुढ़े को चला गया। पांच-सात दिन तक बीरम ने दल्ला को रक्खा, उसकी भले प्रकार पहुनई की, विदा होते वक्त उसने कहा कि बीरम ! आज का शुभ दिवस मुझे आपके प्रताप से मिला है, जो तुम भी कभी मेरे यहां आओगे तो चाकरी पहुँचूंगा मैं तुम्हारा रजपूत हूं। बीरम ने कुशलतापूर्वक उसे अपने घर पहुँचा दिया।

माजाजी के पौत्रों और बीरमदेव से सदा खटाखट होती रहती थी, इसलिए महेवे का वास छोड़कर वीरम जैसलमेर गया; वहां भी ठहर न सका और पीछा नागोर आया, जहां यह लगा गांवों को लूटने और धरती में बिगाड़ करने, परन्तु जब देखा कि अब यहां रहना कठिन है तो जांगलू में ऊदा मूलावत के पास पहुँचा। ऊदा ने कहा कि वीरमजी ! मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि मैं तुमको रख सकूं, तुम आगे जाओ, तुमने नागोर में उजाड़ किया है सो यदि वहां का खान नाहर लेकर आवेगा तो उसको मैं रोक दूंगा। तब बीरम जोहियावाटी में चला गया। पीछे से नागोर का खान चढ़कर आया, जांगलू के घेरा लगाया, ऊदा गढ़ के कपाट मूंद भीतर बैठ रहा। खान ने उसे कहलाया कि मालब और बीरम को हाजिर कर। तब ऊदा खान से मिलने के वास्ते गया और वहां कैद में पड़ा। उससे वीरम को मांगा तो कहा कि "बीरम मेरे पेट में है, निकाल लो।" खान ने ऊदा की मां को बुलवाया और उससे कहा कि या तो वीरम को बता नहीं तो ऊदा की खाल खिंचवाकर उसमें भुसा भरवाऊंगा। ऊदा की माता ने भी वही उत्तर दिया कि "वीरम ऊदा की खाल में नहीं है, उसके पेट में है सो पेट चीर कर निकाल लो।" उसके ऐसे उत्तर से खान खुश हो गया, अपने साथ वालों से कहने लगा—"यारो ! देखा राजपूतानियों का बल, कैसी निधड़क होती हैं।" ऊदा को कैद से छोड़ा और बीरम का अपराध भी क्षमा कर दिया। वीरम जोहियों के पास जा रहा। जोहियों ने उसका बहुत आदर किया, जाना कि यह आफत का मारा यहां आया है। पास खर्च न होगा सो दाण में उसका विस्वा (भाग) कर दिया और बड़ा स्नेह दरसाया। वीरम के कामदार दाण ऊगाहें तब कभी कभी तो सारा का सारा ले आवे और जोहियों को कह दे कि कल सब तुम ले लेना। यदि कोई नाहर वीरम की बकरी मार डाले तो एक के बदले ११ बकरियाँ ले लेवें और कहे कि नाहर जोहियों का है। एक बार ऐसा हुआ कि आभोरिया भाटी बुकण को जो जोहियों का मामा व बादशाह का शाला था और अपने भाई सहित दिल्ली सेना में रहता था, बादशाह ने मुसलमान बनाना चाहा, वह भाग कर जोहियों के पास आ रहा। उसके पास बादशाह के घर का बहुत माल, तरह तरह के गदेले गलीचे और बढ़िया बढ़िया वस्त्राभूषण थे। वे वीरम ने देखे और उनको लेने का विचार किया। अपने आदमियों को कहा कि अपन बुक्कण को गोठ जीमने के बहाने उसके घर जाकर मार डालें और माल ले लेवें। राजपूत भी सहमत हो गये। तब वीरम ने बुकण को कहा कि कभी हमें गोठ तो जिमाओ। बुकण ने स्वीकारा, तैयारी की और वीरम को बुलाया। वहां पहुँचते ही वह बुकण को मार उसका माल असबाब और घोड़े अपने डेरे पर ले आया। तब तो जोहियों के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यह जोरावर आदमी घर में आ घुसा सो अच्छा नहीं है। पांच सात दिन पीछे वीरम ने ढोल बनाने के लिए एक फरास का पेड़ कटवा

डाला। उसकी पुकार भी जोहियों के पास पहुँची, परन्तु वे चुप्पी साध गये। कहा हम वीरम से झगड़ा करना नहीं चाहते हैं। एक दिन बीरम ने दल्ला जोहियों ही को मारने का विचार कर उसे बुलाया। दल्ला खरसल (एक छोटी हलकी गाड़ी) पर बैठकर आया जिसके एक तरफ घोड़ा और दूसरी तरफ बैल जुता हुआ था। बीरम की स्त्री मांगलियाणी ने दल्ला को अपना भाई बनाया था; उसने जान लिया कि चूक है, सो जल के लोटे में दातन डाल कर वह लोटा दल्ला के पास भेजा। वह समझ गया कि दगा है। चाकर से कहा कि मेरा पेट कसकता है सो जंगल जाऊंगा, फिर खरसल पर बैठ घर की तरफ चला। थोड़ी दूर पहूँच बैल व खरसल को तो वहां छोड़ा और आप घोड़े सवार हो घर पहुंच गया। घोड़े के स्थान पर एक राठी जुतकर खरसल खींचने लगा, बीरम अपने राजपूतों को इकट्ठे कर रहा था। जब वे सलाह कर आये और दल्ला को वहां न देखा तब पूछा वह कहां गया है ? चाकर ने कहा जी! उसका पेट कसकता था सो जंगल गया है तब तो दलिया गहलोत बोल उठा कि दल्ला गया। बीरम ने कहा कि खरसल चढ़ा कितनी दूर गया होगा, चलो अभी पकड़ लेते हैं। राजपूत ने कहा खरसल छोड़ घोड़े पर चढ़ गया। इन्होंने एक सवार खबर के लिए भेजा। उसने पहुंचकर देखा तो सचमुच एक तरफ बैल और दूसरी तरफ आदमी जुता खरसल खींच लिये जाते हैं। उसने लौटकर खबर दी कि दल्ला तो गया। सब कहने लगे कि भेद खुल गया, अब जोहिये जरूर चढ़कर आवेंगे। दूसरे ही दिन जोहियों ने इकट्ठे होकर वीरम की गायों को घेरा। ग्वाल आकर पुकारा, बीरम चढ़ आया। परस्पर युद्ध ठना, बीरम और दयाल जोइया भिड़े बीरम ने उसे मार तो लिया परन्तु जीता वह भी न बचा और वहीं खेत रहा।

वीरम के साथी राजपूत गांव बड़ेरण से वीरम की ठकुराणी को लेकर निकले। मार्ग में जहां ठहरे वहां धाय ने एक आक के झाड़ के नीचे बीरम के एक वर्ष के बालक पुत्र चूंडा को सुलाया, परन्तु चलते वक्त उसको उठाना भूल गयी। जब एक कोस निकले गये, तब बालक याद आया, तुरन्त एक सवार हरीदास दल्लावत पीछा दौड़ा। इस स्थान पर पहुंचकर क्या देखता है कि एक सर्प चूण्डा पर छत्र की भांति फण फैलाये पास बैठा है। यह देख पहले तो हरिदास को भय हुआ कि कहीं बालक पर आपत्ति तो नहीं आ गई है। जब थोड़ा निकट पहुंचा तो सर्प वहां से हटकर बांबी में घुस गया और सवार चूण्डा को उठाकर ले आया, माता की गोद में दिया और सारी रचना कह सुनाई। आगे जाते हुए मार्ग में एक राठी मिला। उसको सब हकीकत कह इसका फल पूछा। राठी ने कहा यह बालक छत्रधारी राजा होगा। वे लोग पड़ोलियां में आये। वहां राजा लोग इकट्ठे हुए। चूण्डा की माता ने कहा कि मेरे पति से दूरी पड़ती है, मुझे तो उसी से काम है, इसलिए मैं सती होऊंगी। फिर चूण्डा को धाय के सुपुर्द कर कहा कि "पृथ्वी माता और सूर्य्यदेव इसकी रक्षा करें। तू इसे लेकर आल्हा चारण के पास चली जाना।" फिर चूण्डा की माता और मांगलियाणी दोनों सती हुई और साथ सब बिखर गया। चूण्डाजी के दूसरे तीन भाई गोगादेव, देवराज, और जैसिंह को उनके मामा उनकी ननिहाल को ले गये और

चूण्डा को आल्हा चारण के पास भेज दिया ! जहां धाय चूण्डा को सदा गुप्त रखती और भलीभांति उसका पालन पोषण करती थी।

राव वीरमदेव के चार राणियां थी ? भटियाणी जसहड़ राणा दे, जिसका पुत्र राव चूण्डा; २–लालां मांगलियाणी कान्ह केलणोत की बेटी, जिसका पुत्र सत्ता; ३–चन्दन आसराव रिणमलोत की बेटी, जिसका पुत्र गोगादेव; ४–इंदी लाछां, अगमसी सिखरावत की बेटी, जिसके पुत्र देवराज और विजपराज।

राव चूण्डा–जब धाय चूण्डा को लेकर कालाऊ गांव में आल्हा चारण के पास पहुँची, तो उससे कहा कि बाई जसहड़ ने संती होने के समय तुमको आशीष के साथ यह कहलाया है कि इस बालक को अच्छी तरह रखना, इसका भेद किसी पर प्रकट मत करना मैंने इसको तुम्हारी गोद में दिया है। चूण्डा वहां धाय के पास रहने लगा। कोई पूछता तो चारण कहता कि यह इस रजपूतानी का बालक है। इस प्रकार चूण्डा आठ नव वर्ष का हो गया। एक दिन बर्सात के दिनों में ग्वाल गांव के बछड़ों को लेकर जल्दी ही जंगल में चराने को चला गया था और चारण के बछड़े घर पर रह गये, तब आल्हा की माता ने कहा "बेटा चूण्डा ! जा इन बछड़ों को जंगल में दूसरे बछड़ों के शामिल तो कर आ।" चूण्डा उनको लेकर वन में गया, परन्तु दूसरे बछड़े उसको कहीं नजर न आये, तब तो रोने लगा। पीछे से चारण घर में आया चूण्डा को न देखकर माता को पूछा कि चूण्डा कहां है ? कहा बछड़े छोड़ने वन में गया है। चारण कहने लगा, माता तूने अच्छा नहीं किया, चूण्डा को नहीं भेजना चाहिए था। जब दूसरे बछड़े न मिले तो अपने बछड़ों को वहीं खड़े कर चूण्डा एक वृक्ष की छाया में सो गया। पीछे से आल्हा भी ढूंढता ढूंढता वहां पहुँचा तो देखा कि बछड़े खड़े हैं, चूण्डा सोता है और एक सर्प उस पर छत्र किये बैठा है। मनुष्य के पांव की आहट पा नाग बिल में भाग गया, चारण ने जा चूण्डा को जगाया, कहा बाबा तू जंगल में क्यों आया, घर पर चल। घर आकर मां को कहा कि अब कभी इसको बाहर मत भेजना। फिर चारण ने एक अच्छा घोड़ा लिया, कपड़े का उत्तम जोड़ा बनवाया, शस्त्र लाया और चूण्डा को सजा सजू कर महवे रावल मल्लिनाथ के पास ले गया। मालाजी का प्रधान और कृपापात्र एक नाई था। आल्हा उससे जाकर मिला, बहुत कुछ कहा सुनी की, तो नाई बोला, रावलजी के पावों लगाओ। शुभ दिवस देख चारण चूण्डा को राव मालाजी के पास ले गया और उसने बहुत कुछ धैर्य बधाकर अपने पास रक्खा। चूण्डा भी खूब चाकरी करता था। एक दिन रावल के पंलग के नीचे सो रहा और नींद आ गई। जब मालाजी सोने को आये तो पलंग तले एक आदमी सोता पाया। जगाया, चूण्डा को देख रावलजी राजी हुए। अवसर पाकर नाई ने भी विनती की कि चूण्डा अच्छा रजपूत है इसको कुछ सेवा सौंपिये। माला ने चूण्डा को गुजरात की तरफ अपनी सीमा की चौकसी के वास्ते नियत किया और अपने भले राजपूतों को साथ में दिया। तब खिखरा ने कहा कि रावलजी मुझको समझकर साथ देना। रावलजी ने कहा कि जो हमारी आज्ञा है। घोड़ा सिरोपाव देकर चूण्डा को ईंदे राजपूतों के साथ विदा किया। वह काछे के थाने पर जा

बठा और अच्छा प्रबन्ध किया। एक बार सौदागर घोड़े लेकर उधर से निकले। चूण्डा ने उनके सब घोड़े छीन लिये और अपने राजपूतों को बांट दिये, एक घोड़ा अपनी सवारी को रक्खा। सौदागरों ने दिल्ली जाकर पुकार मचाई, तब वहां से बादशाह ने अपने अहदीं को भेजा कि घोड़े वापस दिलवादो। उसने ताकीद की, माला पर दबाव डाला, तब उसने चूण्डा के पास दूत भेजा घोड़े मंगवाये। चूण्डा बोला कि घोड़े तो मैंने बांट दिये, केवल यह एक घोड़ा अपनी सवारी के लिये रक्खा है सो ले जाओ। लाचार माला को उन घोड़ों का मोल देना पड़ा और साथ ही चूण्डा को भी अपने राज्य में से निकाल दिया। वह ईंदावाटी में ईंदों के पास आकर ठहरा और वहां साथी इकट्ठे करने लगा। कुछ दिनों पीछे डीडणा गांव लूट लाया। तुर्कों के पडिंहारों से मंडोवर छीन ली थी और वहां के सरदार ने सब गांवों से घास की दो दो गाँडियां मंगवाने का हुक्म दिया था। ईंदों को भी घास भिजवाने की ताकीद आई तब उन्होंने चूण्डा से मंडावर लेने की सलाह की। घास की गांडियाँ भरवाई और हरेक गाड़ी में चार चार हथियार बंद राजपूतों को छिपाया। एक हांकने वाले और एक पीछे पीछे चलने वाला रक्खा। पिछले पहर को इनकी गांडियां मंड़ोवर के गढ़ के बाहर पहुंची। गढ़ के दरवाजे पर एक मुसलमान द्वारपाल भाला पकड़े खड़ा था। जब ये गांड़ियां भीतर घुसने लगी तो द्वारपाल ने एक गांड़ी में बर्छा यह देखने को डाला कि वांस के नीचे कुछ और कपट तो नहीं है। बर्छे की नोक एक राजपूत के जा लगी, परन्तु उसने तुरन्त कपड़े से उसे पोंछ ड़ाला, क्योंकि यदि उस पर लोहू का चिन्ह रह जावे तो सारा भेद खुल पड़े, दर्बान ने पूछा—क्यों ठाकुरों! सब में ऐसा ही घास है? कहा हां जी, और गाडियां डगडगाती हुई भीतर चली गईं। इतने में संध्या हो गयी, अंधेरा पड़ा। जो रजपूत छिपे बैठे थे, बाहर निकले, दरवाजा बंद कर दिया और तुर्कों पर टूट पड़े। सबको काट कर चूण्डा की दोहाई फेर दी, मंडोवर लिया और इलाके से भी तुर्कों को खदेड़ खदेड़कर निकाल दिया।

जब रावल माला ने सुना कि चूण्डा ने मंडोवर पर अधिकार कर लिया है तब वह भी वहाँ आया। चूण्डा से मिलकर कहा—शाबाश राजपुत्र! चूण्डा ने गोठ दी, काका भतीजे शामिल जीमे। उसी दिन ज्योतिषियों ने चूण्डा का पट्टाभिषेक कर दिया और वह मंडोवर का राव कहलाने लगा। चूण्डा ने दस विवाह किये थे, जिनसे उसके १४ पुत्र उत्पन्न हुए-रणमल, सत्ता, अरड़कमल, रणधीर, सहसमल, अजमल, भीम, पूना, कान्हा, राम, लूंभा, लाला सुरताण और वाघा। (कहीं लाला और सुरताण के स्थान में बीजा और शिवराज नाम दिये हैं।)

एक पुत्री हंसबाई हुई, जिसका विवाह चितौड़ के राणा लाखा के साथ हुआ जिससे मोकल उत्पन्न हुआ था। पांच राणियों और उनके पुत्रों के नाम निचे दिये हैं—

राणी साखलों सूरमदे, बीसल की बेटी, पुत्र रणमल।
तारादे गहलोताणी, सीहड़ सांक सूदावत की बेटी, पुत्र सत्ता।

भटियाणी लाडां कुंतल केलणोत की बेटी, पुत्र अरड़कमल।
सोनां, मोहिल ईसरदास की बेटी, पुत्र कान्हा।

ईंदों केसर गोगादे उगाणोतरी बेटी, पुत्र—भीम, सहसमल वरजांग, रूदा, चांदा, ऊजु।

मंडोवर हाथ आने पर राव चूण्डा ने और बहुत सी धरती ली और उसका प्रताप दिन ब दिन बढ़ता गया। उस वक्त नागोर में खोखर राज करता था और उसके घर में राव चूण्डा की साली थी। उसने राव को गोठ देने के लिए नागोर के गढ़ में बुलाया। वह चार-पांच दिन तक वहां रहा और वहां की व्यवस्था देखकर अपने राजपूतों से कहा कि चलो नागोर लेवें, राजपूत भी इससे सहमत हो गये। एक दिन वह राजपूतों को साथ ले नागोर में जा घुसा, खोखर को मारा, दूसरे सब लोग भाग गये और नागोर में राव की दुहाई फिरी। वह वहां रहने लगा और अपने पुत्र सत्ता को मंडोवर रक्खा। नागोर नगर सं० १५१२ (सं० १२१५ होंगे।) कैमास दाहिमे ने बसाया था।

एक दिन राव चूण्डा दरबार में बैठा था कि एक किसान ने आकर कहा कि महाराज मैं चने बोने को खेत में हल चला रहा था कि कूऐ के पास एक खड्डा दीख पड़ा। सम्भव है, उसमें कुछ द्रव्य हो। यह विचार कर कि वह धन धरती के धनियों का है मैं आपको इत्तला करने आया हूँ। राव ने अपने आदमी उसके साथ द्रव्य निकालने को भेजे। उन्होंने जाकर वह भूमि खोदी, परन्तु माल बहुत गहराई पर था, सो हाथ न आया। उन्होंने आकर राव चूण्डा से कहा तो राव स्वयं वहां गया और बहुत से बेलदार लगाकर पृथ्वी को बहुत गहरी खुदवाई, तो उसमें से रसोई के बर्तन निकले अर्थात्—चरवे, देंगे, कूंडियां, थालियां आदि। राव ने उनको देख, ऊपर गल्लावड़े का नाम था और ऐसा लेख भी था कि जो इस भांति रसोई कर सके वह इन बर्तनों को निकाले। राव ने कहा कि इनको यहीं डालदो। तब सरदारों ने कहा कि इनमें से एक आध चीज तो लेनी चाहिये, तब एक पली (तेल या घी निकालने की) ली। नागोर आकर उसको तुलवाई तो १५ पैसे भर की उतरी। राव चूण्डा ने आज्ञा दी कि आगे को मेरे रसोवड़े में इस पली से घी परोसा जावे, सबको एक एक पूरी पली मिले, यदि आधी देवे तो रसोड़दार को दंड दिया जावेगा।

एक दिन अरड़कमल चूण्डावत ने भैंसे पर लोह किया। एक ही हाथ में भैंसे के दो टूक हो गये, तब स. सरदारों ने प्रशंसा कर कहा कि वाह वाह ! अच्छा लोह हुआ। राव चूण्डा बोला कि क्या अच्छा हुआ, अच्छा तो जब कहा जावे कि ऐसा घाव राव राणगदे अथवा कुंवर सादा (सादूल) पर करे। मुझको भाटी (राणगदे) खटकता है उसने गोगादेव को जो विष्टाकारी (बेइज्जती) दी वह निरन्तर मेरे हृदय का साल हो रही है। अरड़कमल ने पिता के इस कथन को मन में धर लिया, उस वक्त तो कुछ न बोला, परन्तु कुछ काल बीतने पर सादे कुंवर को अवसर पाकर मारा। इसके बदले तब राणगदेव ने

सांखला महाराज को मार डाला । महाराज के भांजे राखसिया सोमा ने राव चूण्डा के पास जाकर पुकार की और कहा जो आप भाटी से मेरे मामा का बैर लेवे तो आपको कन्या ब्याह कर एक सौ घोड़े दहेज में दूंगा । रात चूण्डा चढ़ चला और पूंगल के पास जाकर राणगदे को मारा और उसका माल लूटकर नागोर लाया, राव चूण्डा के प्रधान सांवदू भाटी और ऊना राठौर थे।

राव चूण्डा की एक राणी मोहील के पुत्र जन्मा, नाम कान्हा रक्खा । मोहिलाणी ने बालक को घूंटी न दी, यह खबर राव को हुई । उसने जाकर रानी से पूछा कि कुंवर को घूंटी न देने का क्या कारण है । वह बोली कि जो रणमल को राज से निकालो तो घूंटी दूं । राव ने रणमल को बुलाकर कहा बेटा तू तो सपूत है, पिता की आज्ञा मानना पुत्र का धर्म है । रणमल बोला–पिताजी, यह राज कान्हा को दीजिए । मुझे इससे कुछ काम नहीं । ऐसा कह पिता के चरण छूकर वहां से चल निकला और सोजत जा रहा । (रणमल को निकालने का दूसरा कारण वहीं पर ऐसा लिखा है) भाटी राव राणगदे को जब राव चूण्डा ने मारा तो राणगदे के पुत्र ने भाटियों को इकट्ठा किया और फिर मुलतान के बादशाही सूबेदार के पास गया, अपने बाप का बैर लेने के वास्ते वह मुसलमान हो गया, और अपनी सहायता पर मुलतान तुर्क सेना ले नागोर आया । उस वक्त राव चूण्डा ने अपने बेटे रणमल को कहा कि तू बाहर कहीं चला जा, क्योंकि तू तेजस्वी है सो मेरा बैर लेने में समर्थ होगा । जो राजपूत तेरे साथ जाते हैं उनको सदा प्रसन्न रखना, उनका दिल कभी मत दुःखना । जेटी घोड़ा सिरवरा उगमणोत को देना । मैंने कान्हा को टीका देना कहा है जो इसको (काहूगांव) खेजड़े ले जाकर तिलक दिया जावेगा ।

राव की राणी मोहिलाणी ने एक दिन घृत की भरी हुई एक गाड़ी आती देखी, अपनी दासी भेज खबर मंगवाई कि क्या रावजी के कोई विवाह है जो रोज इतना घृत आता है । दासी ने आकर कहा बाईजी विवाह तो कोई नहीं यह घृत तो रावजी के रसोड़े के खर्च के लिए है जहां बारह मण रोज खर्च होता है । मोहिलाणी बोली यह घृत लूटता है । रावजी से कहा कि रसोड़े का प्रबन्ध मुझको सौंपिए । राव ने स्वीकारा, राणी पांच सेर घृत में रोज काम चलाने लगी और रावजी को कहा कि मैंने आपका बहुत फायदा किया है, परन्तु इस कार्यवाही से सब राजपूत अप्रसन्न हो गये थे इसीलिए बहुत से रणमल के साथ चल दिये ।

जब नागोर पर भाटी व तुर्क चढ़ आये तो राव चूण्डा भी सजकर मुकाबले के वास्ते गढ़ के बाहर निकला, युद्ध हुआ और सात आदमियों सहित राव चूण्डा खेत रहा । भाटियों ने राव का सिर काटकर बर्छे की नोक पर धरा और उस बर्छे को भूमि में गाड़कर राव के मस्तक को ऊपर रक्खा और मसखरी के तौर पर भाटी आ आकर उसके सामने यह कहते हुए सिर झुकाने लगे कि "राव चूण्डाजी जुहार ।" तब राव कैलण वहां आया । वह बड़ा शकुनी था, कहने लगा—ठाकुरो, सुनो आगे को भाटी राठौड़ों के चाकर होंगे और उन्हें तसलीम करेंगे ।

राव चूण्डा के सरदार रणमल्ल को ढूंढाण की तरफ ले गये। रणमल ने पिता के आज्ञानुसार साथ के सब राजपूतों को राजी कर लिया। केलण भाटी रणमल के पीछे लगा। रणमल एक गांव में पहुँचा, एक पनघट के कूऐ के पास ठहरा। वहां पनिहारियां जल भरने आई। उनमें से एक बोली "बाई! आज कोई ऐसा यहां आया है कि जिसने अपने बाप को मरवाया, धरती खोई, उसके पीछे कटक आता है सो ऐसा न हो कि अपने को भी मरवावे।" पनिहारी के ये वचन रणमल के कान में पड़े। वह बोला आगे नहीं जाऊंगा, पीछा करने वाली सेना से लड़ूंगा सब पीछे फिरे, शस्त्र संभाले, युद्ध हुआ, रिखरा ने बादशाही निशान छीन लिया। मुगल और भाटी भागे और रणमल नागोर में आकर पाट बैठा।

गोगादेव थलवट में रहता था। वहां जब दुष्काल पड़ा तो मऊ (लोग या प्रजा) चली, केवल थोड़े मनुष्य वहां रह गये। आषाढ़ आया तब लोग गांवों में आकर बसे। उनमें बानर तेजा नाम का एक राजपूत गोगादेव का चाकर था, वह भी मऊ के साथ गया था। पीछे लौटता हुआ वह अपने पुत्र पुत्री और एक बैल सहित गांव मीतासर में रात्रि को ठहरा। प्रभात के समय जब वह स्नान को गया और पानी में बैठकर नहाने लगा तब उस गाँव के स्वामी मोहिल ने उसको बेटी की गाली दी और कहा "अरे पापी, लोग तो यहां जल पीते हैं और तू उसमें बैठकर नहाता है।" इतना कहकर उसके पराणी (वह लकड़ी जिसके एक सिरे पर लोहे की तीक्ष्ण कील लगी रहती है) मारी, जिससे उसकी पीठ चीर गई। लोगों ने कहा कि यह गोगादेव का राजपूत है तो मोहिल बोला कि "गोगादेव जो करेगा सो मैं देख लूंगा।" तेजा वहां से अपने गांव आया। उसके घरमें प्रकाश देखकर गोगादेव ने अपने आदमी को खबर के लिए भेजा और फिर उसको बुलाया। दूसरे दिन जब गोगादेव तालाब पर स्नान करने गया तो तेजा भी उसके साथ गया था। जब नहाने लगे तो गोगादेव ने तेजा की पीठ मे घाव देखकर पूछा कि यह कैसे हुआ? उसने उत्तर दिया कि मीतासर के राणा माणकराव मोहिल ने मेरी पीठ में आर लगाई और ऐसा कहा है। इस पर गोगादेव साथ इकट्ठा करके मोहिली पर चढ़ा। उस दिन वहां बहुत सी बरातें आई थीं। लोगों ने समझा कि यह भी कोई बरात है। द्वादसी के दिन प्रातःकाल ही गोगादेव चढ़ दौड़ा, लड़ाई हुई, राणा भाग गया, दूसरे कई मोहिल मारे गये, गांव लूटा, और २७ बरातों को भी लूटकर अपने राजपूतों का बैर लिया।

गोगादेव जब जवान हुआ, तब अपने पिता का बैर लेने के लिए उसने साथ इकट्ठा किया और जोहियों पर चढ़ चला। इस बात की सूचना जोहियों को होते ही वे भी युद्ध के लिए उपस्थित हो गये। (शत्रु को धोखा देने के लिए) गोगादेव उस वक्त पीछा मुड़ गया और २० कोस आकर ठहरा। अपने गुप्तचर को बैरी की खबर देने के लिए छोड़ आप उसकी घात में बैठा अवसर देखने लगा। जोहियों ने जाना कि गोगादेव चला गया है तो फिर अपने स्थान को लौट आये। गुप्तचर ने आकर खबर दी कि मैंने दल्ला जोहिया और उसके पुत्र धीरदेव का पता लगा लिया है और जहां वे सोते हैं वह ठौर

निकला। धीरदेव इस अर्थे में पूंगल के राव राणगदे भाटी के यहां विवाह करने गया था और उसके बिछोने पर उसकी बेटी सोती थी, धीरदेव के भरोसे तलवार झाड़ी। उसकी कृपाण उस बाला को काट, बिछौने को चीर, पलंग को काटती हुई घट्टी से जा खटकी। इसी से वह तलवार 'रलतली' प्रसिद्ध हुई। जब दल्ला मारा गया तो उसका भतीजा हांसू पडाईये नाम के घोड़े पर चढ़ धीरदेव को यह समाचार पहुंचाने के लिए पूंगल को दौड़ा। धीरदेव विवाहोत्तर अपनी पत्नी के पास सोया हुआ था, कंकन डोरडे अब तक न थे। पहर भर रात्रि शेष रही होगी कि घोड़ा पड़ाइया हिन हिनाया। धीरदेव की आं खुल गई, कहने लगा कि पड़ाइया हिन हिनाया। साथ के नौकर चाकर बोले, जी! इस वक्त यहां पड़ाइया कहां? इतना कहते तो देर लगी कि हांसू सन्मुख आ खड़ा हुआ। धीरदेव ने पूछा कुशल तो है? उत्तर दिया कि कुशल कैसी, गोगादेव बीरमोत ने आकर तुम्हारे पिता दल्ला को मारा, अब वह वापस जाता है। धीरदेव तत्काल उठा, वस्त्र पहने, हथियार बांधे, घोड़े जीन कराया, सवार होने ही को था कि राव राणगदेव भी वहां आगया, कहने लगा कि कंकनडोरे खोलकर सवार होओ। धीरदेव ने उत्तर दिया कि अब पीछे आकर खोलेंगे। तब तो राव राणगदेव भी साथ हो लिया और दोनों चढ़ धाये। आगे गोगादेव पदरोला के पास ठहरा हुआ था, घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दिया था, साथ सब जल के किनारे टिका हुआ था। भाटी और जोइये निकट पहुंचे। घोड़े चरते हुए देखे तो जान लिया कि यह घोड़े गोगादेव के हैं, तब उनको लेकर पीछे फिरे और पदरोला आये। कटक प्यासा हुआ तब कहने लगे कि जल पीकर चलें। जलपान किया, घोड़ों को भी पिलाकर ताजा कर लिया और फिर दो टुकड़ी हो दोनों तरफ से बढ़े। इन्हें देखकर गोगादेव ने पुकारा—अरे घोड़े लाओ! तब ढीढी (कोई नाम) बोला—"अरे! गोगादेव के घोड़े नहीं मिलते हैं, जोहिये ले गये, छुडाओ।" युद्ध शुरू हुआ। भाटी जोहिया राठौड़ों से भिड़े। गोगादेव घावों से पूर होकर पड़ा, उसकी दोनों जंघा कट गई, उसका पुत्र ऊदा भी पास ही गिरा। घायल गोगादेव अपनी माण की तलवार को टेके बैठा घूम रहा था कि राव राणगदे घोड़े चढ़ा हुआ उसके पास से निकला तो गोगादेव कहने लगा "राव राणगदे का बड़ा सांका (साथ) है। हमारा पारवाडा (जुहार?) ले लेवे।" राणगदे ने उत्तर दिया कि "तेरे जैसी विष्टा का पारवाडा हम लेते फिरें". इतना कहकर, वह तो चला गया और धीरदेव आया। तब फिर गोगादेव ने कहा "धीरदेव तू वीर जोहिया है, तेरा काका मेरे पेट में तड़प रहा है, तू मेरा पारवाडा ले।" यह सुन धीरदेव फिरा, गोगा के निकट आ घोड़े से उतरा। तब गोगा ने तलवार चलाई और वह पास आ पड़ा। गोगा ताली देकर हंसा, तब धीरदेव ने कहा—'अपना बैर टूटा, हमने तुझे मारा और तूने धीरदेव को, इससे महेवे की हानि मिट गई।" धीरदेव के प्राण मुक्त हुए तब गोगादेव बोला "कोई हो तो सुन लेना। गोगादेव कहता है कि राठोडों और जोहियों का बैर तो बराबर हो गया, परन्तु जो कोई जीता जागता हो तो महेवे जाकर कहे कि राव राणगदे ने गोगादेव को "विष्टागाली" दी है सो बैर भाटियों से है।" यह बात झीपां ने सुनी और महेवे जाकर सारा हाल कहा।

इधर रणखेत में जोगी गोरखनाथजी आ निकले । गोगादेव को इस तरह बैठा देखा, उन्होंने उसकी जंघा जोड़ दी और अपना शिष्य बना कर ले गये, सो गोगादेव अब तक चिरंजीव है ।

अडकमल या अरडकमल चूण्डावत (राठौड़ राव चूण्डा का पुत्र)—जैसा कि ऊपर लिख आये हैं कि अडकमल को भैंस का लोह करने पर उसके पिता ने बोल मारा (कि भैंस का लोह किया तो क्या, मैं तो प्रशंसा जब करुं, कि ऐसा ही लोह राव राणगेद या उसके बेटे सादा पर किया जावे ।) पिता का वह बोल पुत्र के दिल में खटकता था । उसने स्थल स्थल पर अपने भेदिये यह जानने को बिठा रक्खे थे कि कहीं राणगदे या सादूल कुंवर हाथ आवे-तो उनको मारूं । तभी मेरा जीवन सफल हो और पिता के बोल को सत्य कर बताऊं । छापर द्रोणपुर में मोहिल (चौहान) राज करते थे वहां के राव ने अपनी कन्या के सम्बन्ध के नारियल पूंगल में कुंवर सादूल राणगदे बोत के पास भेजे । ब्राह्मण पूंगल आया और भाटी राव से कहा कि मोहिला ने कुँवर सादूल के लिए यह नारियल भेजे हैं । राव राणगदे ने उत्तर दिया कि हमारा राठौडों से बैर है, अतएव कुंवर व्याह करने को नहीं आ सकता और ब्राह्मण को रुकसत कर दिया । यह समाचार सादूल को मिले कि रावजी ने मोहिलों के नारियल लौटा दिये हैं तो अपना आदमी भेजकर ब्राह्मण को वापस बुलाया, नारियल लिये और उसे द्रव्य देकर विदा किया । प्रतिष्ठित सरदारों के हाथ पिता को कहलाया कि नारियल फेर देने में हम अपयश और लोकनिंदा के भागी होते हैं, राठोडों से डरकर कब तक घर में घुसे बैठे रहेंगे, मैं तो मोहिलाणी को व्याह कर लाऊंगा । वह टीकावत पुत्र और जवान था । राव ने भी विशेष कहना उचित न समझा । इसने अपने राजपूत इकट्ठे कर चलने की तैयारी करली और पिता के पास मोर नामी अश्व सवारी के लिए मांगा । राव ने कहा कि तू इस घोड़े को रखना नहीं जानता; या तो हाथ से खो देगा या किसी को दे आवेगा । बेटा कहता है पिताजी ! मैं इस घोड़े को अपने प्राण के समान रक्खूंगा । अब पिता क्या कहे, घोड़ा दिया, कुंवर केसरिये कर ब्याहने चढ़ा, छापर पहुंचा और माणकदेवी के साथ विवाह किया । राव कलण की पुत्री माणक' भाटियाणी जबर्दस्त थी । उसने गढ़ द्रोणपुर में विवाह न करने दिया, तब राव माणक सेवा ने अपनी कन्या और राणा खेता की दोहिती को ओरींठ गांव में ले जाकर सादूल के साथ ब्याही थी । मोहिलों ने सदूल को सलाह दी कि तुम अपने किसी बड़े भरोसे वाले सरदार को छोड़ जाओ । वह दुलहन का रथ लेकर पूंगल पहुंचा जावेगा, तुम तुरन्त चढ़ चलो, क्योंकि दुश्मन कहीं पास ही घात में लगा हुआ है । सादूल ने कहा कि मैं त्याग बांटकर पीछे चढूंगा । राठोडों के भेदिये ने जाकर अरड़कमल को खबर दी कि सादूल मोहिलों के यहां ब्याहने आया है, वह तुरन्त नागौर से चढ़ा । इस वक्त एक अशुभ शकुन हुआ । महाराज साथ था, उसको शकुन का फल पूछा तो उसने कहा कि अपन कालू गोहिल के यहां चलेंगे, जब वह आपकी जीमने की मनुहार करे तो उसको अपने शामिल भोजन के लिए बैठा लेना । पहला ग्रास आप मत लेना, गोहिल को लेने

देना। जब वह ग्रास भरे तब उससे पूछना कि हमने ऐसा शकुन देखा है उसका फल कहो। वह विचार कर कह देगा। ये गोहिल के घर जाकर उतरे, उसने गोठ तैयार कराई, जीमने बैठे, पहला ग्रास कालू ने लिया तब अरडकमल कहने लगा—कालूजी हम सादूल भाटी पर चढ़े हैं, हमको ऐसा शकुन हुआ उसका फल कहो। कालू कुछ विचार कर बोला "तुम जिस काम को जाते हो वह सिद्ध होगा, तुम्हारी जय होगी और कल प्रभात को शत्रु मारा जायेगा।" जीम चूठकर चढ़े, महाराज सांखल के बेटे आल्हणसी को राव राणगदे ने मारा था इसलिए अपने बेटे का वैर लेने को महाराज आगे होकर राठोडों के कटक को सादूल पर ले चला। सादूल भाटी त्याग बांट, ढोल बजवाकर अपनी ठकुराणी का रथ साथ ले रवाना हुआ था कि लायां के मगरे (पहाडी) के पास अरडकमल ने उसे जा लिया और ललकार कर कहा—"बड़े सरदार जावे मत। मैं बड़ी दूर से तेरे वास्ते आया हूं।" तब ढाढ़ी बाला--"उडे मौर करे पलाई मोरे जाई पर सादो न जाई,"। मोर (घोड़ा) उड़कर भाग जावे परन्तु सादा नहीं जावेगा। राजपूतों ने अपने अपने शस्त्र संभाले, युद्ध हुआ, कई आदमी मारे गये, अरडकमल ने घोड़े से उतर मोर पर एक हाथ ऐसा मारा कि उसके चारों पांव कट गये और साथ ही सादूल का काम भी तमाम किया। उसके साथ राजपूत मर मिटे तब मोहिलाणी ने अपना एक हाथ काटकर सादूल के साथ जलाया और आप पूंगल पहुंची, सासू ससूर के पग पकड़े और कहा "मैं आप ही के दर्शन के लिए यहां आई थी, अब पति के साथ जाती हूं।" ऐसा कहकर वह सती हो गयी। अरडकमल ने भी नागौर आकर पिता के चरणों में सिर नवाया, राव चूण्डा हुआ और उसे पट्टे में दिया।

(ऊपर कह आये हैं कि राव चूण्डा ने अपनी राणी मोहिल के कहने से अपने पुत्र रणमल को अपना उत्तराधिकारी न बनाकर उसे निर्वासित किया और मोहिल के पुत्र कान्हा को मडोवर का राज दिया था।) जब रणमल विदा हुआ तो अच्छे अच्छे राजपूत अर्थात् सिखरा उगमणोत, इंदा, ऊदा त्रिभुवन सिंहोत, राठोड कालोटिवाणो उसके साथ हो लिये। आगे जाकर एक रहट चलता देखा, वहां घोड़ों को पानी पिलाया। उनके मुंह छांटे, हाथ मुंह धोकर अमल पानी किया। वहां सिखरे ने एक दोहा कहा—"कालो काले हिरण जिम, गयो टिवाणों कूद। आयो परवत साथियों त्रिभुवन बाले ऊद।" तब ऊदा और काला ने कहा कि हम सिखरा के साथ नहीं जावेंगे, यह निंदा करता है अतः पीछे लौट जायेंगे। इतने में दल्ला गोहिलोत का पुत्र पूना उठकर आया, जिसको सिखरे ने कहा कि पीछे फिरो। वह बोला "मैं नहीं लौटूंगा, ऐसा अवसर मुझे कब मिले।" तब काला और ऊदा ने कहा कि हम पूना के साथ पीछे जावेंगे। सिखरा ने कहा तुम जाओ, मैं नहीं आऊंगा। एक दोहा मुझे भी कहो—

घुमडलेह सिरावणी, कहियो उगह विहाण।
ऊगमणावत कूदियो, बट वंगे केकाण॥

फिर पूना राव (चूण्डा) के पास चला गया। ५०० सवारों सहित नाडोल के गांव धणले में आकर ठहरा। नाडोल में उस वक्त सोनगिरे (चहुवांण) राज करते थे।

रात्र रणमल्ल के यहां तीन बार रसोई चढ़ती और वह अपने दिन सैर शिकार में बिताता था। जब सोनगिरों ने उसका वहां आ उतरना सुना और उसके ठाट ठस्से के समाचार उनके कानों में पहुंचे तब उन्होंने अपने एक चारण को भेजा कि जाकर खबर लावे कि रणमल के साथ कितनेक आदमी है। चारण ने राव के पास आकर आशीष पढ़ी, राव ने उसको पास बिठाकर सोनगिरों का हाल पूछा। इतने में नौकर ने आकर अर्ज की कि जीमण तैयार है। चारण को साथ लिये नाना प्रकार की तैयारी का स्वाद लिया, फिर चारण को कहा कि तुझे कल विदा मिलेगी। दूसरे दिन प्रभात ही शिकारियों ने आकर खबर दी कि अमुक पर्वत में ५ वराहों को रोके हैं। रणमल तुरन्त सवार हुआ और उन पांचों शूकरों का शिकार कर लाया। रसोई तैयार थी, जीमने बैठे, भोजन परोसा गया, साथ के लोग जीमने लगे कि एक शिकारी ने आकर कहा कि पनोते के बादले (बहने वाली बर्साती जलधारा या छोटी नदी) पर एक बड़ा वराह आया है। सुनते ही रणमल उठ खड़ा हुआ और घोड़ा कसवाकर सवार हो चला। चारण भी साथ हो लिया। सवार होते समय जोहियों को आज्ञा दी कि पनोते के बाहले पर जीमण तैयार रहे। जब वराह को मारकर पीछे फिरे तो रसोई तैयार थी। जीमने बैठे, आधाक भोजन किया होगा कि खबर आई कि कोलर के तालाब पर एक नाहर और नाहरी आये हैं। उसी तरह भोजन छोड़कर वह उठ खड़ा हुआ और वहां पहुंचा जहां बाघ था। जाते वक्त हुक्म दिया कि जीमण तालाब पर तैयार रहे। चारण भी साथ ही गया। जब सिंहों का शिकार कर लौटे तो रसोई तैयार थी-सब ने सीरा पूरी आदि भोजन किया। उस चारण को मार्ग में से ही विदा कर दिया और कहा कि नाडोल यहां से पास है। चारण ने घोड़ा हटाया, नाडोल वहां से एक कोस ही रह गया था। चारण ने पुकार मचाई "दौड़ो दौड़ो"। बाहर आई है गांव में राजपूत सवार हो होकर आये। चारण को पूछा कि तुझे किसने खोसा ? कहा-मुझे तो किसी ने नहीं खोसा है परन्तु तुम्हारी धरती लुट गई। पूछा कैसे ? बोला-यह रणमल पास आ रहा है और इतना खर्च करता है, बाप ने तो निकाल दिया, फिर इसके पास इतना द्रव्य आवे कहां से ? यह कहीं न कहीं छापा मारेगा या तो सोनगिरों से नाडोल लेगा, हूलों से सोजत लेगा। इस कान से सुनो या उस कान से, मैंने तो पुकार कर कह दिया है।

कितनेक दिन वहां ठहरकर रणमल चित्तौड़ के राणा लाखा के पास गया जहां छत्तीस ही राजकुल चाकरी करते थे। बड़ा राजस्थान, रणमल भी वहां जाकर चाकर हुआ। (आगे राणा लाखा और चूण्डा की बात, राणा का रणमल की बहन से विवाह करना और मोकल के जन्म आदि का हाल पहले सिसोदियों के वर्णन में राणा लाखा के हाल में लिख दिया है-देखो भाग प्रथम पृष्ठ २४)।

एक बार रणमल थोड़े से साथ से यात्रा के वास्ते गया था, पीछा लौटते ढूंढाड में आया। वहां पूरणमल कछवाह राज करता था (यह राजा पृथ्वीराज का पुत्र और सांभर का राजा था)। उसने रणमल को पूछा कि हमारे यहां नौकर रहोगे। उत्तर दिया-रहेंगे।

एक दिन जोधा कांधल और पूरणमल चौगान खेल रहे थे। जोधा (रणमल का पुत्र) जेठी घोड़े पर सवार था। पूरणमल ने वह घोड़ा देखा, कहा हमें दे दो। कांधल बोला कि रणमलजी को पूछे बिना मैं नहीं दे सकता। पूरणमल ने कहा, मैं छीन लूंगा। फिर जोधा कांधल ने डेरे पर आकर घोड़े की कथा रणमल को सुनाई। रणमल अपने भाई बेटे व राजपूतों सहित दरबार में आया। पूरणमल जहां बैठा था वहां उसका घोड़ा दबाकर बैठ गया। उसकी कमर में हाथ डाल पकड़कर खड़ा कर दिया और अपने साथ बाहर ले आया, घोड़े पर सवार कराया और उसके घोड़े के बराबर अपना घोड़ा रख कर ले चले। पूरणमल के राजपूत इन्हें मारने को आये तो रणमल कटार खींचकर पूरणमल को मारने को तैयार हो गया। तब तो वह अपने आदमियों को झगड़ा करने से रोककर उनके साथ साथ हो लिया। बहुत दूर ले जाकर रणमल ने उसे आदरपूर्वक वह घोड़ा दे इतना कह लौटा दिया कि "हमारे पास से घोड़ा यूं लिया जाता है, जिस तरह तुम लेना चाहते थे वैसे नहीं।"

अपने पिता के मारे जाने पर रणमल नागौर आया और अपने पिता के आज्ञानुसार कान्हा को राजगद्दी पर बिठाकर आप सोजत में रहने लगा। भाटियों से बैर था सो दौड़-दौड़कर उनका इलाका लूटने लगा। तब उन्होंने चारण भुज्जा संढायच को उसके पास भेजा। चारण ने यश पढ़ा, जिससे प्रसन्न होकर रणमल ने कहा कि अब मैं भाटियों का बिगाड़ न करूंगा। उन्होंने अपनी कन्या उसे ब्याह दी जिसके पेट से राव जोधा उत्पन्न हुआ था।

अपने पुत्र सत्ता को पहेर की जागीर राव चूण्डा ने पहले ही से दे दी थी, (दूसरी ख्यातें से) सं० १४६५ में कान्हा का मंडोवर गद्दी बैठना पाया जाता है परन्तु वह अधिक राज न कर सका। उनके भाई सत्ता ने राज छीन लिया, और राज प्रबन्ध अपने भाई रणधीर को सौंपा। सत्ता के पुत्र नर्बद और रणधीर के परस्पर अनबन हो जाने से रणधीर चित्तौड़ गया और रणमल को लाया। राणा मोकल ने रणमल की सहायता कर सं० १४७४ के लगभग उसे मंडोवर की गद्दी पर बिठाया। रणमल और उसके पुत्र जोधा ने नर्बद से युद्ध किया, वह घायल होकर गिरा, तीर लगने से उसकी एक आंख फूट गई और उसके बहुत से राजपूत मारे गये। राव रणमल ने मंडोवर ली। राव सत्ता को आंखों से दिखता नहीं था इसलिए राव रणमल ने उसको गढ़ में रहने दिया और जब वह उससे मिलने गया, अपने पुत्रों को उसके पांवों लगाया। जब जोधा जिरह बक्तर पहने शस्त्र सजे उसके चरण छूने को गया। सत्ता ने पूछा कि "रणमल यह कौन है?" कहा "आपका दास जोधा है।" सत्ता बोला कि टीका इसे देना, यह धरती रक्खेगा। रणमल ने भी उसी को अपना टीकायत बनाया और मंडोवर में उसे रक्खा और आप नागौर चला गया।

एक दिन राव रणमल सभा में बैठा अपने सरदारों से यह कह रहा था कि बहुत दिन से चित्तौड़ की तरफ से कोई खबर नहीं आई है। उसका क्या कारण? थोड़े ही दिन पीछे एक आदमी चित्तौड़ से पत्र लेकर आया और कहा कि मोकल मारा गया। राव

विस्मित और शोकातुर हो बोला हैं! मोकल को मार डाला ?" पत्र बंचवाया, मोकल को जलांजलि दी और चित्तौड़ जाना विचारा । पहले २१ पांवड़े (कदम) भरे और फिर खड़े होकर कहा कि "मोकल का वैर लेकर पीछे और काम करूंगा।" "सिसोदियां की वेटियां दैर में राव चूण्डा की संतान को परणाऊं तो मेरा नाम रणमल।" कटक सज चित्रकूट पहुंचे। सीसोदिये (मोकल के घातक) भागकर पई के पहाड़ों में जा चढ़े और वहां घाटा बांध रहने लगे। रणमल ने वह पहाड़ घेरा और छः महीने तक वहां रहकर उसे सर करने के कई उपाय किये, परन्तु पहाड़ हाथ न आया। वहां मेर लोग रहते थे। सिसोदियों ने उनको वहां से निकाल दिया था उनमें से एक मेर राव रणमल से आकर मिला और कहा कि जो दीवाण की खातरी का पर्वाना मिल जावे तो यह पहाड़ मैं सर करा दूं। राव रणमल ने पर्वाना करा दिया और उसे साथ ले ५०० हथियार बन्द राजपूतों को लिये पहाड़ पर चढ़ने को तैयार हो गया। मेर बोला, आप एक मास तक और धैर्य्य रक्खें। पूछा–किसलिए ? निवेदन किया कि मार्ग में एक सिंहनी ने बच्चे दिये हैं। रणमल बोला कि सिंहनी से तो हम समझ लेंगे तू तो चल। मेर को लिए आगे बढ़े। जिस स्थान पर सिंहनी थी वहां पहुंचकर मेर खड़ा रह गया और कहने लगा कि आगे नाहरी बैठी है। रणमल ने अपने पुत्र अरडकमल से कहा कि बेटा, नाहरी को ललकार। उसने वैसा ही किया। शेरनी झपटकर उस पर आई। इसका कटार पहले ही उसके लिए तैयार था, घूंस घूंसकर उसका पेट चीर डाला। जब अगुवे ने उनको पहाड़ों में ले जाकर चाचा मेरा के घरों पर खड़ा कर दिया। रणमल के कई साथी तो चाचा के घर पर चढ़े और राव आप महपा पर चढ़कर गया। उसकी यह प्रतिज्ञा थी कि जहां स्त्री पुरुष दोनों घर में हों उस घर के भीतर न जाना, इसलिए बाहर ही से पुकारा कि "महपा बाहर निकल व तो यह शब्द सुनते ही ऐसा भयभीत हुआ कि स्त्री के कपड़े पहन झट से निकलकर सटक गया; रणमल ने थोड़ी देर पीछे फिर पुकारा तो उस स्त्री ने उत्तर दिया कि राज! ठाकर तो मेरे कपड़े पहनकर निकल गये हैं, और मैं यहां नंगे बदन बैठी हूं। रणमल वहां से लौट गया, चाचा मेरा को मारा और दूसरे भी कई सीसोदियों को खेत रक्खा। प्रभात होते उन सबके मस्तक काट कर उनकी चबूतरी (चंवरी) चुनी, बछों की बट्टे बनाई और वहां सीसोदियों की बेटियों को राठौडों के साथ परणाई। सारे दिन विवाह कराये, मेवासा तोड़ा और वह स्थान मेरों को देकर राव रणमल पीछा चित्तौड़ आया, राणा कुंभा को पाट बैठाया। दूसरे भी कई बागी सरदारों को मेवाड़ से निकाला और देश में सुख शांति स्थापित की।

(चित्तौड़ में राणा कुंभा के शुरू जमाने में राव रणमल पर ही राजप्रबन्ध का दारमदार हो गया था और उसने राणा के काका राव चूण्डा लाखावत को भी वहां से विदा करवा दिया जो मांडू के सुल्तान के पास जा रहा था।) एक दिन राणा कुंभा सोया हुआ था और एका चाचावत पगचंपी कर रहा था कि उसकी आंखों में से आंसू निकलकर राणा के पग पर बूंदे गिरी। राणा की आंख खुली, एका को रोता हुआ देख कारण पूछा तो उसने अर्ज की कि मैं रोता इसलिए हूं कि अब देश सीसोदियों के अधिकार में से निकल

जायगा और उसे राठोड़ लेंगे। राणा ने पूछा, क्या तुम रणमल को मार सकते हो? अर्ज की कि जो दीवाण के हाथ हमारे सिर पर रहे तो मार सकते हैं। राणा ने आज्ञा दी। राणा, एका चाचावत और महपा पंवार ने यह मत दृढ़ किया तथा रात्रि के समय सोते हुए राव रणमल पर चूक कर उसे मारा। इसका सविस्तार हाल मेवाड़ की ख्यात में राणा के वर्णन में लिख दिया है। राव रणमल ने भी मरते मरते राजपूतों के प्राण लिये। एक को कटार से मारा, दूसरे का सिर लोटे से तोड़ दिया और तीसरे का प्राण लातों से लिया। राणा की एक छोकरी महल चढ़ पुकारी "राठोड़ों! तुम्हारा रणमल मारा गया।" तब रणमल के पुत्र जोधा कांधल आदि वहां से घोड़ों पर चढ़कर भागे। राणा ने उनके पकड़ने को फौज भेजी, लड़ाई हुई और उसमें कई सरदार मारे गये। चरड़ा चन्द्रावत शिवराज, पूना, ईंदा आदि। चरड़ा ने पुकारा "बड़ा बीजा!" तो एक दूसरा बीजा बोल उठा कि गला फाड़कर आप मरता हुआ दूसरों को भी ले मरता है। चरड़ा ने कहा कि मैं तुझको नहीं पुकारता हूं। भीमा बीरमल, बरजांग भीमावत मारे गये और भीम चूण्डावत पकड़ा गया।

मांडल ने तालाब में अपने अपने घोड़ों को पानी पिलाया। उस वक्त एक ओर तो जोधा और सत्ता दोनों सवार अपने घोड़ों को पिलाते थे, और दूसरी तरफ कांधल अपने अश्व को जलपान कराता था। कांधल ने उन दोनों सवारों से पूछा (तुम कौन हो आदि)। जोधा ने कांधल की आवाज पहचानी, उससे बात की, दोनों मिले और वहीं जोधा ने उसे रावताई का टीका दिया। दोनों भाई मारवाड़ में आये।

दोहा--आगे सूरन काढ़िया तुंगम काढ़ी आय।
जे मिसगाणो सेजडी, लड रिणमल राय॥

राव रिणमल नींदा भरै आवय लौह घणे उतारै, कटारी काढ़ मरदघणी तिय आगै सुरन तुंगकिणी। तो दिन मेवाड़े तो विपख्य की पापं सांसन्नी तरपण वही जै वैसा सकं भकरयां कृतघ्नं (छंद अशुद्ध से हैं अर्थ ठीक नहीं लगता)। जै रिणमल होवत दल अंतार कुंभ करण बहन्त किसी पर। माथा सूल सही सुरताणां, ओस मुद्रावत आणां। जै वरती वी आणां। वे हूं सिधावी वीलो हिन्दू अनै हमीर मीर जै लुलिया भांजै। जै भग्गो पीरोज, खेत्रा जाह खड़ै जै मारै। महमद गजगमारै संभेडो रिणमल राव विसरामिये। कुंभा की मन वीकसै छलायो छदम तैं कूड़ कडकर, जेम सीह आगै ससै।

(इसमें राव रणमल के वीरकृत्यों का वर्णन है जो उसने राणा के हित किये, और अंत में कहा है कि राणा ने छल छद्मकर रणमल को ऐसा मारा जैसे सिंह को ससा ने मारा था। (छंद शुद्ध न होने से सही अर्थ नहीं किया जा सकता है।)

महपा परमारे पई के पहाड़ों से भागकर मांडू के बादशाह महमूद के पास जा रहा था। जब राणा कुंभा ने बादशाह पर चढ़ाई की तब राव रणमल राणा के साथ था।

सीमा पर युद्ध हुआ उस वक्त महमूद हाथी पर लोहे के कोठे में बैठा हुआ था, राव रणमल ने चाहा कि अपने घोड़े को उड़ाकर बादशाह को बर्छा मारे, परन्तु किसी प्रकार बादशाह को राव का यह विचार मालूम हो गया। उसने तुरन्त अपने खवास को जो पीछे बैठा हुआ था, अपनी जगह बिठा दिया और आप उसकी जगह जा बैठा। इतने में रणमल ने घोड़ा उड़ाकर बर्छी चलाई, वह कोठा तोड़कर खवास की छाती के पार निकल गई। उसने चिल्लाकर कहा "हजरत मैं तो मरा।" यह शब्द रणमल के कान पर पड़े और उसने जाना कि बादशाह बच गया है। बादशाह हाथी की पीठ पर पीछे की ओर बैठा था और राव की यह प्रतिज्ञा थी कि वह पीठ पर तलवार कभी न चलाता था। उसने फिर घोड़ा उड़ाया, बादशाह के बराबर आकर उसको उठाया और एक शीला पर दे पटका जिससे उसके प्राण निकल गये। महपा को बादशाह मांडू के गढ़ में छोड़ आया था। जब राणा मांडू पहुंचा तो गढ़वालों ने महपा को कहा कि अब हम तुमको नहीं रख सकते हैं। राव रणमल ने उसे मांगा तब वह घोड़े पर चढ़कर गढ़ के दरवाजे आया और वहां से नीचे कूद पड़ा। जिस ठौर से महपा कूदा उसको पाखंड कहते हैं। पीछे महपा को सिकोतरी का वरदान हुआ।

(दूसरी बात इस तरह पर लिखी है)—राव चूण्डा काम आया तब टीका राव रणमल को देते थे कि रणधीर चूण्डावत दरबार में आया। सत्ता वहां बैठा हुआ था। रणधीर ने उसको कहा कि "सत्ता कुछ देवे तो टीका तुम्हें देवे।" सत्ता ने कहा कि "टीका रणमल का है, जो मुझे दिलाओ तो भूमि का आधा भाग तुझे देऊं।" तब रणधीर ने घोड़े से उतर दरबार में जाकर सत्ता को गद्दी पर बिठा दिया और रणमल को कहा कि तुम पट्टा लो। उसने मंजूर न किया और वहां से चल दिया, राणा मोकल के पास जा रहा। राणा ने उसकी सहायता की और मंडोर पर चढ़ आया। सत्ता भी संमुख लड़ने को आया। रणधीर नागौर जाकर वहां के खान को सहायतार्थ लाया। (उस वक्त नागोर में शम्सखां गुजरात के बादशाह अहमदशाह की तरफ से था।) सीमा पर युद्ध हुआ, रणमल तो खान से भिड़ा और सत्ता व रणधीर राणा के संमुख हुए! राणा भागा और नागौरी खान को रणमल ने पराजित कर भगाया। सत्ता और रणमल दोनों की फौजवालों ने कहा कि विजय रणमल की हुई है, दोनों भाई मिले, परस्पर राम राम हुआ, बात-चीतें की, रणमल पीछा राणा के पास गया और सत्ता मंडोवर गया।

सत्ता के पुत्र का नाम नर्बद और रणधीर के पुत्र का नाम नापा था। (सत्ता आंखों से बेकार हो गया था इसलिए) राज-काज उसका पुत्र नर्बद करता था। एकबार नर्बद ने मन में विचारा कि रणधीर धरती में आधा भाग क्यों लेता है, मैं उसको निकाल दूंगा। थोड़े ही दिनों पीछे ४००) रुपये कहीं से आये, उनका आधा भाग नर्बद ने दिया नहीं, दूसरी बार नापा ने एक कमान निकलवाकर खींचकर चढ़ाई और तोड़ डाली। नर्बद ने कहा भाई तोडी क्यों?

नापा बोला धरती का हासल आवे उसमें से आधा मांगू, कल थैली आई थी उसमें से मुझे क्यों न दिया ? नर्बद ने आधे रुपये दे दिये । वह पाली के सोनगिरों का भांजा और नापा सोनगिरों का जमाई था । एक दिन नर्बद ने अपने मामा से पूछा "मामाजी, तुमको मैं प्यारा या नापा ? "कहा-मेरे तो तुम दोनों ही बराबर हो, परन्तु विशेष प्यारा तू है, क्योंकि तेरे पास रहते हैं । नर्बद ने कहा कि जो ऐसा है तो नापा को विष दे दो । मामा ने कहा "भाई मुझ से ऐसा नहीं हो सकता" । नर्बद ने एक दासी को लोभ देकर मिलाया और नापा को विष दिलवाया जिससे वह मर गया । अब रणधीर ने अपने आदमी भेज कामदार मुतसद्दियों से पूछाया कि यह सेना किस कार्य के लिए इकट्ठी की जाती है परन्तु उन्होंने यही उत्तर दिया कि "हम नहीं जानते ।" वे आदमी आकर दयाल मोदी की दूकान पर बैठ गये । नर्बद इस दयाल से सलाह किया करता था, जब बालक था तब से रणधीर ने उसकी पालना की थी । रणधीर के मनुष्यों ने मोदी से सामान लिया । उसने और तो सब चीजें दे दीं, परन्तु घृत न दिया । जब उन्होंने घी मांगा तो उत्तर दिया कि "काले के पीला है ।" और फिर घृत दिया । रणधीर के मनुष्यों ने पीछे आकर कहा-राजा, यह पता नहीं लगता कि कटक किस पर तैयार हो रहा है । उसने पूछा-दयाल मोदी ने तुमको कुछ कहा ? उत्तर-और तो कुछ भी नहीं कहा, परन्तु घृत देते समय यह शब्द कहे थे कि "काले के पील बहुत है ।" रणधीर बोला-दयालिया और क्या कहता, काला मैं और पीला मेरा सुवर्ण सो वह कटक मेरे ही पर है । तब उसने भी सेना सजी, फिर आप राणा के पास गया । राणा ने पूछा-"मामाजी, कैसे आये ?" रणमल ने भी उत्तर दिया कि तुझे मंडोव देने के लिए आए हैं राणा ने सहायता देनी कही । ये राणा को लेकर सत्ता पर चढ़े । सत्ता ने अपने पुत्र नर्बद से कहा कि तू भी नागोरी खान को ले आ । नर्बद कोस तीनेक तो गया, परन्तु जब ताप पड़ी तो पीछा फिर आया और छिपकर माता-पिता की बातचीत सुनने लगा । सत्ता (अपनी स्त्री सोनगिरी से कहता है-"सोनगिरी ! नर्बद जानता है कि मेरा पिता कपूत है जो रणधीर को आधा भाग देता है, परन्तु रणधीर के बिना मंडोवर रह नहीं सकता । अब नर्बद नागोरी खान को लेने गया है सो खान आने का नहीं, क्यों कि वह रणमल के हाथ देख चुका है । यह भी अच्छा हुआ, मै लड़ मरूंगा ।" (पिता के ऐसे वचन सुनकर) नर्बद बोल उठा--"मुझे नागोरी खान के पास किसलिए भेजा, मैं भी युद्ध करूंगा और काम आऊंगा ।" सत्ता बोला--"मैं भी यही कहता था ।" नर्बद ने नक्कारा बनवाया, युद्ध किया और खेत पड़ा । इतने रजपूत उसके साथ मारे गये- ईंदा चोहथ, ईंदा जीवा आदि ।

नर्बद निपट घायल हुआ था और उसकी एक आंख फूट गई थी । राणाजी उसको उठवाकर अपने साथ ले गये और रणमल को राणा ने मंडोवर की गद्दी पर बिठाकर टीका दिया । सत्ता भी राणा के पास जा रहा और वहीं उसका देहांत हुआ ।

(दूसरे स्थान में ऐसा भी लिखा है)--"जब राव चूण्डा मारा गया तो राजतिलक रणमल को देते थे, इतने में रणधीर चूण्डावत दर्बार में आया। सत्ता चूण्डावत वहां बैठा हुआ था, उसको रणधीर ने कहा कि सत्ता ! कुछ देवे तो तुझे गद्दी दिला दूं।" सत्ता बोला कि "टीका रणमल का है।" रणधीर ने अपने वचन की सत्यता के लिए शपथ खाई, तब सत्ता ने कहा कि आधा राज तुझे दूंगा। रणधीर तुरन्त घोड़े से उतर पड़ा और सत्ता के ललाट पर तिलक कर दिया। रणमल को कहा कि कुछ पट्टा ले लो, वह उसने मंजूर न किया और राणा मोकल के पास गया। राणा ने सहायता की, सत्ता भी सम्मुख हुआ और रणधीर राणा नागोरी खान को लाया। सीमा पर लड़ाई हुई, रणमल तो खान के मुकाबले को गया और रणधीर ने बसना के राणाजी से युद्ध किया। राणाजी हार खाकर भागे, परन्तु खान को रणमल ने भगा दिया। सत्ता व रणमल दोनों के साथियों ने जय ध्वनि की, रणमल अपने दोनों भाईयों से मिला, बातचीत की, पीछा मोकल जी के पास चला गया। सत्ता गद्दी बैठा और राज करने लगा। कालांतर में सत्ता व रणधीर के पुत्र हुए, सत्ता के पुत्र का नाम नर्बद और रणधीर के पुत्र का नाम नापा था।

रणमल नित गोठें करता था इसलिए सोनगिरों के भले आदमी देखने को आये थे। उन्होंने पीछे नाडौल जाकर कहा कि राठौड काम का नहीं है, यह तुम से न चूकेगा, तुमको मारेगा, इसलिए तुमको उचित है कि अपने यहां इसका विवाह करदो। तब लाला सोनगिरा की बेटी का विवाह उसके साथ कर दिया। फिर भी सोनगिरों ने देखा कि यह आदमी अच्छा नहीं है, तब उन्होंने रणमल पर चूक करना विचारा। एक दिन रणमल सोया हुआ था तब लाला सोनगिरे ने आकर अपनी स्त्री से कहा कि "रामी बाई रांड हो जायगी ?" स्त्री बोली "भले ही हो आवे, यदि एक लड़की मर गई तो क्या।" ठकुराणी ने अपने पति को मद्य का प्याला पिलाकर सुलाया और बेटी से कहा कि रणमल से चूक है, उसको निकाल दे ! रामी ने आकर पति को सूचना दी कि भागो ! चूक है। घातक उसे मारने को आये, परन्तु वह पहले ही निकल गया और घर जाकर सोनगिरों से शत्रुता चलाई, परन्तु वे वार पर न चढ़ते थे। उनका नियम था कि सोमवार के दिन आशापुरी के देहरे जाकर गोठ करते, अमल वारुणी लेते और मस्त हो जाते थे। एक दिन जब वे खा पीकर मस्त पड़े हुए थे तो अचानक रणमल उन पर चढ़ आया और उसने सबको मार कर अखावे के कुंए में डाल दिया। ऊपर सगे साले को डाला। कहा, मैंने सासूजी से वचन धारा है। उनका इलाका लिया, राणा मोकल से मिलने के वास्ते गया और वहीं रहने लगा। तब चाचा सीसोदिया और महपा पंवार ने मोकल को मारा तब रणमल को उस चूक का भेद मालूम हो गया था, परन्तु राणा को कुछ खबर न हुई। एक दिन महपा और चाचा महेशी डोडिये के घर गये जो राणा का खवास था। रणमल ने अपने जासूस साथ लगा दिये थे कि देखें ये क्या बातें करते हैं। चाचा महपा ने मलेसी को अपने में मिलाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वह न मिला। जासूस ने जाकर सारा वृतांत रणमल से कहा और उसने राणा को सुनाया, परन्तु मोकल ने इस पर विश्वास न किया। रणमल मंडोवर गया और

पीछे से राणा पर चूक हुआ। उसने अचलदास खींची की मदद के वास्ते गढ़ से नीचे आकर डेरा किया था तब महपा ने चाचा को कहा कि आज अच्छा अवसर है, फिर हाथ आने का नहीं ; तब चाचा मेरा और महपा बहुत सा साथ लेकर आये। राणाजी ने कहा कि "ये खातणवाले आते हैं सो अच्छा नहीं है। जो गेहूँ में न आने चाहिये, यह मर्दाना के विरुद्ध है।" उस वक्त मलेसी डोडिया ने अर्ज की कि आपको रात रणमल ने चिताया था कि ये आपसे चूक करना चाहते हैं। राणा बोला कि ये हरामखोर अभी क्यों आये ? मलेसी ने अर्ज की कि दीवाण ! पहले तो मैंने न कहा, परन्तु अब तो आप देखते ही हैं। (चाचा मेरा आन पहुँचे) घोर संग्राम हुआ, नौ आदमियों को राणा ने मारा और पांच को हाड़ी राणी ने यमलोक में पहुँचाया, पांच का काम मलेसी ने तमाम किया, अन्त में राणा मारा गया। चाचा व महपा के भी हलके से घाव लगे, कुंवर कुंभा बचकर निकल गया। ये उसके पीछे लगे, कुंभा पटेल के घर पहुँचा। पटेल के दो घोड़ियां थी। उसने कहा कि एक घोड़ी पर चढ़कर चले जाओ और दूसरी को काट डालो, नहीं तो वे लोग ऐसा समझेंगे कि इसने घोड़ी पर चढ़ाकर निकाल दिया है। कुंभा ने वैसा ही किया। जो लोग खोजने आये थे वे पीछे फिर गये। मोकल को मारकर चाचा तो राणा बना और महपा प्रधान हुआ। कुंभा आफत का मारा फिरता रहा। जब यह समाचार रणमल को लगे तो वह सेना साथ लेकर आया, चाचा से युद्ध हुआ और वह भाग कर पई के पहाड़ों पर चढ़ गया। रणमल ने कुंभा को पाट बैठाया और आप उन पहाड़ों में गया, बहुत दौड़ धूप की, परन्तु कुछ दाल न गली, क्योंकि बीच में एक भील रहता था, जिसके बाप को रणमल ने मारा था। वह भील चाचा व महपा का सहायक बना। एक दिन रणमल अकेला घोड़े पर सवार उस भील के घर जा निकला। भील घर में नहीं थे, उनकी मां वहां बैठी थी। उसको बहन कहके पुकारा और बढ़कर उससे बातें करने लगा। भीलनी बोली कि वीर ! तैने बहुत बुरा किया, परन्तु तुम मेरे घर आ गये अब क्या कर सकती हूँ। अच्छा अब घर में जाकर सो रहो। राव ने वैसा ही किया। थोड़ी देर पीछे वे पांचों भाई भील आये उनकी मां ने उनसे पूछा कि बेटा ! अभी रणमल यहां आवे तो तुम क्या करो ? कहा, करें क्या, मारैं; परन्तु बड़े बेटे ने कहा—" मां ! जो घर पर आवे तो रणमल को न मारें।" मा ने कहा—शाबाश बेटा ! घर पर आये हुए तो बैरी को भी मारना उचित नहीं।" रणमल को पुकारा कि वीर बाहर आ जावो। वह आकर भीलों से मिला। उन्होंने उसकी बड़ी सेवा मनुहार की और पूछा कि तुम मरने के लिए यहां कैसे आये ! कहा कि भानजो ! मैंने प्रतिज्ञा की है कि चचा को मारूं तब अन्न खाऊं परन्तु करू क्या तुम्हारे आगे कुछ बस नहीं चलता है। भीलों ने कहा, अब हम तुमको कुछ भी ईजा न पहुंचावेंगे। फिर रणमल अपने योद्धाओं को लेकर पहाड़ तले आया; भीलों ने कहा कि पहाड़ के मार्ग में एक सिंहनी रहती है सो मनुष्य को देख कर गर्जना करेगी। रणमल तो पगडंडी चढ़ता हुआ सिंहनी के समीप जा पहुंचा, वह गर्ज उठी, तुरन्त अड़वाल (अड़कमल) ने तलवार खींची उस पर वार किया और वहीं काट कर उसके दो टुकड़े कर दिये। सिंहनी का शब्द सुनकर ऊपर रहने वालों ने कहा कि सावधान ! परन्तु वह एक ही बार बोलने पाई थी इसलिए

उन्होंने सोचा कि किसी पशु को देखकर बोली होगी। इतने में तो रणमल घोड़े को नीचे छोड़ कर पहाड़ पर चढ़ गया और दर्वाजे पर जाकर बर्छा मारा। भीतर जो मनुष्य थे, चौंक पड़े और कहा, रणमल आया। चाचा मेरा से लड़ाई हुई, सीसोदियों को मार कर पांवों तले पटका चाचा मारा गया और महपा स्त्री के कपड़े पहन कर पहाड़ के नीचे कूद भाग गया। रणमल ने चाचा की बेटी के साथ विवाह किया, मनुष्यों के धड़ों के बाजोट और बर्छियों की चंवरी बना कर वहां सीसोदियों की कई कन्याएं रणमल ने अपने भाइयों को विवाह दी और पीछा लौटा।

महपा भाग कर मांडू के बादशाह की शरण गया। जब यह खबर राणाजी को हुई तब उन्होंने बादशाह पर दबाव डाल कर कहलाया कि हमारे चोर को भेज दो। बादशाह ने महपा को कह दिया कि अब हम तुमको नहीं रख सकते हैं। महपा ने उत्तर दिया कि मुझको कैद करके शत्रु को मत सौंपिए और आप घोड़े सवार हो गढ़ के द्वार पर आ घोड़े समेत नीचे कूद पड़ा। घोड़ा तो पृथ्वी पर पड़ते ही मर गया और महपा भाग कर गुजरात के बादशाह के पास पहुँचा। जब उसने वहां भी बचाव की कोई सूरत न देखी तो चित्तौड़ ही की तरफ चला। वहां राज्य तो राणाजी करते थे, परन्तु राज का सब काम रणमल के हाथ में था। महपा रात्रि के समय लकड़ियों का भार सिर पर धर कर नगर में पैठा। उसकी एक स्त्री अपने पुत्र सहित वहां रहती थी, जिसको उसने सुहागन कर रक्खा था। उसके घर आया, पत्नी ने अपने पति को पहचान कर भीतर लिया। अब वह घर में बैठा रहे और सूत के मोहरे व रस्से बनावे। एक दिन एक मोहरी अपने पुत्र को देकर कहा कि जाकर दीवाण के नजर करदे और जो दीवाण कुछ प्रश्न करे तो अर्ज करना कि महपा हाजिर है। बेटे ने हजूर में जाकर मोहरी नजर की और दीवाण ने पूछा तो अर्ज कर दी कि महपा हाजिर है। राणा ने उसे बुलाया। उसने अर्ज की कि मेवाड़ की धरती राठोड़ों ने ली। यह बात सुनते ही दीवाण के मन में यह भय उत्पन्न हो गया कि ऐसा न हो कि रणमल मुझे मार कर राज लेले। राणा ने सेना एकत्रित की और वे रणमल को चूक से मार डालने का विचार करने लगे। रणमल के डोम ने किसी प्रकार वह भेद पा लिया और राव से कहा कि दीवाण आप पर चूक करना चाहते हैं, परन्तु राव को उसकी बात का विश्वास न आया तो भी अपने सब पुत्रों को वह तलहटी ही में रखने लगा। (अवसर पाकर) एक दिन चूक हुआ। २५ गज पछेवड़ी राव के पलंग से लपेट दी, जिसपर राव सोया हुआ था। सत्रह मनुष्य राव को मारने के लिये आये, जिनमें से १६ को तो राव ने मार डाला। और महपा भाग कर बच गया। रणमल भी मारा गया। यहां रणधीर चूण्डावत, सत्ता भाटी लूणकरणोत, रणधीर, सुरावत और दूसरे भी कई काम आये। (रणमल के पुत्र) जोधा, सीहा, नापा तलहटी में थे भाग निकले। उनके पकड़ने को फौज भेजी गई, जिसने आडावला (अर्वली) पहाड़ के पास उन्हें जा लिया और वहां युद्ध हुआ, जहां चरड़ा, चांदराय, अरडकमलोत, पृथ्वीराज, तेजसिंह आदि और भी राठौड़ों के सर्दार मारे गये परन्तु जोधा कुशलतापूर्वक मंडोवर पहुँच गया।

नर्बद सतावत ने राणाजी को आंख दी जिसकी बात—जब राणा मोकल और राव रणमल मंडोवर पर चढ़ आये (सत्ता के पुत्र) नर्बद ने युद्ध किया और घायल हुआ। उस वक्त उसकी बांई आंख पर तलवार बही, जिससे वह आंख फूट गई। राणा नर्बद को उठा कर अपने साथ लाया, घाव बंधवाये और मरहमपट्टी करवाये उसको चंगा किया। लाख रुपये की वार्षिक आय का कायलाणे का ठिकाना उसे जागीर में दिया। राणा मोकल चाचा मेरा के हाथ से मारा गया और राणा कुम्भा पाट बैठा, उसने राव रणमल को चूक कर मरवाया। नर्बद तब भी दीवाण ही के पास रहता था। एक दिन दीवाण दर्बार में बैठे थे तब किसी ने कहा कि "आज नर्बद जैसा राजपूत दूसरा नहीं है" राणा ने पूछा कि उसमें क्या गुण है जो इतनी प्रशंसा की जाती है? उत्तर दिया कि दीवाण उससे कोई भी चीज मांगी जावे वह तुरन्त दे देता है। राणा ने कहा हम उससे एक चीज मांगते हैं, क्या वह देगा? अर्ज हुई कि देगा। नमर्द उस दिन मुजरे को ही नहीं आया था। दीवाण ने अपने एक खवास को उसके पास भेज कहलाया कि "दीवाण ने तुमसे आंख मांगी है।" नर्बद बोला - दूंगा। खवास की नजर बचा पास ही भलका पड़ा हुआ था, जिससे आंख निकाल रूमाल में लपेट उसके हवाले की। यह देख खवास का रंग फक हो गया क्योंकि दीवाण ने खवास को पहले समझा दिया था कि यदि नर्बद तेरे कहने पर आंख निकालने लगे तो निकालने मत देना, परन्तु नर्बद ने तो आंख निकाल हाथ में दे दी। खवास ने वह रूमाल दीवाण के नजर किया और दीवाण ने आंख देखकर बहुत ही पश्चाताप किया। आप नर्बद के डेरे पधारे, उसको बहुत आश्वासन देकर उसकी जागीर ड्योढ़ी करदी।

मुहणोत नैणसी री ख्यात भाग १ अनुवादक श्री राम नारायण दूगड़, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

परिशिष्ट ५

शब्दार्थ

अखा = सौंपकर ।
अखंदा = कहा ।
अछरां = अप्सराएँ ।
अछक्की = अतृप्त ।
अणचिंत्या = अचानक ।
अणी = फौज ।
अपती = अविश्वसनीय ।
अबखी = दुःख के समय ।
अबीह = निडर ।
अरक = सूर्य ।
अरिगंज खाग उठाय = शत्रु को नष्ट करने वाली तलवार उठाकर ।
अवलिया = औलिया ।
अस = अश्व ।
असमर = तलवार ।
असफड़ = घोड़ों का चीरा हुआ भाग ।
अहराव = सर्पों का राजा ।
अहि = सर्प ।
आसंग=शक्ति ।
आरांण = युद्ध ।
आयस = आज्ञा ।
आमष = आमिख ।
आफू=अफीम ।
आपो = देवो ।
आपांणी = पुरुषार्थी ।
आदू = आरंभ से ।
आजोका = जिसको जक (चैन) ही न पड़े ।
इल = पृथ्वी ।
ईख = देखकर ।
उकती=सूझ ।
उजीर = वजीर ।
उथपै = हटाना ।
उपाध = बखेड़ा ।
उमियां = उमा ।
ऊंधी = उलटी ।
उबांणी = नंगी तलवार ।
उललिये गड्डे = गाड़ी उलटने पर ।
उरस = आकाश ।
ऊरिया = घोड़े से हमला करना ।
ऐराकियां = घोड़े ।
ओडां = तरफ ।
ओघ = खानदान ।
ओलादीला = आसपास

ओसके = पांव पीछे हटा दिये ।
कत्थ = बात ।
कमीण = विवाह में नेग लेने वाले व्यक्ति जैसे नाई, कुम्हार, बढ़ई आदि ।
कमंधा = राठौड़ जाति के राजपूत ।
करग = हाथ ।
करलाया = क्रन्दन किया ।
कर तेगां नंगा = नंगी तलवारे हाथ में लेकर ।
कलह = युद्ध ।
कव = कवि ।
कांण = मर्यादा ।
कांमेती = कर्मचारी ।
किरमिर = तलवार ।
किरणाला = तेजस्वी ।
किलमा = मुसलमान ।
कूक – फरियाद, शोर ।
कूक कराणी = पुकार की ।
कूकाऊ = पुकारू ।
कूड़ = झूठ ।
केकांण = घोड़ा ।
केवांण = तलवार ।
केवि = कई ।
कोड़ीधर = करोड़ों के मूल्य वाले ।
खगवाढ़ खिराणी = तलवारों की धारे खिर गई ।
खड़िया = चला
खथ्थे = तेजी से
खल = शत्रु ।
खांगां खलकायां = तलवारों से काट डाले ।
खांचा तांणां = खींच तान कर ।
खाजरू = बकरे ।
खापां = तलवार !
खाफर = काफिर ।
खामंद = खाविंद ।
खिम खून = कितने ही ।
खिताई = अपराधों को क्षमा किया ।
खिमंदे = सहन करेंगे ।
खूनियों = अपराधियों ।
खूर चलाया = घोड़े बढ़ाये ।
खेचर = आकाश पर विचरने वाले ।
खैंग = घोड़ा ।
खैंगां = घोड़े
खोज = चिन्ह ।
खोलड़ = झोंपड़ी ।
ग्रभ = गर्व ।
गल = बात
गवराये = गीतों मे गाये गये ।
गह में भरियोड़ा = घमंड में भरा हुआ ।
गायणिया = गाने वाली स्त्रियां ।
गिलणकूं = गिरने को ।
गुणियण = गुनी जन ।
गैरिया = होलीपर डंडों से खेलने वाला ।
गैण = गयण, आकाश ।
गैब = अदृष्य ।
घड़ा = सेना ।
घमोड़ी = जोर से मारी ।
घोरां घलवाया = कब्रों में सुलादिया ।
चखलल्ले = लाल आंखे ।
चवे = कहना ।
चिगायो = बहकाया ।
चित्त विटालिया = बुद्धि बिगड़ गई ।
चूक = धोखे से मारना ।
चोहटां = बजार ।
चंचल = घोड़ा ।
छांनै = छिपकर ।

छिबंता – स्पर्श करते हुए।
छोरू – बच्चे ।
ज्याग – यज्ञ ।
जरंदा – पच सकेगा ।
जरां – तब ।
जळ चाढां – ग्राब चढ़ायें।
जुहुवांर – जुहार, मुजरा .
जाव – जवाब ।
जारिया – सहन किया ।
जीण करे – जीन कसना ।
जेज – देर ।
जेवड़ा – रस्से ।
टोळा – ऊँटों का झुण्ड ।
टिल्ला – धक्का।
ठाला – बेकार ।
ठहके – ठहर जाना ।
डंबर – बादल ।
[illegible] – कर वसूल करने वाला ग्रहलकार।
डूमड़ा – ढोली ।
डोकर – बुढिया ।
डोफा – बेवकूफ ।
डोळी – डोली जिसमें घायलों को उठाया जाता है ।
तरवारी – तलवार ।
तवाई – ग्रापत्ति की जांच ।
तागा – मरने को तैयार होना ।
ताजण – घोड़ी ।
तेरू – तैराक ।
तेरे तुगां – फोजों का समुह ।
तिरसां – प्यासे ।
तोखार – घोड़ा ।
थट – समूह ।
थप्पै – स्थापित करना ।
थान – स्थान ।
दाटिया – रोका ।
[illegible] – रोकता है ।

दिन घ[illegible] – दिन दहाड़े ।
दिहाडां – [illegible]
दुभाल
दुथणी – [illegible] स्तनों वाली से उत्पन्न मनुष्य मात्र ।
दोयण – शत्रु ।
धकचाळा – युद्ध ।
धज – ध्वज ।
धन – गोधन ।
धणियाप – स्वामीत्व ।
ध्राह – ग्रातंक ।
धारू – एक प्रसिद्ध भक्त ।
धीब – झड़ी ।
धू – मस्तक ।
धूड़ – धूलि ।
धूप – खांडा ।
धूंसबा – ध्वंस करने को ।
धूंसै – रण के [illegible] ।
धेख – वैर ।
धोबा – ग्रंजलि भरकर ।
धोम – क्रो[illegible] ।
नखतेत – अच्छे नक्षत्रों वाला ।
नंगारे बंबापड़ – नक्कारे पर चोब [illegible] ।
नाठा – भगे ।
नालेर – नारियल ।
नाळियां – बन्दूकें ।
नेजा – भाला ।
नेम – नियम ।
पख – पक्ष ।
पखराळा – पाखर से युक्त ।
पड़प्पंण – बूता ।
पढ़ै – चित्र ।
पण – प्रतिज्ञा ।
पमंग – घोड़ा ।
परदलो – कमर में बांधने का [illegible]

परत – बिलकुल ।
पल – मांस ।
पलचर – मांस भक्षी ।
..ाणी – घोड़ों पर जीन कसे ।
पाखती – पार्श्व ।
पाखर – घोड़े के लोह के कवच ।
पाणां – हाथ ।
पाडव – चरवादार ।
पाड़िया – मारे ।
पाणी राळियो – आंसू बहाये ।
पालवा – मना करने को ।
पाळा – पैदल ।
पालिया – मना किया ।
पिंड – शरीर ।
पेटो – भेद ।
पोहर – एक पहर ।
पोहता – पहुँचे ।
पोह – उषा काल ।
पखणिगां – मांसाहारी पक्षी ।
पंखराव – गरूड़ ।
पंचोल – पंचायत ।
..णधर – शेषनाग ।
फरहास – एक प्रकार का वृक्ष ।
फाचरा – लकड़ी के टुकड़े ।
बगतर कुठां बीड़िया – बख्तर की कडियां कसकर ।
बकारे – ललकारना ।
बटका – टुकड़े ।
बड़नाळ – एक प्रकार की बन्दूक ।
बडाला – बड़ाई युक्त ।
बक्के – कहते हैं ।
बधाया – स्वागत किया ।
बपसक बड़ाळा – जिससे बड़े-बड़े भी भयभीत हो जावें ।
बामण – ब्राह्मण आदि ।
बारठ – बारहठ, चारण ।
बारा – समय ।
बागी झाट – जोर से तलवारें चली ।
बाहर – छोटी फौज ।
बीजळ – तलवार ।
बीजाई – दूसरा ।
बिंरदा रूख वाळा – यश के रक्षक ।
बूडसी – डूब जायगा ।
वेली – साथी ।
भथ्थे – तूणीर ।
भाण – सूर्य्य ।
भाजिया – भग गये ।
भारात – युद्ध ।
भाळवा – देखने को ।
भिड़ज – घोड़ा ।
भुजपांण – भुजबल ।
भूंड – बदनामी ।
भूतावळ – भूतों से ।
म – मत ।
मन वेठियो – मन रखा ।
मलफाणी – शेर की उछल ।
महल – स्त्री ।
मांगे खासां – मांगकर खायेंगे ।
माणस – मनुष्य ।
मिणधारी – मणिधारी ।
मियानां – म्यांनों से ।
गुंजावर – मजाफर ।
मुझ हुंदा – मेरा ।
मुसकण – मुश्की घोड़ा ।
मोकलूं – भेजूं ।
मंगरे – मेला ।
मंडलीक – बड़ा राज ।
रकेबां – रकाब ।
रणतूर – रण के ...े ।
रस – ...

राइका – रैंबारी जाति जो ऊंट चराती है।
राड़धरा – मारवाड़ के गांव का नाम है।
रावत – बहादुर।
रीमां – शत्रु।
रूंक – तलवार।
लाणत – लानत।
लिगार – बिलकुल।
लियो वडाय – कटा लिया।
लीह – लकीर।
लूण उजाळियो – नमक हलाली की।
लंगर – योद्धा।
वनराव – सिंह।
वरमालतां – विवाह करते समय।
वळ – खाद्य सामग्री।
वासख – वासुकि नाग।
वागां ढोलांरी विगत – ढोल बजाने का वृत्तान्त।
वाळियो – वैर लिया।
वासै – सहायक।
विडंगां – घोड़े।
विमाह – विवाह।
विय्याह – विवाह।
वींटिया – घेर लिया।
वीराद वीरांणी – वीरों में भी उत्तम वीर।
वीहगेस – गरूड़।
वीहडै – मारना।
सखरी – अच्छे।
स्रग – स्वर्ग।
सताबी – जल्दी के।
सपतास – सूर्य का सपताश्व घोड़ा।
समसेर संभाई – तलवार उठाई।
समापो – देवो।
समीयांण – सज्जन।
सलखाणयां – सलखेजीं के पुत्र।
सल्ला – सलाह।
साकण – एक प्रकार की डाकिन।
साकुर – घोड़ा।
साख – फसल।
साखत – घोड़े का साज।
सांणी – तबेले का दरोगा।
सादूलो – शार्दूल।
साधिया – जोड़ दिये।
सावळ – भाला।
सामठा – बहुत।
सामेळ – स्वागत।
सायर – सागर।
सावंत – योद्धा।
सिरगळ – शृगाल।
सिलग्गी – सुलगी।
सींचांणे – बाज पक्षी।
सोण – श्रोणित।
सोबायत – सूबेदार।
सोहडां – योद्धा।
हणसी – मारेगा।
हेरू – तलास करने वाले।
है – हय, घोड़ा।
हैकण – एक।
हैवर – घोड़ा।
होकार – हूंकार।
भ्रामंक – नक्कारां।

परिशिष्ट ५

शब्दार्थ

अला = सौंपकर ।
अखंदा = कहा ।
अछरां = अप्सराएँ ।
अछक्की = अतृप्त ।
अणचिंत्या = अचानक ।
अणी = फौज ।
अपती = अविश्वसनीय ।
अबखी = दुःख के समय ।
अबीह = निडर ।
अरक = सूर्य ।
अरिगंज खाग उठाय = शत्रु को नष्ट करने वाली तलवार उठाकर ।
अवलिया = औलिया ।
अस = अश्व ।
असमर = तलवार ।
असफड़ = घोड़ों का चीरा हुआ भाग ।
अहराव = सर्पों का राजा ।
अहि = सर्प ।
आसंग=शक्ति ।
आरांण = युद्ध ।
आयस = आज्ञा ।
आमष = आमिख ।
आफू=अफीम ।
आपो = देवो ।
आपांणी = पुरुषार्थी ।
आदू = आरंभ से ।
आजोका = जिसको जक (चैन) ही न पड़े ।
इल = पृथ्वी ।
ईख = देखकर ।
उकती=सूझ ।
उजीर = वजीर ।
उथपै = हटाना ।
उपाध = बखेड़ा ।
उमियां = उमा ।
ऊंधी = उलटी ।
उबांणी = नंगी तलवार !
उललिये गड्डे = गाड़ी उलटने पर ।
उरस = आकाश ।
ऊरिया = घोड़े से हमला करना ।
ऐराकियां = घोड़े ।
ओढां = तरफ ।
ओध = खानदान ।
ओलादीला = आसपास

सम्पादकीय टिप्पणी

मुहणोत नेणसी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "मुहणोतनेणसीरी ख्यात" में राजस्थान के इतिहास पर विस्तार से लिखा है। मूल ग्रन्थ राजस्थानी भाषा में है जिसका प्रकाशन "राजस्थान पुरातन ग्रन्थ माला" में किया जा रहा है। इस ख्यात का हिन्दी रूपान्तर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

"वीरवांण" सम्बन्धी कई घटनाओं के विषय में भी मुहणोत नेणसी ने अपनी ख्यात में लिखा है। मुहणोत नेणसी के वक्तव्य से काव्य के ऐतिहासिक पक्ष को समझने में बहुत सहायता मिलती है। साथ ही वीरमजी, गोगाजी आदि काव्यगत चरित्रों के सम्बन्ध में कई नवीन सूचनायें प्राप्त होती हैं। इसलिये मुहणोत नेणसीरी ख्यात के सम्बन्धित अंशों को यहां प्रकाशित किया गया है।
